
वासना
दॉस्तावस्की



स्तावस्की की गणना विश्व के चोटी के उपन्यासकारों में
। जाती है। मानव-मन और चरित्र की जटिलताओं के
त्रण में वे अद्वितीय हैं। 'वासना' उनके अत्यन्त लोकप्रिय
न्यास 'माई अंकिल्स ड्रीम' का हिन्दी अनुवाद है। मनुष्य
। वासनाओं और वैभव-लिप्साओं और उसकी स्वभावगत
वशताओं के इसमें रंग-बिरंगे और अनूठे चित्र मिलते हैं।
स्व मध्यमवर्गीय नारी-समाज की विलासिता, कुटिलता
र नैतिक हीनता की यहां जो तस्वीर पेश की गई है वह
ाहित्य में बेजोड़ है।

न्यास के साथ उनकी एक उत्कृष्ट कहानी 'कुलटा' भी
हां दी जा रही है।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२





दॉस्तावस्की

वासना

'My Uncle's Dream' का
हिन्दी अनुवाद

अनुवादक
शिवदानसिंह चौहान
श्रीमती विजय चौहान

VAASNA : NOVEL
DOSTOEVSKI
मूल्य : दो रुपये

वासना

मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना मोस्कालीव्ना निश्चय ही मोर्दासोव की सबसे प्रमुख महिला हैं, इसमें रत्ती-भर भी शक नहीं। उनके व्यवहार से ऐसा लगता है जैसे उन्हें किसीकी जरूरत नहीं, बल्कि इसके विपरीत वे यह जानती हैं कि सब लोगों को उनकी जरूरत है। यह सच है कि उन्हें शायद ही कोई पसंद करता हो, और कई लोग तो ऐसे भी हैं जो उनसे दिली नफरत करते हैं; लेकिन सब लोग उनसे डरते हैं और श्रीमती मारया को बस इसीकी जरूरत है। ऐसी जरूरत चरित्र की उत्कृष्टता की निशानी है। मिसाल के लिए, आखिर यह कैसे संभव है कि मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना को, जिन्हें निंदा-चुगली से बेहद प्रेम है, और जब तक दिन में वे कोई नई बात न सुन लें, उन्हें नींद नहीं आती, फिर भी शालीन व्यवहार करना आता है, और किसीको उनकी तरफ आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं पड़ती। और ये सम्मानित महिला दुनिया की सबसे ज्यादा बकवादी औरत हैं, कम से कम मोर्दासोव की तो हैं ही। लेकिन देखने वाला सोचेगा कि उनकी मौजूदगी में पर-निंदा लुप्त हो जाती होगी और पर-निंदकों का चेहरा मारे शर्म के लाल हो जाता होगा और जिस तरह नन्हे लड़के स्कूलमास्टर के आगे कांपते हैं, उसी तरह पर-निंदक श्रीमती मारया के आगे कांपते होंगे और केवल अत्यन्त उदात्त विषयों पर ही उनमें बातचीत होती होगी। वे मोर्दासोव के कुछ व्यक्तियों के इतने महत्त्वपूर्ण और कलंकमय रहस्यों से परिचित हैं कि अगर वे किसी उचित अवसर पर उन बातों को लोगों के सामने इस अंदाज से दुहराएं

कि वे एकदम सच्ची मालूम पड़ें—जिस कला में वे पारंगत हैं, तो मोर्दासोव में उतना ही भयंकर भूचाल आ जाएगा जैसा लिस्बन में आया था। लेकिन श्रीमती मारया इन रहस्यों के बारे में एकदम खामोश रहती हैं और बहुत कम, वह भी अपनी अंतरंग सहेलियों को ही ये रहस्य बताती हैं। वे सिर्फ दूसरों को इस बात का संकेत देकर चौंकाना चाहती हैं कि उन्हें कोई रहस्य मालूम है और वे दूसरे मर्दों और औरतों पर एकदम वार करने की बजाय उन्हें लगातार आतंक में रखना अधिक पसंद करती हैं। इसीको कहते हैं दिमाग और युद्ध-कौशल ! हमारे बीच मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना अपने शानदार और शालीन व्यवहार के लिए हमेशा से मशहूर रही हैं, और सचमुच मोर्दासोव की एक भी महिला शालीन व्यवहार में श्रीमती मारया का मुकाबिला नहीं कर सकती। हम इस बात के साक्षी हैं कि वे एक ही शब्द से अपने प्रतिद्वन्द्वी को खत्म कर सकती हैं, कत्ल कर सकती हैं और तड़पा सकती हैं; और लगता है कि उन्होंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि वह उब्द उनकी जबान से निकला है। यह प्रवृत्ति समाज की सर्वोच्च श्रेणी के लोगों की विशेषता समझी जाती है। इस तरह की चालों में वे स्वयं पिनेती को भी मात करती हैं। उनकी पहुंच दूर-दूर तक है। मोर्दासोव में आने वाले बहुत से लोग श्रीमती मारया के अतिथि-सत्कार के गीत गाते हुए लौटते हैं और बाद में उनसे पत्र-व्यवहार तक जारी रखते हैं। एक व्यक्ति ने सच-मुच उन्हें एक कविता भी भेजी थी, जिसे उन्होंने बड़े गर्व से सब लोगों को दिखाया था। एक साहित्यिक अतिथि ने अपना एक उपन्यास श्रीमती मारया को समर्पित किया था और उन्हींके द्वारा दी गई एक दावत में उपन्यास पढ़कर भी सुनाया था, जिसका बड़ा अच्छा असर पड़ा। एक जर्मन वैज्ञानिक, जो कार्ल्सरू से खास तौर पर हमारे इलाके में पाए जाने वाले सींग वाले पतंगों की खोज करने आया था और जिसने इन कीड़ों के बारे में चार पुस्तकें लिखी थीं, मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना

के अतिथि-सत्कार और शिष्टाचार से इतना प्रभावित हुआ था कि वह आज भी कार्ल्सरू से उन्हें आदर भरे पत्र लिखता है। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना की तुलना नैपोलियन से की जा चुकी है—लेकिन दुश्मनों द्वारा, जिसमें सचाई की अपेक्षा व्यंग्य की मात्रा अधिक थी, मैं इस तुलना को बेहूदा समझता हूं, और आपसे एक सीधा सवाल पूछना चाहता हूं : मेहरबानी करके यह बताइए कि बहुत ऊंचे पद पर पहुंचकर नैपोलियन का माथा क्यों चकरा गया था ? प्राचीन राजवंश के समर्थकों का कहना है कि यह इसलिए हुआ क्योंकि शाही खानदान में पैदा होने की बात तो दूर रही, नैपोलियन एक भद्र व्यक्ति भी नहीं था, और इतने ऊंचे पद पर पहुंचकर भी वह नहीं भूल सका कि वह शुरू में मामूली आदमी था। यह स्वाभाविक ही है। अगर इस कल्पना को मान लिया जाए जो हमें प्राचीन फ्रांसीसी शाही दरबार के सबसे शानदार काल का स्मरण कराती है, अपनी तरफ से मैं इतनी बात और जोड़ना चाहूंगा कि आखिर क्या कारण है कि मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना का सर कभी नहीं चकराया ? क्या कारण है कि वे हमेशा मोर्दासोव की सबसे प्रमुख महिला बनी रहेंगी ? मिसाल के लिए कई बार ऐसा भी हुआ है कि सब लोगों ने कहा, 'ऐसी कठिन परिस्थितियों में भला मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना क्या करेंगी ?' लेकिन कठिन परिस्थितियां आईं और चली गईं, और मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना की हालत बिगड़ने की बजाय सुधरती गई। मिसाल के लिए यह बात सब लोगों को याद रहेगी कि जब श्रीमती मारया के पति अफानासी मातविच की नौकरी छूट गई थी, क्योंकि बाहर से आया इन्स्पेक्टर उनकी खरदिमागी और निकम्मेपन से क्रुद्ध हो गया था, तब सब लोगों का ख्याल था कि मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना निराश हो जाएंगी, गिड़गिड़ाएंगी और सबके सामने ज़ाहिर करेंगी कि उन्होंने मात खाई है। लेकिन हरगिज़ नहीं। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना समझ गईं कि गिड़गिड़ाना बेकार होगा। उन्होंने अपनी हालत इस तरह संभाल ली कि उनकी

सामाजिक प्रतिष्ठा को रत्ती-भर चोट नहीं पहुंची। उनका घर आज भी मोर्दासोव में सबसे प्रमुख माना जाता है। वकील की पत्नी अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा ने, जो मारया अलैक्जैंड्रोव्ना की पक्की दुश्मन है और ऊपर से उसकी दोस्त है, खुले आम बकवास शुरू कर दिया था, लेकिन लोगों ने देख लिया कि मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को हिलाना बड़ा कठिन है, क्योंकि उनकी जड़ें पाताल तक गहरी हैं।

चूंकि हमने अफानासी मातविच का जिक्र कर ही दिया है, तो उनके बारे में कुछ शब्द और कह दें। वे बेहद सभ्य और नैतिक व्यक्ति हैं, हालांकि मुसीबत के क्षणों में वे मूर्खों की तरह आंखें फाड़कर देखा करते हैं। वे बड़े शालीन हैं, खास तौर पर नामकरण की दावतों में जब वे सफेद गुलूबन्द पहनकर जाते हैं, तो अत्यन्त शालीन दिखाई देते हैं। लेकिन यह शालीनता तभी तक बनी रहती है जब तक वे अपना मुंह नहीं खोलते, जब खोलते हैं तो वे एकदम बेहूदे मालूम होते हैं—इस शब्द के प्रयोग के लिए मैं माफी चाहता हूं। वे मारया अलैक्जैंड्रोव्ना के सर्वथा अनुपयुक्त हैं, सभी लोगों की यही राय है। अपनी पत्नी की प्रतिभा की वजह से ही वे अपनी नौकरी बनाए रख सके। मैं हमेशा कहा करता हूं कि उन्हें तो बहुत पहले से सब्जी के खेत में चिड़ियों को डराने के लिए खड़ा कर देना चाहिए था, सिर्फ उसी जगह रहकर वे देशवासियों के काम आ सकते हैं। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने उन्हें मोर्दासोव से एक या दो मील दूर दूसरे गांव में भेजकर अच्छा ही किया। उस गांव में श्रीमती मारया की जमीन थी और एक सौ बीस दास भी थे, लोगों का कहना था कि यही एकमात्र साधन था जिससे श्रीमती मारया अपने घर की प्रतिष्ठा को इतनी अच्छी तरह बनाए हुई थीं। सब जानते थे कि अफानासी मातविच को उन्होंने इसलिए पास रख छोड़ा है क्योंकि उनके पास एक सरकारी नौकरी है और उन्हें तनख्वाह मिलती है और उनके पास आमदनी के कुछ और जरिए भी हैं। जब उनकी नौकरी छूट गई

और तनख्वाह आदि सब बंद हो गई तो उन्हें एकदम बेकार समझकर निर्वासित कर दिया गया। सब लोगों ने मारया अलैक्जेंड्रोव्ना के विवेक और दृढ़ निश्चय की तारीफ की। अफानासी मातविच देहात में हरी घास वाली जमीन पर रहते हैं। मैं एक बार वहां उनसे मिलने गया था और मैंने वहां पूरा एक घंटा अच्छी तरह गुजारा था। अफानासी मातविच अपने सफेद गुलूबंद लगातार पहनकर देखते रहते हैं, अपने जूतों पर खुद पालिश करते हैं, मजबूरी की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए कि उन्हें कोई न कोई काम करना और अपने जूतों को चमकाना पसन्द है। वे दिन में तीन बार चाय पीते हैं, हमाम में जाने का उन्हें बहुत शौक है और वे जीवन से संतुष्ट हैं।

डेढ़ बरस पहले मारया अलैक्जैंड्रोव्ना और अफानासी मातविच की एकलौती बेटी ज़िनेदा अफनास्यीव्ना को लेकर जो अपमानजनक घटना हुई थी, वह सब लोगों को अच्छी तरह याद है। ज़िनेदा निस्संदेह एक सुन्दरी है, बेहद शालीन है, लेकिन उसकी उम्र तेईस बरस की है और अभी तक उसकी शादी नहीं हुई। डेढ़ बरस पहले ज़िनेदा और स्थानीय स्कूल के टीचर के सम्बन्ध को लेकर तरह-तरह की अफवाहें फैली थीं, जो आज तक खत्म नहीं हुईं। ज़िनेदा के अविवाहित रहने का शायद यही कारण है। लोग अभी तक ज़िनेदा द्वारा लिखे गए प्रेमपत्र की चर्चा करते हैं, जो मोर्दासोव के घर-घर घूमा था, लेकिन क्या किसीने सचमुच उस खत को देखा था? सबने उस खत की चर्चा सुनी थी, लेकिन किसीने अपनी आंखों से उस खत को नहीं देखा। मुझे यह बताइए कि अगर यह खत सब जगह पहुंचा था तो वह कहां गया? कम से कम मुझे तो ऐसा एक भी आदमी नहीं मिला जिसने उस खत को अपनी आंखों से देखा हो। अगर आप मारया अलैक्जैंड्रोव्ना से इस खत की चर्चा करेंगे तो वे इस तरह पेश आएंगी, जैसे उन्हें आपकी बात समझ में ही नहीं आई। मान लीजिए कि सचमुच कोई बात थी और ज़ेना ने खत भी

लिखा था। और मैं मानने के लिए तैयार हूं कि उसने लिखा था। लेकिन मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने उस वक्त कितनी असाधारण बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था ! वह कलंकपूर्ण प्रसंग एकदम दबा दिया गया था ! उसका कहीं नामोनिशान भी नहीं रहा था। मारया अलैक्जेंड्रोव्ना इस गंदे किस्से पर अब कतई ध्यान नहीं देतीं, लेकिन उन्होंने अपनी एकलौती बेटी की शोहरत को निष्कलंक बनाए रखने के लिए क्या-क्या किया, यह सिर्फ ईश्वर ही जानता है। और अगर ज़ेना की शादी नहीं हुई तो इसमें कोई ताज्जुब नहीं—आखिरकार यहां कौन-से दूल्हे बैठे हैं ! ज़ेना की शादी किसी आला खानदान के आदमी से होनी चाहिए। क्या दुनिया में ज़ेनी जैसी सुन्दरी कभी हुई है ? माना कि वह अहंकारी है, बेहद अहंकारी। सुना है कि मोज़ग्ल्याकोव उससे शादी करना चाहता है, लेकिन यह शादी कभी होगी, इसमें सन्देह है। आखिर मोजग्ल्याकोव है क्या ? यह सच है कि वह नौजवान है, शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं, शौकीन तबियत का आदमी है, उसके पास डेढ़ सौ भूमिदास हैं और वह पीटर्सबर्ग से आया है लेकिन वह मूर्ख, बकवादी और लापरवाह आदमी है। उसके दिमाग में कोई न कोई नई खुराफात समाई रहती है और फिर डेढ़ सौ भूमिदास क्या चीज़ हैं जबकि उनके स्वामी के दिमाग में हर वक्त नई खुराफातें समाई रहें ? नहीं, नहीं ! शादी-वादी नहीं होगी !

पाठक ने अभी तक जो कुछ पढ़ा है वह मैंने पांच महीने पहले मारया अलैक्जेंड्रोव्ना की प्रशंसा में लिखा था। मैं साफ मानता हूं कि मेरे हृदय में उनके प्रति पक्षपात है, मैं उस शानदार महिला की प्रशंसा में एक छंद लिखना चाहता हूं, यह छंद 'उत्तरी प्रदेश की मधुमक्खी' के खतों तथा अन्य प्रकाशनों की तरह विनोदपूर्ण भाषा में एक दोस्त को लिखे गए खत की तरह होगा—ईश्वर का धन्याद है कि उस ज़माने की शैली फिर कभी लौटकर नहीं आएगी। लेकिन चूंकि मेरा ऐसा कोई दोस्त नहीं, जिसे मैं खत लिखूं और मुझमें एक जन्मजात साहित्यिक भीरुता

है, इसलिए मेरा यह लेख मेरे डेस्क की दराज में ही पड़ा रहा। एक तरह से यह मेरा पहला प्रयास है, जिसे मैंने सुखद अवकाश के शान्त मनोरंजन की स्मृति में लिखा है। पांच महीने गुज़र गए—अचानक मोर्दासोव में एक असाधारण घटना घटी—एक दिन तड़के ही काउन्ट—'के' मोर्दासोव आकर मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के यहां ठहरे। उनके आने के असंख्य परिणाम निकले। काउन्ट महोदय मोर्दासोव में सिर्फ तीन दिन ठहरे थे, लेकिन उन तीन दिनों में वे वहां से सांघातिक और अमिट स्मृतियां लेकर लौटे। मैं इससे भी आगे कहूंगा—काउंट ने आकर हमारे शहर में क्रान्ति-सी मचा दी थी। इस क्रान्ति की कहानी मोर्दासोव के इतिहास के सबसे महत्त्वपूर्ण पृष्ठों में से है। बहुत हिचकिचाहट के बाद मैंने इतिहास के इस पृष्ठ पर साहित्य-रचना करने का निश्चय किया, ताकि इसे जनता की सम्मति पाने के लिए जनता के सामने पेश किया जाए। मेरे उपन्यास में मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना और सारे परिवार के अभ्युदय, वैभव और दुःखान्त पतन की पूरी और असाधारण कहानी है। यह विषय सर्वथा उपयुक्त और एक लेखक के लिए आकर्षक है। सबसे पहले यह बताना ज़रूरी है कि हमारे शहर में आकर मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना के साथ काउन्ट–के के ठहरने में कौन-सी विशेष बात है—इस सिलसिले में स्वयं काउन्ट–के के बारे में कुछ शब्द कहना ज़रूरी हो जाता है। हमारी कहानी को आगे बढ़ाने के लिए काउन्ट–के का जीवन-चरित्र लिखना ज़रूरी है। लीजिए मैं शुरू करता हूं।

२

मैं इस वक्तव्य से अपनी कहानी शुरू करूंगा कि काउन्ट—के को हरगिज़ बूढ़ा नहीं कहा जा सकता, लेकिन उनकी तरफ देखने से ही मन में यह विचार उठे बगैर नहीं रहता कि वे मरणोन्मुख, जीर्ण व्यक्ति हैं या यूं कहा जाए कि कीड़ों के कुतरे हुए हैं। मोर्दासोव में काउन्ट के बारे में अजब किस्म की अफवाहें फैलाई गईं। कुछ लोगों ने यहां तक कह डाला कि काउन्ट पागल हैं। सबको यह बात अजब मालूम हुई कि चार हज़ार भूमिदासों का स्वामी, मशहूर खानदान का वंशज अगर चाहता तो इलाके में अपना काफी प्रभाव पैदा कर सकता था, जो अपनी शानदार रियासत में एक फकीर की-सी जिन्दगी बसर कर रहा है। कई लोग काउन्ट को छह या सात बरस पहले से जानते थे जब वे मोर्दासोव में रहते थे। इन लोगों का कहना था कि उस ज़माने में काउन्ट को एकान्त बर्दाश्त नहीं होता था और वे और चाहे जो कुछ हों, फकीर नहीं थे। खैर, विश्वस्त सूत्रों से मैं काउन्ट के बारे में निम्नलिखित जानकारी हासिल कर सका।

बहुत बरस पहले अपनी जवानी के दिनों में काउन्ट ने ज़ोर-शोर के साथ रईसी जिन्दगी बिताई थी, विदेशों में जाकर भोग-विलास पर बहुत खर्च किया था, कई औरतों से मुहब्बत की थी। उस ज़माने में काउन्ट ड्राइंगरूमों में बैठकर गीत गाते थे, व्यंग्यभरी कविताएं लिखते थे, शब्दों का खेल खेलते थे। हालांकि उन्होंने कभी विशेष प्रतिभा का परिचय नहीं दिया, न शोहरत ही पाई। कहना न होगा कि उन्होंने अपनी सारी जायदाद इसी तरह फूंक डाली और बुढ़ापे में उनके पास फूटी कौड़ी तक न रही। किसीने उन्हें अपनी रियासत में लौटने की सलाह दी, जिसकी नीलामी होने का खतरा था। काउन्ट ने यह सलाह मान ली और वे जाते-जाते रास्ते में मोर्दासोव ठहर गए, जहां उन्होंने

पूरे छह महीने गुज़ार दिए। यहां की ज़िन्दगी उनकी रुचियों के सर्वथा अनुकूल थी और इन छह महीनों में उन्होंने बची-खुची रकम भी खर्च कर डाली। यहां आकर उन्होंने फिर अपने व्यसन शुरू कर दिए और इलाके की औरतों के साथ तरह-तरह के सम्बन्ध जोड़ लिए। वैसे काउन्ट बहुत अच्छे स्वभाव के लोगों में से थे, हालांकि अभिजातवर्ग के दोषों से वे मुक्त नहीं थे। लेकिन चूंकि मोर्दासोव में ये दोष उच्च वर्ग की निशानी समझे जाते हैं, इसलिए लोगों के दिल में इन दोषों के प्रति रोष के बजाय प्रशंसा का भाव ही जागरित हुआ। खास तौर पर मोर्दासोव की महिलाएं तो अपने प्यारे मेहमान का गुणगान करते नहीं थकती थीं। काउन्ट अपने पीछे बहुत-सी विलक्षण स्मृतियां छोड़ गए थे। और बातों के अलावा उनके बारे में कहा जाता था कि काउन्ट आधे से ज्यादा दिन अपने प्रसाधान में लगाते थे और उनका शरीर बिल्कुल अलग टुकड़ों से बना हुआ था। उनके शरीर के ये टुकड़े कब और कैसे हुए यह किसीको नहीं मालूम था। वे सिर पर नकली बालों की टोपी पहनते थे, उनकी मूंछें, दाढ़ी के बाल सब नकली थे और एकदम काले रंग के थे। वे हर रोज़ मुंह पर पाउडर और सुर्खी लगाते थे। कहा जाता था कि वे अपने चेहरे की झुर्रियां मिटाने के लिए स्प्रिंगों का इस्तेमाल करते थे, जिन्हें वे अपने बालों में छिपाकर रखते थे। साथ में यह भी कहा जाता था कि इटली में जब वे किसी औरत के चक्कर में थे, तो एक बार उन्हें खिड़की से कूदना पड़ा था, और उनकी एक पसली टूट गई थी। इसे छिपाने के लिए वे कपड़ों के नीचे 'कॉरसैट' पहनते थे। उनका बायां पैर लंगड़ाता था, लोगों का कहना था कि वह पैर भी बनावटी था, क्योंकि जब वे पेरिस में इश्क लड़ा रहे थे तो उनके पैर में चोट आ गई थी। लोग यह भी कहते थे कि काउन्ट का नया पैर कॉर्क का बना हुआ है और बड़ा शानदार है। लेकिन लोगों की बातों का क्या भरोसा! वे तो न जाने क्या-क्या कहा करते हैं। उनकी दाईं आंख निश्चय ही शीशे की बनी थी,

हालांकि वह बहुत ही बढ़िया थी। उनके दांत भी बनावटी थे। वे घड़ी देखकर तरह-तरह के पेटेन्ट लोशनों से अपना शरीर धोते थे और हर वक्त तेल-फुलेल से महकते रहते थे। कहा जाता था कि काउन्ट सठिया गए थे और उनका बातूनीपन लोगों की बर्दाश्त से बाहर हो गया। ऐसा मालूम होता था कि उनके दिन खत्म हो गए हैं। सब जानते थे कि उनके पास फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। इसी वक्त उनकी एक नजदीकी रिश्तेदार जर्जर बुढ़िया जो स्थायी तौर पर पेरिस में रहती थी, और जिससे पैसा मिलने की काउन्ट को कभी कोई उम्मीद नहीं थी, अचानक चल बसी। मरने से ठीक एक महीने पहले बुढ़िया अपनी जायदाद के एकमात्र कानूनी उत्तराधिकारी को दफना चुकी थी। अकस्मात् काउन्ट ने अपने-आपको बुढ़िया की जायदाद का उत्तराधिकारी पाया। अब वे मोर्दासोव से पचास मील दूर एक शानदार रियासत के मालिक बन गए थे, जिसमें चार हज़ार भूमिदास थे। काउन्ट अपने आर्थिक मामलों को ठीक करने के लिए फौरन पीटर्सबर्ग रवाना हो गए। मोर्दासोव की महिलाओं ने मिलकर अपने मेहमान की विदाई के सम्मान में एक शानदार दावत दी। लोगों को याद है कि इस दावत में काउन्ट असाधारण रूप से खुश थे; तरह-तरह के चुटकुले, और शानदार कहानियां सुना रहे थे। उन्होंने वादा किया कि जल्द से जल्द दुरवानोवो (नई रियासत) पहुंचकर दावतों, तमाशों, पिकनिकों, बालडान्सों और आतिशबाजी का आयोजन करेंगे। उनके जाने के बाद पूरे एक बरस तक मोर्दासोव की महिलाओं में इन वादों की चर्चा होती रही और वे बेचैनी से अपने प्यारे बुज़ुर्ग दोस्त की वापसी का इन्तिज़ार करती रहीं। इस बीच वे दुरवानोवो का भ्रमण भी कर आईं, जहां एक पुराने ढंग की हवेली और बाग था। बाग की झाड़ियों को काटकर शेरों, कुंजों और मंडपों के आकार का बनाया गया था, और जहां बनावटी पहाड़ियां और मनोरम झीलें थीं, जिनपर सुनहरी नावें तैर रही थीं, उन नावों पर बांसुरी

बजाते हुए तुर्कों की मूर्तियां थीं। ईश्वर जाने और वहां क्या-क्या था।

आखिरकार काउन्ट पीटसबर्ग से लौट आए। सबको इस बात पर ताज्जुब और निराशा हुई कि वे मोर्दासोव आए तक नहीं, बल्कि सीधे दुरवानोवो चले गए, जहां वे एक फकीर की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। उनके बारे में विचित्र अफवाहें फैलने लगीं और उस काल से काउन्ट का इतिहास पौराणिक कथाओं की तरह रहस्यमय हो गया। कहा गया कि पीटर्सबर्ग में काउन्ट को कोई सफलता नहीं मिल सकी, क्योंकि काउन्ट के कुछ रिश्तेदार जो उनके भावी उत्तराधिकारी थे, इस डर से कि कहीं काउन्ट अपनी जायदाद लुटा न दें, चाहते थे कि काउन्ट को किसी अभिभावक की देख-रेख में रखा जाए। उनकी दलील थी कि काउन्ट का दिमाग कमज़ोर है। कुछ लोगों ने साथ में यह भी जोड़ दिया कि सचमुच काउन्ट को पागलखाने में भेजने की कोशिशें की गई थीं, लेकिन उनके एक रिश्तेदार ने, जो बड़ा आदमी है, यह कहकर काउन्ट को बचा लिया कि बेचारा काउन्ट तो पहले से ही अधमरा है, किसी तरह बनावटी साधनों से उसका शरीर जुड़ा हुआ है, शायद जल्द ही वह इस दुनिया से चल बसेगा, और काउन्ट की जायदाद अपने-आप उन लोगों के हाथों में आ जाएगी, इसलिए काउन्ट को पागलखाने में भेजने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं फिर कहता हूं, लोग क्या-क्या नहीं कहते, खास तौर पर हमारे मोर्दासोव में। लोगों का कहना है कि इन सब बातों से काउन्ट महोदय इतने आतंकित हो गए कि उनका चरित्र बिल्कुल बदल गया और वे फकीर बन गए। मोर्दासोव के कुछ प्रमुख व्यक्ति काउन्ट को बधाई देने के लिए दुरवानोवो गए, दरअसल वे काउन्ट को देखने के लिए उत्सुक थे। लेकिन काउन्ट या तो उनसे मिले ही नहीं, और अगर मिले थे तो बड़े विचित्र ढंग से। यहां तक कि काउन्ट ने अपने भूतपूर्व परिचितों को पहचाना भी नहीं। कहा गया कि वे जान-बूझकर लोगों को पहचानने से इन्कार कर रहे हैं।

खुद गवर्नर महोदय काउन्ट से मिलने गए थे, वे यह खबर लेकर लौटे कि उनकी राय में सचमुच काउन्ट का दिमाग कुछ गड़बड़ है, इसके बाद जब भी गवर्नर महोदय को उनकी दुखानोवो की यात्रा का स्मरण कराया जाता तो वे नाक-भौं सिकोड़ लेते। महिलाओं को बेहद क्षोभ था। आखिरकार इस महत्त्वपूर्ण तथ्य की स्थापना की गई कि काउन्ट स्तेपानीदा मातवीव्ना (यह औरत कौन थी यह ईश्वर ही जानता है) की मुट्ठी में हैं, जो बड़ी उम्र की एक मोटी औरत थी, छींटदार पोशाकें पहनती थी, और उसके हाथ में हर वक्त चाबियों का गुच्छा रहता था। वह काउन्ट के साथ पीटर्सबर्ग से आई थी। काउन्ट बच्चों की तरह उस बुढ़िया का हुक्म मानते थे और बिना उसकी इजाजत के हिल-डुल भी नहीं सकते थे। वह बुढ़िया अपने हाथों से काउन्ट को नहलाती थी, काउन्ट से बच्चे की तरह लाड़ करती थी, उन्हें बिगाड़ती थी, और सब लोगों को खास तौर पर रिश्तेदारों को काउन्ट से दूर रखती थी, जो हालात की जांच-पड़ताल करने के लिए वहां अक्सर आया करते थे। मर्दासोव में, विशेषकर महिला वर्ग में, इस रहस्य को लेकर तरह-तरह के अनुमान लगाए गए। यह भी कहा गया कि स्तेपानीदा मातवीव्ना ही काउन्ट की सारी रियासत संभालती है, और काउन्ट ने उसे असीम अधिकार और मनमानी करने की खुली छूट दे रखी है। और उस बुढ़िया ने सब अमीनों, कारिन्दों और नौकरों को बर्खास्त कर दिया है और खुद ही सारी रकमें वसूल करती है। लेकिन वह योग्य प्रबन्धकर्ती थी, इसलिए किसान अपने भाग्य को सराहते थे। रही काउन्ट की बात, सो मालूम हुआ कि वह करीब-करीब पूरा दिन प्रसाधन में लगाते थे, बनावटी बालों की टोपियां और कोट पहनकर देखते थे। बाकी वक्त स्तेपानीदा मातवीव्ना के साथ ताश खेलते थे और कभी-कभी अपनी शान्त अंग्रेजी घोड़ी पर बैठकर सवारी करने निकलते थे। स्तेपानीदा मातवीव्ना हमेशा बंद गाड़ी में उनके साथ चलती थी, क्योंकि काउन्ट,

330

जो मुश्किल से काठी पर बैठ सकते थे, खुशी की खातिर ... कई बार काउन्ट दिखावे के लिए ही घुड़सवारी किया करते थे। कई बार काउन्ट ओवरकोट पहने सिर पर बड़ा-सा स्ट्रा हैट लगाए, गले में औरतों का सा गुलाबी रुमाल बांधे, पैदल नजर आते थे। वे एक आंख वाला चश्मा पहने रहते थे, बाईं बांह पर कौर्नफ्लावर और कुकुरमुत्ते वगैरह डालने के लिए एक टोकरी लटकी रहती थी। स्तेपानीदा मातवीव्ना हमेशा उनके साथ रहती थी और उनके पीछे-पीछे छह फुट लम्बे कद के दो नौकर चलते थे। अक्सर वे गाड़ी में बैठकर भी पीछे-पीछे आते थे। अगर रास्ते में उन्हें देखकर कोई किसान एक ओर हटकर अपनी टोपी उतार लेता और झुककर कहता, 'सलाम प्यारे काउण्ट, योर एक्सीलैंसी, हमारे सूरज !' तो काउन्ट फौरन अपना दूर देखने वाला शीशा उधर फेरकर अनुग्रहपूर्वक झुक जाते और कृपालु स्वर में फ्रेंच में कहते, 'सलाम, प्यारे सलाम !' इस तरह की कई अफवाहें मोर्दासोव में फैल गई थीं। लोग काउन्ट को भुला नहीं सके, क्योंकि काउन्ट इतने नजदीक रहते थे। अब आप खुद ही ख्याल कीजिए कि एक दिन अचानक यह खबर सुनकर कि वही फकीर और विलक्षण काउन्ट अपनी मर्जी से मोर्दासोव आ गए हैं और मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के यहां टिके हैं—लोगों को कितनी हैरानी हुई होगी। लोगों में उत्तेजना और घबराहट फैल गई। सब किसी न किसी जवाब की उम्मीद में थे और लगातार एक-दूसरे से पूछते थे, 'आखिर इसका क्या मतलब है ?' कुछ जाकर मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना से मिलने की बात भी सोचने लगे। काउन्ट का आना सबको असाधारण घटना मालूम हुई। महिलाओं ने जानकारी का आदान-प्रदान किया, एक-दूसरे के घर गईं और उन्होंने अपनी नौकरानियों और पतियों को इस रहस्य का पता करने के लिए भेजा। काउन्ट मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के यहां ही क्यों ठहरे यह बात सबको विचित्र मालूम हुई, सबसे ज्यादा चिढ़ अन्ना निकोलाईव्ना

एन्टीपोवा को हुई जो काउन्ट की बहुत दूर की रिश्तेदार थी। लेकिन इन तमाम सवालों का जवाब पाने के लिए स्वयं मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना से जाकर मिलना ही एकमात्र तरीका था, हम पाठक को अपने साथ वहीं चलने के लिए निमंत्रित करते हैं। यह सच है कि अभी सुबह के सिर्फ दस बजे हैं, लेकिन मुझ विश्वास है कि वे अपने आत्मीय मित्रों से मिलने में इन्कार नहीं करेंगी। जो भी हो, वे हमसे ज़रूर मिलेंगी।

३

सुबह के दस बजे हैं; हम बोलशाया स्ट्रीट पर मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के मकान में हैं और उसी बैठक में बैठे हैं जिसमें श्रीमती मारया खास मौकों पर लोगों को बुलाती हैं। उनका अपना निजी कमरा भी है। बैठक का फर्श पालिश से चमचमा रहा है, दीवार का कागज़ भी बढ़िया है। भारी-भरकम फर्नीचर पर लाल रंग की गद्दियां हैं, अंगीठी के ऊपर की मैन्टलपीस पर एक शीशा लगा हुआ है, जिसके सामने कांसे की एक घड़ी है, जिसपर क्यूपिड[1] बने हुए हैं। यह घड़ी बहुत भद्दी मालूम होती है। खिड़कियों के बीच की खाली जगह में भी दो शीशे हैं, जिसके पर्दे जल्दी में हटाए गए हैं। इन शीशों के आगे छोटी मेज़ें रखी हैं, जिनपर कई घड़ियां हैं। कमरे की पीछे की दीवार के साथ एक बढ़िया प्यानो रखा है, जो खास तौर पर ज़ेना के लिए यहां लाया गया है। ज़ेना को संगीत का शौक है। अंगीठी के गिर्द आरामकुर्सियां बेतरतीब रखी हैं, फिर भी वे अच्छी मालूम देती हैं। हर दो कुर्सियों के बीच एक छोटी

१. प्रेम का देवता

तिपाई रखी है। कमरे के दूसरे सिरे पर एक और मेज़ है, जिसपर सफ़ेद मेज़पोश बिछा है और एक चांदी के समावार में पानी उबल रहा है, और बढ़िया चाय के बर्तन रखे हैं। चाय बनाने का काम नस्तास्या पेत्रोव्ना ज़्याबलोवा को सौंपा गया है, जो मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना की दूर की रिश्तेदार है, और वहीं रहती है।

इस महिला के बारे में भी कुछ शब्द कह देना ठीक होगा। वह पैंतीस बरस के करीब उम्र की विधवा थी। उसके बाल काले रंग के थे, चेहरे पर ताज़गी थी और आंखें सुन्दर ब्राउन रंग की थीं। उसे किसी दृष्टि से भी बदसूरत नहीं कहा जा सकता था। हर वक्त खुश रहती थी। हंसने का उसे मर्ज़ था। काफी चालाक और बातूनी थी और अच्छी तरह अपनी देखभाल करने में समर्थ थी। उसके दो बच्चे थे जो किसी स्कूल में पढ़ रहे थे। अब वह दुबारा शादी करने के लिए उत्सुक है, वह आज़ाद तबियत की औरत है, उसका पति एक अफसर था।

मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना आग के पास बैठी थीं और उनकी तबियत बड़ी खुश थी। वे हल्के हरे रंग की पोशाक पहने हुए थीं, जो उनपर खूब फब रही थी। काउन्ट के आने से उन्हें बेहद खुशी हुई थी। काउन्ट इस वक्त ऊपर के कमरे में तैयार हो रहे थे। मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना इतनी खुश थीं कि उन्होंने अपनी खुशी को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। उनके सामने एक नौजवान अत्यन्त कृत्रिम भाव से खड़ा था और बहुत ज़िन्दादिली से उन्हें कुछ बता रहा था। उसकी आंखों से श्रोताओं को प्रसन्न करने की इच्छा झलक रही थी। उसकी उम्र पच्चीस बरस थी। अगर वह भावावेश में बातें न कर रहा होता तो शायद उसके तौर-तरीके बर्दाश्त भी किए जा सकते थे, लेकिन वह बढ़ा-चढ़ाकर अपनी वाक्चातुरी और हास्य का प्रदर्शन कर रहा था। उसने बहुत बढ़िया कपड़े पहन रखे थे। उसके बाल सुनहरी थे और शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं थी। लेकिन हम इस आदमी का ज़िक्र पहले कर चुके हैं। यह वही

मोज़ग्ल्याकोव है, जिससे लोगों को बड़ी उम्मीदें थीं। मारया अलेक्ज़े-न्ड्रोव्ना मन ही मन इस नौजवान को खरदिमाग समझती थीं, लेकिन वे हमेशा बड़े उत्साह से उसका स्वागत करती थीं। वह उनकी बेटी ज़ेना से शादी करना चाहता था, उसके अपने ही शब्दों में, 'वह ज़ेना के प्रेम में पागल था।' वह बार-बार ज़ेना की ओर मुंह फेरकर अपनी वाक्-चातुरी और उल्लास से उसकी मुस्कान पाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन ज़ेना उसके प्रति लापरवाही और उदासीनता दिखा रही थी। इस वक्त ज़ेना दूर, प्यानो के पास अन्यमनस्कता से किसी पंचाङ्ग के पन्ने पलट रही थी। वह उन औरतों में से थी, जिन्हें देखते ही सब लोगों का मन उत्साह और प्रशंसा से भर जाता है। वह असाधारण सुन्दरी थी—लंबा कद, सलोना रंग, काली आंखें, छरहरा बदन, लेकिन शानदार वैभवशाली वक्ष। उसकी बांहें और कंधे किसी मूर्ति की तरह सुडौल थे, उसके पैर गज़ब के सुकुमार थे, चाल महारानियों की तरह थी। आज उसकी रंगत कुछ पीली नज़र आ रही थी, लेकिन उसके लाल होंठ, जो शायद किसी कलाकार ने तराशे थे और जिनके बीच से उसके छोटे-छोटे दांत मोतियों की लड़ियों की तरह चमकते थे, उन्हें अगर आप एक बार भी देख लें तो तीन रातों तक आपकी नींद उड़ जाए और सपनों में भी इसीका ख्याल आता रहे। उसका चेहरा इस समय कठोर और गंभीर था, साफ ज़ाहिर था कि उसकी दृष्टि के आगे मोज़ग्ल्याकोव महाशय बुरी तरह घबरा रहे थे। जो भी हो, वह जब भी कनखियों से ज़ेना की तरफ देखते थे तो सकपका जाते थे। ज़ेना की हर अदा में अहंकार-भरी उदासीनता थी। वह सफेद मलमल की एक सादी पोशाक पहने थी। सफेद रंग उसपर बहुत खिलता था, लेकिन उसपर तो सभी चीज़ें खिलती थीं। वह एक अंगूठी पहने थी, जिसपर किसीके बालों की लट मढ़ी थी, बालों के रंग से यह साफ ज़ाहिर था कि वे बाल हरगिज़ ज़ेना की मां के नहीं थे। मोज़ग्ल्याकोव ने कभी यह पूछने का साहस नहीं

किया था कि वे बाल किसके थे। आज सुबह ज़ना हमेशा से कहीं ज्यादा खामोश और उदास नज़र आ रही थी, जैसे किसी चिन्ता में खोई हो। लेकिन मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना लगातार गप्पें हांकने के लिए तैयार थीं, हालांकि बीच-बीच में कनखियों से वे अपनी बेटी को संदिग्ध दृष्टि से देखती जाती थीं। मालूम होता था वे भी ज़ेना से डरती हैं।

मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना चहक उठीं, 'पावेल अलैक्ज़ेन्ड्रोविच, मैं बेहद खुश हूं, मेरा बस चले तो खिड़की में खड़ी होकर हर आदमी को यह खबर सुना दूं। तुमने अपने वादे से दो हफ्ते पहले आकर मुझे और ज़ेना को जो 'सरप्राईज़' दी, मैं उसका ज़िक्र नहीं कर रही। सो तो है ही, कितनी खुशी की बात है कि तुम प्यारे काउन्ट को यहां ले आए ! तुम कल्पना नहीं कर सकते कि मुझे उस शानदार बुज़ुर्ग से कितना प्यार है ! नहीं, तुम इन बातों को हरगिज़ नहीं समझ सकोगे ! तुम नौजवान लोग मेरे उत्साह को नहीं समझ सकते, मैं चाहे तुम्हें कितना ही समझाऊं। तुम नहीं जानते कि गुज़रे ज़माने में, छह बरस पहले काउन्ट मेरे लिए क्या चीज़ थे—याद है ज़ेना ? ओह, लेकिन मैं भूल गई, तब तुम अपनी मौसी के यहां रहते थे···तुम्हें विश्वास नहीं होगा पावेल अलैक्ज़ेंड्रोविच, मैं काउन्ट की पथप्रदर्शक बहन, मां सब कुछ थी। वे बच्चे की तरह मेरा कहा मानते थे। हमारा सम्बन्ध निष्कपट, कोमल और उदात्त था। यहां तक कि उसमें ग्रामीण आनन्द भी था। मैं यह भी नहीं जानती कि इस रिश्ते को किस नाम से पुकारूं। इसीलिए काउन्ट सिर्फ मेरे घर को कृतज्ञतापूर्वक याद करते हैं। बेचारे शाहज़ादे ! शायद तुम नहीं जानते पावेल अलैक्ज़ेन्ड्रोविच, तुमने काउन्ट को मेरे पास लाकर उनकी कितनी रक्षा की है। पिछले छह बरसों में मैं दुखते दिल से काउन्ट की याद करती रही हूं। तुम्हें विश्वास नहीं होगा—सचमुच सपनों में काउन्ट नज़र आते थे। लोग कहते हैं कि उस भयंकर औरत ने काउन्ट पर जादू कर दिया है, उन्हें तबाह कर दिया है लेकिन आखिरकार तुमने काउन्ट को

उसके पंजों से छुड़ा ही लिया ! आह ! इस मौके से फायदा उठाकर काउन्ट को पूरी तरह मुक्ति दिलानी चाहिए। मुझे एक बार फिर बताओ, तुमने यह सब कैसे किया ? मुझे विस्तारपूर्वक बताओ कि काउन्ट से तुम्हारी मुलाकात कैसे हुई। पहले जब तुमने मुझे यह बात बताई थी, तो मैं अपनी उत्तेजना में सिर्फ मुख्य पहलुओं पर ही ध्यान दे पाई थी, लेकिन ब्योरा ही हर चीज का सार होता है। मैं ब्योरों पर जान देती हूं, यहां तक कि सबसे ज्यादा जरूरी मामलों में भी मैं पहले ब्योरों को ही देखती हूं···और जब तक काउन्ट तैयार···हो रहे हैं—तुम···'

'वाह ! मैंने जैसा आपको बताया, सब वैसे ही हुआ था, मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना,' मोजग्ल्याकोव ने जोश से उनकी बात काटते हुए कहा। वह जरूरत पड़ने पर अपनी कहानी एक दर्जन बार दुहराने के लिए भी तैयार था, क्योंकि इसमें उसे बड़ा आनन्द मिलता था। 'मैंने रात-भर सफर किया और क्षणभर के लिए भी नहीं सो सका—आप कल्पना कर सकती हैं कि मैंने कितनी जल्दी मचाई होगी।' फिर उसने जेना की तरफ देखकर कहा, 'बस यह समझिए कि मैं चिल्लाता रहा, गालियां बकता रहा और घोड़े मंगवाने के लिए कहता रहा। हर स्टेशन पर घोड़ों को लेकर मैंने खूब लड़ाई-झगड़ा किया। अगर इन सारी बातों को छपा दिया जाए तो आधुनिकतम शैली की कविता बन जाएगी। लेकिन सवाल यह नहीं है, ठीक सुबह छह बजे मैं दुगीशेवो पहुंचा, जो कि आखिरी स्टेशन है। मेरी हड्डियां तक बर्फ में जम गई थीं। मैं अपने को गर्माने के लिए रुका तक नहीं और घोड़े बदलने के लिए चिल्लाता रहा। पोस्ट-मास्टर की बीवी डर गई, उसकी गोद में बच्चा था, डर के मारे उसका सारा दूध सूख गया होगा।···सूर्योदय बड़ा शानदार था। आप जानती हैं कि कुहरे का रंग लाल हो जाता है फिर रुपहला। मैंने किसी चीज की तरफ रत्तीभर भी ध्यान नहीं दिया। बस समझिए कि शैतान की फुर्ती से काम किया। मैंने किसी प्रिवी काउंसलर के घोड़े जबरदस्ती

छीन लिए और करीब-करीब उसको द्वन्द्व-युद्ध करने की चुनौती दे डाली। मुझे बताया गया कि कोई काउन्ट, जिसके पास अपने घोड़े थे, रात-भर वहां रहकर पन्द्रह मिनट पहले ही वहां से चला गया था। मैंने किसीकी बात नहीं सुनी और गाड़ी में जा बैठा और पागलों की तरह तेजी से गाड़ी दौड़ा ले गया। फेत् ने अपने एक शोकगात में ऐसी ही घटना का ज़िक्र किया है। शहर से ठीक सात मील दूर स्वेतोज़र्स्क आश्रम के मोड़ पर मैंने देखा कि एक असाधारण घटना हो गई है—एक बड़ी-सी घोड़ा-गाड़ी सड़क पर उलटी पड़ी है, कोचवान और दो नौकर गाड़ी के आगे घबराए खड़े हैं, और गाड़ी में से हृदयविचारक चीखें और विलाप सुनाई दे रहा है, मैंने आगे चलने का फैसला किया। गाड़ी उलटी है तो उलटी रहे! मुझसे क्या वास्ता?

'लेकिन जैसा हाईन'[1] ने कहा है—इन्सानियत हर चीज में अपनी टांग अड़ाती है। मुझपर भी इन्सानियत हावी हो गई। मैं रुक गया। मैं और मेरा कोचवान सेम्यून (उसकी आत्मा भी ठेठ रूसी है) फौरन भागे-भागे वहां गए। हम छह जनों ने मिलकर गाड़ी को उठाकर खड़ा किया (उसके पैर तो थे नहीं, पहिए थे) कुछ किसानों ने भी जो लकड़ी लेकर शहर जा रहे थे, हमारी मदद की। मैंने उन्हें बख्शीश दी। मैंने सोचा: क्या यह वही काउन्ट तो नहीं जिसका जिक्र लोगों ने मुझसे किया था। मैंने गौर से देखा—हे ईश्वर! यह तो काउन्ट गैबरीला ही थे। खूब मुलाकात हुई। मैं चिल्लाया—काउन्ट! चचाजान! पहले तो उन्होंने मुझे पहचाना ही नहीं। मेरे कहने का मतलब है कि उन्होंने करीब-करीब मुझे फौरन ही पहचान लिया···अगले ही क्षण। आपको यह बताने में मुझे कोई एतराज़ नहीं कि शायद काउन्ट अभी तक मुझे नहीं पहचानते। वे मुझे रिश्तेदार की बजाय कोई दोस्त समझते हैं। मैं उन्हें सात बरस पहले पीटर्सबर्ग में मिला था। उस वक्त मैं एक बालक था।

१. एक प्रसिद्ध जर्मन कवि—हैनरिख हाईन

मुझे उनकी याद है, मैं उनसे प्रभावित भी हुआ था। लेकिन वे मुझे भला किसलिए याद रखें? मैंने अपना परिचय दिया वे खुशी से फूले नहीं समाए, मुझे गले से लगा लिया और सारा वक्त डर से कांपते रहे और रोते रहे—ईश्वर की कसम, मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है। आखिरकार किसी तरह मैंने उन्हें अपनी गाड़ी में बैठकर मोर्दासोव चलने के लिए राजी किया, मैंने कहा कि वे चाहे एक ही दिन के लिए चलें, लेकिन जरूर चलें। यहां वे आराम कर सकेंगे और उनकी तबियत सुधर जाएगी। वे बिना कुछ कहे चलने के लिए तैयार हो गए···उन्होंने मुझे बताया कि वे पादरी मिसाईल से मिलने स्वेतोज़र्स्क आश्रम जाते रहे हैं, पादरी मिसाईल की वे इज्जत करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि काउन्ट के सब रिश्तेदार स्तेपानीदा मातवीव्ना के बारे में जानते हैं। पिछले बरस इस औरत ने मुझे झाड़ू मारकर दुखानोवो से निकाल दिया था—तो इस औरत को खत मिला कि उसका एक रिश्तेदार मास्को में मौत की घड़ियां गिन रहा है, यह रिश्तेदार उसका बाप है, बेटी है या कोई और है यह न मैं जानता, न ही मुझे इसकी परवाह है। शायद उसका बाप और बेटी दोनों मरने के करीब थे या किसी शराबखाने में काम करने वाला भांजा या भतीजा होगा जिसे पासंग की तरह इस्तेमाल किया गया होगा···कहने का मतलब यह है कि स्तेपानीदा मातवीव्ना इतनी उद्विग्न हो गई कि वह दस दिन के लिए काउन्ट को छोड़कर राजधानी की शोभा बढ़ाने के लिए चली गई। काउन्ट ने एक दिन इन्तजार की, दो दिन इन्तजार की, बनावटी बालों की टोपियां पहनकर देखीं, तेल-फुलेल लगाया, अपने बाल रंगे, ताश के पत्तों को उलटा-पलटा लेकिन अन्त में उन्होंने देखा कि स्तेपानीदा मातवीव्ना के बिना उनका गुजारा नहीं चल सकता। उन्होंने गाड़ी में घोड़े जुतवाए और स्वेतोज़र्स्क आश्रम की तरफ चल पड़े। एक नौकर ने, जो स्तेपानीदा मातवीव्ना से डरता था, काउन्ट को रोकने की कोशिश की लेकिन काउन्ट अपने

फैसले पर अड़े रहे। कल खाने के बाद वे चले थे। रात इगीशेवो में गुज़ारी, तड़के ही वहां से चल पड़े, और उस मोड़ पर, जिधर से पादरी मिसाईल के आश्रम की तरफ रास्ता जाता था, उनकी गाड़ी, समझ लीजिए, नाली में गिर पड़ी। मैंने उन्हें बचाया और उन्हें आदरणीया मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के घर चलने के लिए राज़ी कर लिया, जो हम दोनों की मित्र हैं। काउन्ट का कहना है कि आपसे ज्यादा आकर्षक व्यक्तित्व वाली महिला उन्होंने कभी नहीं देखी। लीजिए, हम यहां आ पहुंचे, काउन्ट ऊपर अपने नौकर की मदद से जिसे वे कभी अपने साथ ले जाना नहीं भूलते—तैयार हो रहे हैं। पूरी तरह तैयार हुए बगैर या यूं कहें कि अपना हुलिया सुधारे बगैर महिलाओं के सामने आने से तो वे मरना कहीं ज्यादा पसन्द करेंगे। यही सारी कहानी है।'

'ज़ेना, वह आदमी कितना मसखरा है ! कितने बढ़िया ढंग से कहानी कहता है। लेकिन सुनो पॉल, एक और सवाल का जवाब दो ! मुझे ठीक-ठीक बताओ तुम्हारा काउन्ट से क्या रिश्ता है ? देखती हूं तुम उन्हें चचा कहते हो !' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने पूरी कहानी सुनने के बाद कहा।

'मैं ठीक से नहीं जानता, मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना कि मेरा काउन्ट से क्या रिश्ता है—शायद सात पुश्त दूरी का रिश्ता है—फिर भी मैं ठीक से नहीं कह सकता कि मैं उनका क्या लगता हूं। इसमें कसूर मेरा नहीं, बल्कि चाची अग्लाया मिखाईलोव्ना का है, जिन्हें दिन-भर अपने रिश्तेदारों के नाम उंगलियों पर गिनने के सिवा कोई काम नहीं, उन्होंने पिछले साल मेरी जान खाई थी कि मैं दुखानोवो जाकर काउन्ट से मिलूं। वे खुद ही क्यों नहीं चली गईं ? मैं काउन्ट को बिना किसी खास कारण के ही चचाजान कहता हूं और वे इस तरह पुकारे जाने पर जवाब देते हैं, बस अभी तक तो हमारा यही रिश्ता है…'

'खैर, मैं तो हमेशा यही कहूंगी कि सिर्फ ईश्वर की प्रेरणा पाकर

ही तुम काउन्ट को सीधे यहां ले आए। अगर काउन्ट यहां न आकर किसी और के घर चले गए होते तो उनकी क्या हालत होती, यह सोचते ही मैं कांपने लगती हूं। जानते हो यहां के लोग उनपर झपटकर उन्हें खा जाते, उनके टुकड़े-टुकड़े कर देते ! वे इस तरह काउन्ट पर झपटते जैसे वे कोई सोने की खान हों। क्या पता वे उन्हें लूटते भी। तुम नहीं जानते, यहां के लोग कितने लालची, नीच और धोखेबाज हैं, पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच।'

'हे, ईश्वर ! आप क्या कह रही हैं ? आपके सिवा भला उन्हें किसके घर ले जाया जा सकता था? आप भी कितनी अजब हैं, मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ?' नस्तास्या पेत्रोव्ना बीच में बोल उठी, जिसे चाय तैयार करने के लिए वहां बुलाया गया था, 'क्या आपका ख्याल था कि काउन्ट को अन्ना निकोलाईव्ना के यहां ले जाया जा सकता था ?'

'लेकिन काउन्ट ने इतनी देर कैसे लगा दी ! बड़ी अजब बात है !' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना बेचैनी से अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गई।

'आपका मतलब चचाजान से है? वे तो शायद कपड़े पहनने में अभी और पांच घंटे लगाएंगे। और चूंकि उनकी याददाश्त है ही नहीं, वे यह भी भूल गए होंगे कि वे आपके साथ आकर ठहरे हैं। जानती हैं, वे बड़े अजब आदमी हैं, मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना।'

'ओह, बस करो ! यह बकवास मत करो !'

'यह बकवास नहीं है मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ! यह गंभीर सत्य है। वाह, वे आदमी नहीं बल्कि शरीर के अलग हिस्सों को जोड़कर बनाए हुए पुतले हैं। आपने उन्हें छह बरस पहले देखा था, लेकिन मैंने उन्हें सिर्फ एक घंटे पहले देखा है। उन्हें तो कभी का दफ्न हो जाना चाहिए था। वे जिन्दा लाश हैं। एकदम प्रेत ! लगता है, लोग उन्हें दफनाना भूल गए हैं। उनकी आंखें बनावटी हैं, टांगें कार्क की बनी हैं, वे स्प्रिंगों के सहारे खड़े होते हैं, स्प्रिंगों के सहारे बोलते हैं।'

'हे ईश्वर! तुम्हारा दिमाग कितना गलीज है' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना कठोरता का अभिनय करते हुए बोलीं। 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए—तुम नौजवान हो और एक रिश्तेदार होकर भी इतने सम्मानित बुजुर्ग के बारे में इस तरह बातें करते हो! काउन्ट ने तुमपर जो बेशुमार मेहरबानियां की हैं, उनकी बात तो छोड़ ही दो।' सहसा मारया अलैक्जेन्ड्रोव्ना की आवाज में एक ममस्पर्शी कोमलता आ गई: 'याद रखो कि काउन्ट हमारे अभिजातवर्ग के एक विशिष्ट अवशेष हैं, एक स्मारक हैं, मेरे दोस्त! मैं जानती हूं कि तुम जिन नये विचारों की बातें करते रहते हो, वही तुम्हें गुमराह करते हैं। लेकिन मैं खुद भी उन नये विचारों को पसंद करती हूं। मैं जानती हूं कि तुम्हारे विचारों का आधार नेक और सम्मानपूर्ण है। मैं महसूस करती हूं कि ये नये विचार बहुत ऊंचे हैं, लेकिन इससे मैं चीजों के असली या यूं कहें कि व्यावहारिक पहलू को न देखूं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं सोसाइटी में रह चुकी हूं। मैंने तुमसे ज्यादा जिन्दगी देखी है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं मां हूं और तुम अभी छोटे हो। काउन्ट बुजुर्ग आदमी हैं, इसलिए तुम्हारी दृष्टि में हास्यास्पद हैं। इसके अलावा पिछले बरस तुमने सचमुच कहा था कि तुम अपने भूमिदासों को आजाद करना चाहते हो, क्योंकि तुम महसूस करते हो कि तुम्हें अपने युग के लिए कुछ करना चाहिए। अपने उस शेक्सपियर को पढ़कर तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। यकीन करो पावेल अलैक्जेन्ड्रोविच, तुम्हारे शेक्सपियर का जमाना कभी का खत्म हो चुका है, और अगर वह फिर से जिन्दा हो जाए तो वह अपने सारे महान् विचारों के बावजूद हमारी जिन्दगी का एक भी पहलू नहीं समझ सकेगा। अगर हमारे आधुनिक समाज में कहीं पौरुष या शालीनता बाकी है तो वह उच्चवर्ग में ही है। ये चीजें वहीं आपको मिलेंगी। एक काउन्ट हर जगह काउन्ट ही रहता है, चाहे वह झोंपड़ी में हो या महल में। हालांकि हमारी नतालिया दमित्रीव्ना के पति ने महल जैसी इमारत

खड़ी कर ली है, लेकिन वह सिर्फ नतालिया दमित्रीव्ना का पति ही तो है। नतालिया दमित्रीव्ना चाहे एक छोड़ पचास फूली हुई घघरियां पहन ले, रहेगी तो वह वही नतालिया दमित्रीव्ना ही, उससे ज्यादा कुछ नहीं। तुम खुद भी कुछ हद तक अभिजातवर्ग के प्रतिनिधि हो, क्योंकि अभिजातवर्ग से आए हो। मैं भी अपने को अभिजातवर्ग से बाहर का नहीं समझती। सिर्फ बीमार पक्षी ही अपने घोंसले को गंदा करता है। लेकिन जो भी हो मेरे बिना बताए तुम खुद इन्हीं नतीजों पर पहुंचोगे, और मेरे प्यारे पॉल, मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूं कि तुम अपने शेक्सपियर को भूल जाओगे। मुझे लगता है कि अभी भी तुम ईमानदार नहीं हो, सिर्फ फैशन की नकल कर रहे हो। लेकिन मैं भी किस तरह बातों में लगी हूं, तुम यहीं ठहरो मेरे प्यारे पॉल, मैं ऊपर जाकर देखती हूं कि काउन्ट क्या कर रहे हैं। शायद उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तुम जानते ही हो मेरे यहां के नौकरों को…'

और उन नौकरों का ख्याल आते ही मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना जल्दी से बाहर चली गईं।

'काउन्ट उस लीचड़ अन्ना निकोलाईव्ना के हाथों में नहीं पड़े, इस बात से मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना बहुत खुश नज़र आती हैं, और अन्ना निकोलाईव्ना सबसे कह चुकी हैं कि वे काउन्ट की रिश्तेदार हैं। मेरा ख्याल है कि वे गुस्से से जली जा रही होंगी,' नस्तास्या पेत्रोव्ना ने टिप्पणी की, लेकिन किसीने उसकी बात का जवाब नहीं दिया, इसलिए उसने ज़ेना की तरफ देखा। स्थिति भांपते ही और किसी काम का बहाना बना करके वह बाहर चली गई, लेकिन बाहर दरवाज़े पर कान लगाकर उसने सारी बातें सुन लीं।

पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच फौरन ज़ेना की तरफ मुड़ा। वह बेहद उत्तेजित था। उसकी आवाज़ कांप रही थी, उसने भीरु याचना के स्वर में पूछा, 'ज़िनेदा अफनास्यीव्ना, तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो?"

'तुमसे ? किसलिए ?' ज़ेना ने जवाब दिया। उसका चेहरा कुछ सुर्ख़ हो गया और उसने अपनी शानदार आंखें ऊपर उठाईं।

'क्योंकि मैं जल्द ही आ गया हूं। ज़िनेदा अलैक्ज़ैंड्रोव्ना, मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सका, मैं और दो हफ्ते इन्तज़ार नहीं कर सकता था··· यहां तक कि सपनों में भी तुम्हारे ख्याल ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा था। मैं अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए भागा हुआ आया हूं···लेकिन तुम्हारे माथे पर त्योरियां हैं, तुम नाराज़ हो ! क्या अभी भी मुझसे कोई पक्की बात नहीं करोगी ?'

यह सच था कि ज़ेना के माथे पर त्योरियां थीं।

'मुझे उम्मीद थी कि तुम इस बात का ज़िक्र करोगे,' ज़ेना ने फिर आंखें नीची कर लीं। उसकी आवाज़ दृढ़ और कठोर थी, साथ ही उसमें छिपी खीज भी मालूम हो रही थी। 'चूंकि इस उम्मीद से मेरे दिल को बहुत तकलीफ पहुंची है इसलिए जितनी जल्दी यह किस्सा खत्म हो जाए उतना ही अच्छा है, तुमने फिर जवाब पाने की मांग की है, इसलिए मुझे फिर वही जवाब देने की इजाज़त दो, क्योंकि अब भी स्थिति पहले जैसी ही है—इन्तज़ार करो, मैं फिर कहूंगी—मैंने अभी तक फैसला नहीं किया है और मैं तुम्हारी बीवी बनने का वादा नहीं कर सकती, तुम ज़बर्दस्ती इस तरह की मांग नहीं कर सकते, पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच। लेकिन तुम्हें तसल्ली देने की खातिर मैं इतना भी कहे देती हूं कि मैं अभी आखिरी इन्कार नहीं करूंगी। और याद रखो—मुझे तुम्हारी इस बेचैनी और परेशानी से हमदर्दी है, इसलिए मैं तुम्हें उम्मीद रखने के लिए कह रही हूं। मैं फिर कहूंगी कि मैं फैसला करने की पूरी आज़ादी चाहती हूं और अगर मैंने तुम्हें कह दिया कि मैं कभी तुमसे शादी नहीं करूंगी तो तुम्हें मुझे यह दोष देने का कोई अधिकार नहीं होगा कि मैंने तुम्हें झूठी उम्मीद दिलाई थी। यह बात याद रखो !'

'तो फिर क्या—क्या समझूं ?' मोज़ग्ल्याकोव ने मिन्नत भरी

आवाज में कहा, 'क्या तुम मुझे प्रोत्साहन दे रही हो? क्या तुम्हारे शब्दों मे मैं उम्मीद का एक भी कण निकाल सकता हूं, जिनेदा अफनास्यीव्ना ?'

'मैंने तुम्हें जो बताया है उसे याद रखो और उसमें से जो चाहे नतीजा निकाल लो, यह तुम्हारा काम है। मैंने जो कहा है उससे ज्यादा एक भी शब्द नहीं कहूंगी। मैंने अभी तुम्हें इन्कार नहीं किया, मैं तो सिर्फ कहती हूं कि इन्तजार करो। लेकिन मैं फिर कहूंगी कि चाहने पर तुम्हें इन्कार करने का मेरा अधिकार ज्यों का त्यों है। मैं एक बात और कहूंगी, पावेल अलैक्जैंड्रोविच, कि तुम्हें जवाब देने के लिए जो मियाद दी गई थी, अगर तुम यह सोचकर मियाद से पहले आ गए हो कि तुम किसी टेढ़े ढंग से बाहर के किसी आदमी की शह पाकर (मिसाल के लिए ममी की शह पाकर) अपनी मनमानी कर सकते हो तो तुम्हारा ख्याल गलत है। तब तो मैं साफ-साफ तुम्हें इन्कार कर दूंगी—सुना ? बस बहुत हो चुका; अब वक्त से पहले मेहरबानी करके मुझसे एक भी शब्द न कहना।'

यह भाषण कठोर और रूखे स्वर में बिना किसी हिचकिचाहट के दिया गया, जैसे पहले से सब कुछ कंठस्थ कर रखा हो। पॉल महाशय को लगा जैसे उन्हें अच्छी तरह लताड़ा गया हो। इसी वक्त मारया अलैक्जैंड्रोव्ना लौट आई और उनके पीछे-पीछे मदाम ज्याबलोवा भी आ गई।

'मेरा ख्याल है, काउन्ट आने ही वाले हैं, जेना ! नस्तास्या पेत्रोव्ना ! फौरन ताजी चाय तैयार करो !'

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना एकदम घबराई हुई थीं।

'अन्ना निकोलाईव्ना ने अन्युत्का को हमारे रसोईघर में सारे समाचार जानने के लिए भेजा है। ओह, अब वे गुस्से से कितना जलेंगी !' नस्तास्या पेत्रोव्ना ने जल्दी से समावार के पास जाते हुए कहा।

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने मदाम ज्याबलोवा से कहा, 'मुझे इस बात से क्या मतलब ? जैसे मैं परवाह करती हूं कि तुम्हारी अन्ना निकोलाईव्ना क्या सोचती है ! मैं तो किसीको उसके रसोईघर में नहीं भेजूंगी। और मुझे सचमुच हैरानी है कि तुम मुझे बेचारी अन्ना निकोलाईव्ना का दुश्मन समझती हो। तुम ही नहीं, सारा शहर यही सोचता है। मैं तुमसे अपील करती हूं पावेल अलैक्जैंड्रोविच, तुम हम दोनों को जानते हो—भला मैं उसकी दुश्मन क्यों होने लगी ? प्रधानता पाने के लिए ? क्यों, लेकिन मुझे प्रधानता नहीं चाहिए, अगर वह पहली जगह लेना चाहती है तो ले ले ! सबसे पहले मैं ही आकर उसकी प्रधानता पर उसे बधाई दूंगी। इसके अलावा यह सरासर बेइन्साफी है। मैं हमेशा उसका पक्ष लेती हूं, यह मेरा फर्ज है। लोग उसे बदनाम करते हैं। तुम सब किसलिए उसकी बुराई करते हो ? वह जवान है और उसे पहनने-ओढ़ने का शौक है, क्या इसलिए ? मेरी राय में और बुरे काम करने से तो पहनने-ओढ़ने का शौक बेहतर है; मिसाल के लिए नतालिया दमित्रीव्ना जिन चीज़ों की शौकीन है उन्हें ज़बान पर नहीं लाया जा सकता। अन्ना निकोलाईव्ना क्षण-भर घर नहीं बैठ सकती, हर वक्त बाहर रहती है, क्या इसलिए आप लोग उसकी बुराई करते हैं ? हे ईश्वर ! वह पढ़ी-लिखी नहीं है, इसलिए वह किताब लेकर नहीं बैठ सकती और दो मिनट तक किसी और काम में मन नहीं लगा सकती। वह खिड़की में से हर रास्ता गुजरने वाले के साथ ठिठोली करती है, आंखें मटकाती है। फिर लोग क्यों कहते हैं कि वह सुन्दर है, जबकि सफेद चमड़ी के सिवा उसके पास कुछ नहीं है ? जब वह डान्स करती है तो बड़ी हास्यास्पद मालूम होती है—इतना तो मैं भी मानती हूं। फिर लोग उसे क्यों कहते हैं कि पोल्का डान्स बहुत शानदार करती है। वह कितनी अजब है—टोपियां और हैट पहनती है—लेकिन अगर ईश्वर ने उसे अच्छी रुचि नहीं दी और उसे इतना सीधा बनाया है तो इसमें उसका क्या कसूर है ? उससे कोई

अगर जाकर कहे कि मिठाई के ऊपर लिपटा हुआ कागज उसके बालों में बड़ा अच्छा लगेगा तो वह फौरन बालों में वैसा ही कागज टांक लेगी। वह बकवासिन है—लेकिन यह तो यहां की आम आदत है। इस शहर में कौन बकवास नहीं करता? वह मूंछों वाला सुशीलोव सुबह, दोपहर और रात को उससे मिलने जाता है। हे मेरे ईश्वर! अगर उसका पति रात-भर ताश खेलता रहे तो वह बेचारी आखिर क्या करे? लेकिन शहर में आपको ऐसे न जाने कितने बुरे लोग मिलेंगे। अब क्या पता कि यह सब झूठी बदनामी ही हो, खैर मैं तो हमेशा उसीकी तरफदारी करूंगी। हे ईश्वर! काउन्ट आ गए? वही हैं, वही हैं! मैं उन्हें हजारों की भीड़ में पहचान सकती हूं। आखिर आपसे मुलाकात हो ही गई मेरे प्रिन्स!' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना काउन्ट से मिलने के लिए भागीं।

४

सरसरी निगाह से देखने पर आपको हरगिज नहीं पता चलेगा कि काउन्ट एक बूढ़े आदमी हैं। सिर्फ नजदीक से गौर से देखने पर आप जान सकेंगे कि काउन्ट एक लाश हैं, जिनपर मुलम्मा चढ़ाया गया है। इस सूखी हुई लाश को एक नौजवान की तरह सजाने में कला के सभी साधनों का इस्तेमाल किया गया है। बनावटी बालों की टोपी, एक नुकीली काली दाढ़ी और मूंछों से काउन्ट का आधा चेहरा ढंका हुआ था। चेहरे पर पाउडर और रूज लगाने में असाधारण कुशलता बरती गई थी और और उनके चेहरे पर एक भी झुर्री नहीं थी। झुर्रियां कहां चली गईं, यह किसीको नहीं मालूम था। उनकी पोशाक नवीनतम

फैशन की थी। ऐसा मालूम होता था कि वे किसी फैशन-बुक की तस्वीर से उतरकर चले आ रहे हैं। वे गोल काट की कोटनुमा कोई चीज़ पहने हुए थे। उसका नाम मैं ठीक से नहीं जानता, लेकिन वह पोशाक एकदम फैशनेबुल और अपटुडेट थी और खास तौर पर सुबह के वक्त लोगों के यहां जाने के लिए बनवाई गई थी। दस्ताने, टाई, वास्कट, कमीज़—सभी कपड़े बड़े शानदार और बुर्राक थे। काउन्ट ज़रा-सा लंगड़ाते थे, लेकिन वे इतने अच्छे ढंग से लंगड़ाते थे, कि वह भी फैशन में शुमार मालूम देता था। शीशे का आंख पर उन्होंने एक आंख वाला 'मोनोकल' चश्मा चढ़ा रखा था। उनके कपड़े सेन्ट में तर थे। वे धीमे स्वर में आहिस्ता-आहिस्ता बोलते थे, बुढ़ापे की कमज़ोरी के कारण या शायद इसलिए कि उनके सारे दांत बनावटी थे। हो सकता है कि लोगों को प्रभावित करने के लिए वे ऐसा करते हों। कुछ अक्षर तो वे असाधारण मिठास से बोलते थे और हमेशा 'ई' पर ज़ोर देते थे। येस को 'ई-ई-स' कहते थे, जिसमें बेहद शीरा घुला रहता था। उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी एक छैले की तरह गुज़ारी थी और उनकी हर अदा में एक सहजता आ गई थी। लेकिन विस्मृति के गर्त में डूबी उनकी बीती ज़िन्दगी के अवशेष एक धुंधली, अचेतन स्मृति के रूप में बच रहे थे, जिन्हें शृंगार-प्रसाधन, कार्सेट्स, इत्र-फरोशों और नाइयों का सारा कौशल भी वापस नहीं ला सकता था। इसलिए पहले से ही यह मान लेना बेहतर होगा कि काउन्ट की वाक्चातुरी चाहे अभी तक लुप्त न हुई हो, लेकिन उनकी स्मरण-शक्ति कभी की लुप्त हो चुकी थी और वे बातचीत में हमेशा गड़बड़ा जाते थे। एक ही बात को बार-बार दुहराते थे और अक्सर अंट-संट भी बोलने लगते थे। उनसे बातचीत कैसे जारी रखी जाए, यह जानना ज़रूरी था, लेकिन मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्ना में आत्मविश्वास था और काउन्ट को देखते ही वे गद्गद हो उठीं।

'लेकिन आप तो वैसे के वैसे हैं, ज़रा भी नहीं बदले,' मारया

अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने मेहमान का हाथ पकड़कर एक कुर्सी पर बैठाते हुए कहा। 'तशरीफ रखिए काउन्ट, तशरीफ रखिए। हमारी पिछली मुलाकात को पूरे छह बरस बीत गए हैं, और इस बीच आपका एक भी खत नहीं आया। एक शब्द भी नहीं। ओह ! आपने मेरे साथ कितना बुरा सलूक किया है ! काउन्ट, मैं आपसे सख्त नाराज थी, मेरे प्यारे प्रिन्स ! लेकिन चाय—चाय, जल्दी करो नस्तास्या पेत्रोव्ना—चाय लाओ।'

'शुक्रिया—शुक्रिया······माफ कीजिए······' काउन्ट ने तुतलाते हुए कहा। (हम यह बताना भूल गए कि काउन्ट तुतलाते भी थे लेकिन उनकी तुतलाहट बड़ी फैशनेबल मालूम देती थी।) 'मुझे अफसोस है—जरा सोचिए, पिछले साल मैंने यहां आने का पक्का इरादा किया था।' फिर अपने शीशे में से कमरे का निरीक्षण करते हुए काउन्ट बोले, 'लेकिन लोगों ने मुझे यह कहकर डरा दिया कि यहां हैजा फला हुआ है।'

'नहीं काउन्ट, यहां हैजा तो नहीं फैला था,' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना बोलीं।

मोज़ग्ल्याकोव ने अपना महत्त्व जतलाने की खातिर कहा, 'चचाजान, यहां के जानवरों में बीमारी फैली थी।' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने सख्ती से उसकी तरफ देखा।

'हां, शायद जानवरों की ही या ऐसी ही कोई बीमारी रही होगी। इसलिए मैं घर में ही रहा। कहो मेरी प्यारी अन्ना निकोलाईव्ना, तुम्हारे पति मजे में हैं न ? क्या अभी वकालत करते हैं ?'

'नहीं काउन्ट, मेरे पति डिस्ट्रिक्ट अटर्नी नहीं हैं।' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना कुछ हकलाकर बोलीं।

'मैं शर्त बद कर कहता हूं कि चचाजान का दिमाग गड़बड़ा गया है और वे आपको अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा समझ रहे हैं,' मूर्ख मोज़ग्ल्याकोव चिल्लाया, लेकिन मारया अलैक्ज़ड्रोव्ना का चेहरा उतरा

देखकर उसने अपने ऊपर काबू पा लिया।

'अरे हां, अन्ना निकोलाईव्ना और, और······(मैं भूल गया हूं) अरे हां एन्तीपोवा।' काउन्ट ने कहा।

'नहीं काउन्ट, आपको गलतफहमी हुई है,' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने खीजभरी मुस्कान के साथ कहा, 'मैं अन्ना निकोलाईव्ना नहीं हूं। मैं यह कहे बगैर नहीं रह सकती कि मुझे विश्वास नहीं होता कि आपने मुझे पहचाना तक नहीं। ताज्जुब है काउन्ट ! मैं आपकी पुरानी मित्र मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना मास्कालीवा हूं, आपको मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की याद नहीं है, काउन्ट।'

'मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ! ज़रा सोचो तो सही ! और मेरा ख्याल है कि तुम (अरे उसका क्या नाम है)—हां, अन्ना वासीलीव्ना हो। कैसी मज़ेदार बात है ! तो मैं गलत जगह पर आ गया हूं। मेरा ख्याल था कि तुम मुझे सीधा मेरी मित्र अन्ना मातवीव्ना के घर ले जा रहे हो। वाह खूब, सुन्दर ! लेकिन मेरे साथ ऐसी बातें अक्सर होती हैं ! मैं हमेशा गलत जगह चला जाता हूं, मैं बुरा नहीं मानता, चाहे जो कुछ हो, हमेशा खुश रहता हूं। तो तुम नस्तास्या वैसीलीव्ना नहीं हो। कैसी दिलचस्प बात है !'

'मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना, काउन्ट, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ! ओह, आपने मेरे साथ कैसा बुरा सलूक किया है ! अपनी सबसे अच्छी मित्र को भी भूल गए !'

'अरे हां, मेरी सबसे अच्छी मित्र···क्या कहा ! क्या कहा ?' काउंट ने तुतलाकर कहा। उनकी नज़रें ज़ेना पर गड़ी थीं।

'और यह है मेरी बेटी ज़ेना। आप इससे अभी तक वाकिफ नहीं हैं। जब आप सन्—में यहां आए थे तो यह यहां पर नहीं थी, याद है काउन्ट ?'

'अच्छा तो वह तुम्हारी बेटी है ? सुन्दर ! बहुत सुन्दर !' काउन्ट

ने अपने शीशे में से ज़ेना की तरफ उत्सुकता से देखते हुए कहा। 'गज़ब की ख़ूबसूरती है!' काउन्ट फुसफुसाए। साफ ज़ाहिर था कि ज़ेना की ख़ूबसूरती ने काउन्ट को कत्ल कर डाला था।

'चाय पीएंगे, काउन्ट!' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने काउन्ट का ध्यान एक बच्चे की तरफ खींचा जो हाथ में ट्रे लेकर खड़ा था। काउन्ट ने चाय का प्याला उठाकर बच्चे की तरफ देखा, जिसके गाल मोटे और गुलाबी रंग के थे।

'आह, और यह तुम्हारा बेटा है? कैसा प्यारा नन्हा-सा बच्चा है! मेरा ख्याल है कि यह बहुत तमीज़दार लड़का है।'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने जल्दी से काउन्ट को टोककर कहा, 'लेकिन काउन्ट, मैंने आपकी भयंकर दुर्घटना की खबर सुनी थी। सच, डर के मारे मेरा बुरा हाल हुआ···कहीं आपको चोट तो नहीं लगी? आपको इस तरह की बातों के प्रति लापरवाही नहीं दिखानी चाहिए।'

'उसीने मुझे बाहर फेंका था। कोचवान ने मुझे फेंका था।' काउन्ट ने असाधारण उत्तेजना दिखाते हुए कहा। 'मुझे लगा जैसे दुनिया खत्म होने वाली है या इसी तरह की कोई चीज़ होने वाली है, और मैं मानता हूं कि मुझे डर लग रहा था···ईश्वर मुझे बचाए, डर के मारे मेरा बुरा हाल हो गया था। मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी, बिल्कुल नहीं! और सारा कसूर मेरे कोचवान फ्योफिल का था। मैं पूरी तरह तुमपर भरोसा करता हूं, मेरे दोस्त—इस मामले की तहकीकात करो और इस सिलसिले में जो चाहो करो, मुझे पूरा यकीन है कि उसने मुझे खत्म करने की कोशिश की थी।'

'अच्छी बात है चचाजान, मैं जो भी कर सकूंगा, ज़रूर करूंगा। लेकिन देखिए चचाजान! इस बार उस बेचारे को क्यों न माफी दी जाए? आपकी क्या राय है?' पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच बोला।

'हरगिज़ नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि उसने मेरी हत्या करने की

कोशिश की थी। वह और लैवरेन्ती, जिसे मैं घर छोड़ आया था—ज़रा सोचो—उसके दिमाग में भी नए विचार समा गये हैं, जानते हो? उसमें एक तरह की निहिलिज़्म[1] समाई है। या यूं कहा जाए कि वह पूरे मानों में कम्युनिस्ट है। अब उससे मिलने में मुझे बहुत डर लगता है।'

'यह एकदम सच है काउन्ट!' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोवना बोलीं, 'आप कल्पना नहीं कर सकते कि मुझे इन निकम्मे लोगों की वजह से कितनी तकलीफ उठानी पड़ती है। ज़रा सोचिए—मुझे इन्हीं दिनों अपने दो नौकरों को नौकरी से बर्खास्त करना पड़ा है, और मुझे कहना पड़ता है कि नये नौकर इतने बेवकूफ हैं कि दिन-रात मुझे सताते रहते हैं। आप कल्पना नहीं कर सकते काउन्ट, वे लोग इतने बेवकूफ हैं!'

'ज़रूर! ज़रूर! लेकिन मैं कहूंगा कि मुझे बेवकूफ नौकर ही पसंद हैं,' काउन्ट ने कहा, जो सब लोग बूढ़े लोगों की तरह इस बात से खुश थे कि लोग उनकी अनर्गल बातों को आज्ञाकारी भाव से ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं: 'कम से कम एक अर्दली को तो ईमानदार और बेवकूफ होना ही शोभा देता है; लेकिन सिर्फ कुछ ही लोग। इससे उनके चेहरों पर एक गंभीर भाव छा जाता है और वे देखने में अच्छे लगते हैं। यूं समझिए कि वे ज्यादा शिष्ट दिखाई देते हैं, और मैं एक अर्दली से सबसे पहले शिष्टता की ही अपेक्षा रखता हूं। मेरे पास तेरेन्ती नाम का एक नौकर है। तुम्हें तेरेन्ती की याद है न दोस्त?—ज्योंही मेरी नज़रें उसपर पड़ीं, मैंने उसकी किस्मत की भविष्यवाणी कर दी पहली बार ही—तुम हाल के पोर्टर बनोगे!…गज़ब का बेवकूफ आदमी था! चेहरे पर भेड़ जैसा भाव! लेकिन कितना गंभीर और दर्शनीय! उसके गले के टेंटुए का रंग गुलाबी था, उसमें कितनी ताज़गी थी। और उसके गले में सफेद रंग की टाई बांध दीजिए, उसे वर्दी पहनाकर खड़ा कीजिए तो बड़ा शानदार मालूम होता है। मुझे सचमुच उससे लगाव हो गया है। कई बार मैं

१. अराजकतावादी विचारधारा

उसकी तरफ लगातर टकटकी लगाकर देखता रहता हूं। ऐसा मालू
होता है कि वह किसी दार्शनिक विचार में डूबा है, पूरा कांट[1] दिखा
देता है—या कहें कि मोटा-ताजा मुर्गा मालूम होता है। नौकर के लि
यह एकदम ज़रूरी है।'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना मारे खुशी के ताली बजाए बगैर न र
सकीं। पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच ने भी खुले दिल से हंसी में योग दिया
चचा की बातों से उसे गुदगुदी हो रही थी। नस्तास्या पेत्रोव्ना को भ
हंसी आ रही थी, यहां तक कि ज़ेना भी मुस्करा रही थी।

'आपमें कितना मज़ाक और उल्लास है, आप कितनी चटपटी बा
करते हैं, काउन्ट !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना बोली, 'सूक्ष्म से सूक्ष्म औ
व्यंग्यभरी प्रवृत्तियों को भांपने की आपमें अद्भुत प्रतिभा है। इस
बावजूद आप पूरे पांच बरस तक सोसाइटी छोड़कर चले गए। आ
जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति ! आपको तो लेखक होना चाहिए काउन्ट
आप फोनविसीन, ग्रिबोयदोव, गोगोल बन सकते थे...'

'क्यों नहीं, क्यों नहीं', संसार के सबसे अधिक आत्मविश्वा
काउन्ट ने कहा। 'मेरा ख्याल है कि मैं लेखक बन सकता था। पुरा
वक्तों में मैं बेहद दिलचस्प बातें किया करता था। यहां तक कि ए
कॉमेडी के लिए मैंने कुछ दृश्य भी लिखे थे, उसमें कुछ शेर तो सचमु
तारीफ के काबिल थे, लेकिन, कॉमेडी कभी खेली नहीं गई यह।'

'काश ! मैं आपकी रचनाओं को पढ़ सकती ? ऐसी ही चीज़ की त
हमें ज़रूरत है, है न ज़ेना ? हम लोग देश के कामों के वास्ते चंदा इकट्
करने के लिए नाटक करना चाहते हैं, ज़ख्मियों की मदद के लिए काउन
...अगर हमें आपकी यह कॉमेडी मिल जाती...!'

'क्यों नहीं—मैं इसे दुबारा भी लिख सकता हूं लेकिन मुझे सब कु
भूल गया है, सिर्फ मुझे उसके दो या तीन श्लेष याद हैं...(यह कहक

१. प्रसिद्ध जर्मन फिलासफर

काउन्ट ने अपनी उंगलियों को चूमा) और जब मैं विदेश में था तो मैंने हलचल मचा दी थी। मुझे लार्ड बायरन की याद है। हम दोनों दोस्त थे। वियना कांग्रेस में उन्होंने बहुत शानदार मजूरका डान्स किया था।'

'लार्ड बायरन ? हद हो गई चचाजान, आखिर आपका क्या मतलब है ?'

'बिल्कुल लार्ड बायरन ही थे, लेकिन शायद लार्ड बायरन नहीं, कोई और ही आदमी था। अरे हां, याद आया लार्ड बायरन नहीं, वह कोई पोलिश आदमी था। अब मुझे ठीक तरह से याद आया। और वह कैसा अजब आदमी था, उसने सबसे कहा था कि वह काउन्ट है। बाद में पता चला कि वह बावर्ची था लेकिन वह मजूरका डान्स गजब का करता था, आखिर उसकी एक टांग टूट गई। मैंने तो इस बारे में कुछ शेर भी लिखे थे :

मजूरका डांस करने में
हमारे पोलिश दोस्त ने कभी दिल नहीं चुराया।

कविता लम्बी है—बाकी लाइनें मुझे याद नहीं···मेरा ख्याल है कुछ इस तरह थी :

लेकिन जब फर्श पर गिरा तो टूटी उसकी टांग
फिर बेचारे पोल ने, कभी नाचने का नहीं लिया नाम।'

'शायद यही शेर था चचाजान !' मोजग्ल्याकोव ने और भा उत्साह के साथ कहा।

'यही था, या कुछ इसी तरह का शेर था, मेरे दोस्त, शायद यह नहीं था, लेकिन शेर बड़े शानदार थे। उस जमाने की घटनाएं मुझे भूल गई हैं, क्योंकि मैं इतना व्यस्त रहता हूं।'

मारया अलेक्जेन्ड्रोव्ना ने पूछा, 'लेकिन काउन्ट, यह बताइए कि आप वहां सारा वक्त अकेले क्या करते हैं ? मेरे प्यारे प्रिंस ! मैं आपके बारे में अक्सर सोचा करती थी, और आपके बारे में और बातें जानने के लिए

बेचैनी से तड़प रही हूं।'

'क्या करता हूं ? कुल मिलाकर मैं बहुत व्यस्त रहता हूं। कभी मैं आराम करता हूं, और कभी सैर करने के लिए जाता हूं और हर किस्म की कल्पनाएं किया करता हूं।'

'आपकी कल्पनाशक्ति बड़ी तेज होगी चचाजान !'

'बड़ी तेज है मेरे अजीज ! कई बार तो अपनी कल्पनाओं पर मुझे खुद ताज्जुब होता है। जब मैं केंदुयेव में था···अच्छा, क्या तुम कभी केंदुयेव के उप-गवर्नर नहीं थे ?'

'मैं ? चचजान ! ईश्वर के लिए मुझपर रहम कीजिए !' पॉवेल अलेक्जैन्ड्रोविच बोला।

'जरा सोचो तो, मेरे दोस्त ! मैं तुम्हें अभी तक उप-गवर्नर ही समझता आ रहा था और मुझे ताज्जुब हो रहा था कि उप-गवर्नर इतना बदल कैसे गए ? जानते हो, उनका चेहरा बेहद शालीन और प्रतिभाशाली था, वे बड़े काबिल आदमी थे, हर मौके पर कविता लिखा करते थे, वे कुछ-कुछ··· उनके चेहरे का खाका ईंट के बादशाह से मिलता-जुलता था···'

'काउन्ट ! काउन्ट !' मारया अलेक्जैंड्रोव्ना बीच में टोककर बोलीं, 'मैं साफ कहती हूं कि आप अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। आपने पांच साल तक अपने-आपको एकान्त में बन्द रखा, न किसीसे मिले-जुले, न किसीकी बात सुनी। आप बर्बाद हो गए हैं काउण्ट ! आप अपने मुरीदों से पूछकर देखिए, वे यही कहेंगे कि आपने अपने-आपको बर्बाद कर लिया है।'

'क्या सचमुच ?' काउन्ट बोले।

'मैं आपको यकीन दिलाती हूं। मैं आपसे आपकी एक मित्र और बहन की हैसियत से बात कर रही हूं। मैं आपको इसलिए बता रही हूं क्योंकि आप मुझे अच्छे लगते हैं और इसलिए भी क्योंकि अतीत की स्मृतियां मेरे लिए पवित्र हैं। छल-कपट से मुझे भला क्या फायदा हो

सकता है ? नहीं आपको अपनी जिन्दगी बुनियादी तौर से बदल डालनी चाहिए, वरना आप बीमार पड़ जाएंगे, आप अपने-आपको थका लेंगे, आप मर जाएंगे।'

'हे ईश्वर ! क्या मैं सचमुच इतनी जल्दी मर जाऊंगा ?' काउन्ट आतंकित स्वर में बोले, 'और सोचो तो सही, तुम बिलकुल ठीक कह रही हो। मुझे इस बीच बवासीर की बेहद शिकायत रही है—और जब मुझे दौरा पड़ता है तो बड़े विचित्र लक्षण नज़र आते हैं (मैं बाद में विस्तारपूर्वक इन लक्षणों के बारे में बताऊंगा।) सबसे पहले...'

'फिर कभी बताइएगा चचाजान। क्या अब हमें यहां से चलना नहीं चाहिए ?' पॉविल अलैक्ज़ेंड्रोविच बीच में बोल उठा।

'हां हां, फिर कभी सही ! और मुझे अब ख्याल आया है कि शायद यह इतनी दिलचस्प बात नहीं है, लेकिन यह बीमारी है बेहद विचित्र ! कई ब्यौरे तो सुनाने के काबिल हैं। मुझे याद दिलाना मेरे दोस्त, मैं तुम्हें आज शाम को एक केस के बारे में बताऊंगा।'

'लेकिन काउन्ट, आप इलाज करवाने के लिए विदेश क्यों नहीं चले जाते,' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने फिर बीच में टोककर पूछा।

'विदेश ? अरे हां विदेश ! मैं ज़रूर विदेश जाऊंगा। मुझे याद है, जब सन् बीस के करीब विदेश गया था, तब तो वहां बड़ा रंगीन वातावरण था। मैंने एक फ्रेंच वाईकाउन्टेस से करीब-करीब शादी कर ली थी। मैं उसके प्यार में पागल था और अपनी सारी जिन्दगी उस पर न्योछावर करने के लिए तैयार था। लेकिन मेरी बजाय किसी और ने उससे शादी कर ली। और कैसी अजब बात थी—मैं सिर्फ दो घंटे के लिए ही उससे अलग हुआ था कि एक जर्मन बैंकर ने मैदान मार लिया। बाद में वह कुछ दिन पागलखाने में भी रहा था।'

'लेकिन प्यारे प्रिंस ! मैंने विदेश का ज़िक्र इसलिए किया, क्योंकि आपको अपनी सेहत के बारे में संजीदगी से सोचना चाहिए...विदेशों

में इतने शानदार डॉक्टर हैं···और हवा बदलने से भी आपको फायदा पहुंचेगा। आपको दुखानोवो ज़रूर छोड़ देना चाहिए, चाहे कुछ दिनों के लिए सही।'

'बिल्कु–ल। मैंने बहुत दिनों से दुखानोवो छोड़ने का फैसला कर लिया है, जानती हो, मैं ज–ल–चि–कि–त्सा करवाना चाहता हूं।'

'जल-चिकित्सा ?'

'हां, जल-चिकित्सा। मैंने एकबार जल-चिकित्सा का एक कोर्स लिया था। उस वक्त मैं किसी चश्मे के किनारे ठहरा था। वहां मॉस्को की एक महिला भी थी। मुझे उसका नाम तो याद नहीं है, लेकिन वह गजब की काव्यमयी महिला थी—उसकी उम्र सत्तर वर्ष की थी। उसके साथ उसकी एक विधवा बेटी भी थी जो पचास बरस की थी। उसकी एक आंख में मोतियाबिंद था। उसके मुंह से हमेशा शायरी फूटा करती थी। इसके बाद उसके साथ कोई दुर्घटना हो गई, उसने गुस्से में आकर अपनी नौकरानी को मार डाला, उसपर मुकदमा भी चला था। खैर इन्हीं दोनों महिलाओं ने मुझसे जल-चिकित्सा कराने के लिए आग्रह किया था। मैं मानता हूं कि उस वक्त मैं बीमार नहीं था, लेकिन वे मेरे पीछे पड़ गईं : इलाज कराओ ! इलाज कराओ ! इसलिए शिष्टता की खातिर मैंने चश्मे का पानी पीना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, शायद सचमुच ही मुझे फायदा हो। मैंने खूब पानी पिया। मैं पूरा झरना पी गया होऊंगा। जानती हैं, जल-चिकित्सा बड़ी अच्छी चीज़ है, इसने मुझे बड़ा फायदा पहुंचाया—अगर बाद में मैं बीमार न पड़ गया होता तो मैं आप लोगों को यकीन दिलाता हूं कि मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त होता।'

'यह तो बिल्कुल तर्कसंगत नतीजा है चचाजान, लेकिन यह बताइए चचाजान, क्या आपने कभी तर्कशास्त्र पढ़ा है ?'

'हे ईश्वर ! कैसा सवाल है ?' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने सख्त आवाज़ में कहा, जैसे उन्हें भारी सदमा पहुंचा हो।

'मैंने पढ़ा है मेरे दोस्त, लेकिन इस बात को एक ज़माना गुज़र गया है। मैंने जर्मनी में रहकर फिलॉसफी का पूरा कोर्स भी लिया था, लेकिन बाद में सब कुछ भूल गया। मुझे यह मानने में ऐतराज़ नहीं कि तुमने भयंकर बीमारियों की चर्चा करके मुझे इतना डरा दिया है कि मैं सख्त परेशान हूं। लेकिन मैं जल्द ही लौट आऊंगा।'

'अरे आप कहां जा रहे हैं; काउन्ट ?' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने चकित स्वर में पूछा।।

'सिर्फ एक मिनट की इजाज़त चाहता हूं ! मेरे दिमाग में एक नया विचार आया है, उसे लिखने जा रहा हूं—अलविदा—'

'कैसा आदमी है !' पॉवेल अलेक्ज़ेंड्रोविच बोला और ज़ोर से हंसने लगा।

मारया अक्लैज़ेंड्रोव्ना धैर्य खो बैठीं।

'मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आता कि तुम किस बात पर हंस रहे हो,' वे गुस्से से बोलीं, 'एक सम्मानित, आदर के योग्य व्यक्ति पर तुम हंस रहे हो, जो तुम्हारा रिश्तेदार भी है। उनके हर शब्द का मज़ाक उड़ा रहे हो और उनकी देवताओं जैसी सरलता का गलत फायदा उठा रहे हो। मुझे तुम पर शर्म आती है पॉवेल अलैक्ज़ेंड्रोविच। मैं जानना चाहती हूं, काउन्ट में तुम्हें कौन-सी हास्यास्पद बात नज़र आई है, मुझे तो कोई ऐसी बात नज़र नहीं आई।'

'और जब वे एक के बाद दूसरे व्यक्ति की चर्चा करने लगते हैं और ज़बान बहकने लगती है तब ?'

'वह तो उनकी पांच साल की कैद की ज़िन्दगी का नतीज़ा है, जो काउन्ट ने उस नीच औरत की गुलामी में काटी है। वे तरस के काबिल हैं, हंसी के नहीं। उन्होंने मुझ तक को नहीं पहचाना—इसके गवाह तुम खुद हो। भला यह बात विश्वास करने योग्य है ! काउन्ट को निश्चय ही बचाना चाहिए। मेरा सुझाव है कि उन्हें विदेश जाना चाहिए। उस

बाज़ारू औरत से छुटकारा पाने का एकमात्र यही उपाय है।'

'मैं बताऊं क्या किया जाए !—हमें काउन्ट की शादी कर देनी चाहिए, मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना।' पॉवेल अलेक्ज़ेंड्रोविच बोला।

'फिर वही बात ! अब मैं निश्चयपूर्वक कह सकती हूं कि तुम कभी नहीं सुधर सकते श्रीमान् मोज़ग्ल्याकोव।'

'ऐसा नहीं है, मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना, ऐसा नहीं है ! इस बार मैं एकदम सीरियस मूड में हूं। क्यों न काउन्ट की शादी कर दी जाए ! कैसा शानदार ख्याल है ! मैं आपसे पूछता हूं, आखिर इससे उन्हें क्या नुकसान पहुंचेगा ? बल्कि उनकी परिस्थितियों में तो उनके लिए मुक्ति का यही एकमात्र रास्ता है। कानून के मुताबिक वे अभी भी शादी कर सकते हैं। सबसे पहला फायदा उन्हें यह होगा कि उस दुष्टा से उन्हें छुटकारा मिल जाएगा (माफ कीजिए मैं गंदी ज़बान बोल रहा हूं), दूसरी बात और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। मान लो अगर वे किसी विधवा से, किसी अच्छी, नेक, होशियार, दयालु—और सबसे बड़ी बात है—किसी गरीब लड़की से शादी कर लें जो एक बेटी की तरह उनकी देख-भाल करे और जिसे यह महसूस होता रहे कि काउन्ट ने उससे शादी करके उसका उद्धार किया है, अगर उन्हें आत्मीयता जतलाने वाला और निःस्वार्थ भाव से हमेशा पास रहने वाला कोई मिल जाता है तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है ? उस छिनाल की बजाय कोई और लड़की हमेशा उनके पास रहे तो बेहतर है। लेकिन कोई खूबसूरत लड़की होनी चाहिए, चचाजान अभी तक खूबसूरत औरतों को ही पसंद करते हैं। आपने देखा था, वे ज़िनेदा अफनास्यीव्ना को कैसे घूर रहे थे ?'

'लेकिन ऐसी दुल्हिन मिलेगी कहां ?' नस्तास्या पेत्रोव्ना ने, जो बड़े गौर से सारी बातें सुन रही थी, पूछा।

'इस तरह का सवाल तुमने पूछा ? अगर चाहो तो तुम्हीं दुल्हिन क्यों नहीं बन सकतीं ? मैं पूछती हूं कि आखिर तुम क्यों नहीं एक

काउन्ट की बीवी बन सकतीं ? सबसे पहली बात यह कि तुम खूबसूरत हो, दूसरी यह कि तुम विधवा हो, तीसरी यह कि तुम खानदानी औरत हो और चौथी बात यह कि तुम गरीब हो (निश्चय ही तुम पैसे वाली नहीं हो), पांचवीं बात यह कि तुम अक्लमंद औरत हो, इसलिए काउन्ट को चाहोगी, उसकी हर तरह से देखभाल करोगी और उस दूसरी औरत को गर्दन पकड़कर बाहर निकाल दोगी, काउन्ट को विदेश ले जाओगी, उन्हें उबली हुई सूजी और बोंगबोंग मिठाई खिलाओगी, और जब वे इस संसार से चले जाएंगे, निश्चय ही एक बरस में या एक महीने में ही, तब तुम एक काउन्टेस, एक अमीर विधवा बन जाओगी, और अपनी बहादुरी के पुरस्कार-स्वरूप किसी मारक्विस या क्वार्टरमास्टर जेनरल से शादी कर सकोगी। मजे रहेंगे न। क्यों ?'

'ईश्वर मेरी रक्षा करे ! वाह, अगर वे मेरे आगे शादी का प्रस्ताव रखें तो मैं सिर्फ कृतज्ञतावश ही उनसे प्यार करने लगूंगी !' मदाम ज्याबलोवा बोलीं। उनकी काली भावपूर्ण आंखें चमकने लगीं, 'लेकिन यह सब खुराफात है।'

'खुराफात ? तुम चाहती हो कि यह खुराफात न रहकर सचाई बन जाए ? तमीज से मुझे कहकर देखो, और अगर आज ही तुम काउन्ट की मंगेतर न बन गई तो बेशक मेरी उंगली काट देना। चचाजान को फुसलाकर कोई भी काम करवाया जा सकता है। वे लगातार 'हां अरे हां' कहते जाते हैं। आपने खुद सारी बातें सुनी हैं। इससे पहले कि वे हमारे इरादे भांप सकें, हम उनकी शादी कर डालेंगे। हम उन्हें फुसला लेंगे। आखिरकार इसमें उन्हींकी भलाई होगी। नस्तासया पेत्रोव्ना, तुम अपना हुलिया तो संवार लो, मान लो अगर कहीं···'

मोज़ग्ल्याकोव का उत्साह पागलपन की हद तक पहुंच गया। रही मदाम ज्याबलोवा की बात, चूंकि वह गंभीर प्रकृति की औरत थी, इसलिए उसके मुंह में पानी आ गया।

नस्तास्या पेत्रोव्ना ने जवाब दिया, 'तुम्हारे कहे बगैर ही मैं जानती हूं कि आज मेरा हुलिया बिगड़ा हुआ है। मैं खुद भावुक हो गई हूं। बहुत दिनों के बाद मैंने इस सिलसिले में सोचा है। और अब मैं चिड़चिड़ी और बूढ़ी हो गई हूं। क्या मैं सचमुच वार्वाचिन दिखाई देती हूं ?'

इस बीच मारया अलैक्जैंड्रोव्ना अपने चेहरे पर एक बड़ा ही विचित्र भाव लिए बैठी रही थीं। अगर मैं कहूं कि वे पावेल अलैक्जैंड्रोविच के विलक्षण सुझाव से आतंकित हो गई थीं, जैसे उन्हें कोई भारी सदमा पहुंचा हो, तो यह गलत नहीं होगा। आखिरकार वे सचेत हुईं।

'इसमें शक नहीं कि सुझाव बहुत अच्छा है, लेकिन सिवा खुराफात के इसमें कुछ नहीं, बिल्कुल बेमतलब की बातें हैं,' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना कठोर स्वर में बोलीं।

'लेकिन खुराफात किसलिए है प्यारी मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ?'

'कई कारणों से; सबसे बड़ी बात तो यह है कि तुम मेरे घर में हो और काउन्ट मेरे मेहमान हैं। मैं किसीको अपने घर की बेइज्ज़ती करने की इजाज़त नहीं दे सकती। पॉवेल अलैक्ज़ैंड्रोविच, मैं तुम्हारे शब्दों को एक मज़ाक से ज्यादा कुछ नहीं समझती, लेकिन लो, खुद काउन्ट आ गए !'

'लो मैं आ गया !' काउन्ट ने कमरे में दाखिल होते हुए कहा, 'आज मेरे दिमाग में कितने अजब ख्याल आए हैं—तुम्हें यकीन नहीं होगा, कई वक्त ऐसे आते हैं कि मेरे दिमाग में एक भी ख्याल नहीं आता। मैं दिन-भर सिर्फ बैठा रहता हूं।'

'चचाजान, शायद गिरने की वजह से ऐसा हुआ है। गिरने से आपकी नसें हिल गई हैं और अब···'

'मेरे दोस्त, मैं खुद यही समझता हूं और इस अनुभव को फायदेमन्द समझता हूं। इसलिए मैंने अपने फ्योफिल को माफ कर देने का फैसला

किया है। और मैं तुम्हें बताऊं—मुझे यकीन है कि उसने मुझे मरने की कोशिश नहीं की थी। तुम्हारा क्या ख्याल है ? इसके अलावा उसे हाल ही में सजा मिल चुकी है, जब मैंने उसकी दाढ़ी मुड़वा दी थी।'

'उसकी दाढ़ी, चचाजान ? लेकिन उसकी दाढ़ी तो जर्मनी के नक्शे जितनी बड़ी है न ?'

'बिल्कुल जर्मनी की तरह। मेरे दोस्त, तुम्हारे नतीजे एकदम सही निकलते हैं। लेकिन यह गलत है। जरा सोचो तो सही ! अचानक मुझे एक सूचीपत्र मिल गया। कोचवानों, भद्रपुरुषों की दाढ़ियों-मूछों, गलमुच्छों वगैरह का स्टॉक विदेश से आ गया था। सबकी सब बढ़िया क्वालिटी की थीं, और दाम वाजिब थे। मैंने सोचा, क्यों न एक दाढ़ी मंगवाकर देख ली जाए कैसी है। सो मैंने कोचवान के लिए एक दाढ़ी मंगवाई। सचमुच वह बड़ी शानदार दाढ़ी थी। लेकिन मालूम होता था कि फ्योफिल की अपनी दाढ़ी उस दाढ़ी से भी दुगनी बड़ी थी। अब यह सवाल उठना स्वाभाविक था कि क्या मैं उसकी असली दाढ़ी मुंड़वा दूं या बनावटी दाढ़ी लौटा दूं ? मैंने बहुत सोचने के बाद यह तय किया कि उसके लिए बनावटी दाढ़ी ही बेहतर रहेगी।'

'शायद आप कला को प्रकृति से ऊंचा समझते हैं चचाजान।'

'बिल्कुल यही बात है ! लेकिन जब उसकी दाढ़ी मूंड दी गई तो उसे कितना दुःख हुआ। ऐसा मालूम होता था, जैसे वह अपनी दाढ़ी से नहीं बल्कि सारी जिन्दगी से विदा ले रहा है।···लेकिन क्या चलने का वक्त नहीं हो गया, मेरे अजीज ?'

'मैं तैयार हूं चचाजान।'

'मुझे आपपर भरोसा है कि आप सिर्फ गवर्नर से मिलने जा रहे हैं' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना बोलीं, 'आज दिनभर के लिए आप मेरे हैं काउन्ट, मेरे परिवार के मेहमान हैं। मैं यहां के समाज की बुराई नहीं करना चाहती। शायद आप अन्ना निकोलाईव्ना के यहां ठहरना ज्यादा पसंद

करेंगे—मुझे दखल देने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा मुझे यकीन है कि कौन सही है यह वक्त ही बताएगा। सिर्फ एक बात याद रखिएगा। मैं आपकी मेज़बान, आपकी बहन, धर्ममाता, और सारे दिन के लिए आपकी तीमारदार भी हूं। सच पूछिए तो आपकी खातिर मेरा दिल आशंका से कांप रहा है। आप नहीं जानते, न ही इन लोगों को पूरी तरह से जान सकते हैं। वक्त ही सब कुछ बताएगा।'

'मुझपर भरोसा रखें मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना। देख लीजिएगा, मैं अपना वचन निभाऊंगा।' मोज़ग्ल्याकोव ने कहा।

'तुम जैसे सिरफिरे आदमी का भरोसा करूं? क्या तुमपर भरोसा किया जा सकता है? मैं खाने के वक्त आपका इन्तज़ार करूंगी। हम लोग जल्दी ही खाना खा लेते हैं। ओह मुझे सख्त अफसोस है कि इस मौके पर मेरे पति देहात में हैं। आपसे मिलकर उन्हें कितनी खुशी होती! उनके दिल में आपके लिए गहरा आदरभाव और हार्दिक स्नेह है।'

'तुम्हारे पति? क्या तुम्हारे पति भी हैं?' काउन्ट ने पूछा।

'हे ईश्वर! आप कितने भुलक्कड़ हैं काउन्ट! आप अतीत को बिल्कुल, बिल्कुल भूल गए हैं। क्या सच आप मेरे पति अफानासी मातविच को भूल गए हैं? वे आजकल देहात में हैं, लेकिन आप पहले कई बार मिल चुके हैं। अब तो आपको अफानासी मातविच की याद आ गई होगी!'

'अफानासी मातविच देहात में हैं, ज़रा सोचो, कैसी मज़ेदार बात है! तो तुम्हारा पति भी है! कैसी अजब बात है! बिल्कुल कॉमेडी की तरह—पति घर आता है लेकिन बीवी···ओह मैं फिर भूल गया—बीवी कहां चली गई थी, मुझे याद नहीं आ रहा, लेकिन मुझे यह मालूम है कि वह कॉमेडी बड़ी अजब थी।'

'पति घर आया लेकिन बीवी भाग गई थी, चचाजान,' मोज़ग्ल्या-

कोव ने याद दिलाई।

'अरे हां, यही हुआ था ! निश्चय ही यही बात थी, धन्यवाद मेरे दोस्त, बिलकुल यही हुआ था।···बीवी भाग गई थी···खूबसूरत ! खूबसूरत ! इसकी तुक भी सही बैठती है ! तुम इन बातों में बड़े होशियार हो, मेरे दोस्त ! मैं जानता था कि बीवी ने ऐसा ही कोई काम किया था—किसीके साथ भाग गई थी ! लेकिन मैं भूल गया हूं कि हम क्या बात कर रहे थे। अरे हां, हम चलें दोस्त, अलविदा श्रीमतीजी, अलविदा सुन्दर कुमारी जी !' काउन्ट ने ज़ेना की तरफ मुड़कर अपनी उंगलियों को चूमा।

'डिनर, काउन्ट डिनर ! जल्दी लौटना, मत भूलना काउन्ट !'—मारया आलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना पीछे से चिल्लाई।

५

काउन्ट को बाहर पहुंचा आने के बाद मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने कहा, 'नस्तास्या पेत्रोव्ना, ज़रा रसोई में चली जाओ। मुझे डर है कि बदमाश निकिता खाने का सत्यानाश कर देगा। मुझे पूरा यकीन है कि वह नशे में धुत होगा।'

नस्तास्या पेत्रोव्ना ने आज्ञा का पालन किया। जाने से पहले उसने एक संदिग्ध नज़र मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना के चेहरे पर डाली और देखा कि वे असाधारण रूप से उत्तेजित थीं। बदमाश निकिता को देखने की बजाय नस्तास्या पेत्रोव्ना, बालरूम में चली गई और अपने कमरे की गैलरी में से होकर एक छोटे अंधेरे कमरे में पहुंची जहां बहुत-

से ट्रंक रखे हुए थे, दीवारों पर कपड़े लटके थे और धुले हुए कपड़ों की गठरियां रखी थीं। वह पंजों के बल बन्द दरवाज़े के पास चली गई और सांस रोककर छेद में से झांकने लगी और कान लगाकर बातें सुनने लगी। यह दरवाज़ा और दो दरवाज़ों की तरह उस कमरे में खुलता था जिसमें ज़ेना और उसकी मां बैठी थीं—इस दरवाज़े में हमेशा ताला लगा रहता था।

मारया अलेक्जेन्ड्रोव्ना पेत्रोव्ना को एक मक्कार लेकिन खरदिमाग औरत समझती थीं। नस्तास्या पेत्रोव्ना छिपकर उनकी बातें सुन सकती है, यह ख्याल कई बार उनके दिमाग में आया तो था लेकिन इस वक्त वे इतनी उत्तेजित थीं और अपने ख्यालों में इतनी खोई हुई थीं कि वे सावधानी बरतना भूल गईं। वे आरामकुर्सी पर बैठी अर्थपूर्ण दृष्टि से ज़ेना की तरफ देख रही थीं। ज़ेना ने इस दृष्टि को महसूस किया और फौरन आशंकित हो गई।

'ज़ेना ?'

ज़ेना ने अपना पीला चेहरा उधर घुमाया और अपनी काली संजीदा आंखें ऊपर उठाईं।

'मैं तुमसे एक बहुत ज़्यादा ज़रूरी बात करना चाहती हूं ज़ेना !'

ज़ेना अपनी मां के बिलकुल सामने आ गई। बांहें बांधकर वह इन्तज़ार करने लगी। उसके चेहरे पर खीझ और नफरत थी जिसे वह छिपाने की कोशिश कर रही थी।

'मैं तुमसे पूछना चाहती हूं ज़ेना, आज उस मोज़ग्ल्याकोव के बारे में तुमने क्या सोचा ?"

'उसके बारे में मेरी राय तो तुम्हें बहुत दिनों से मालूम है,' ज़ेना ने हिचकिचाहट के साथ जवाब दिया।

'हां मेरी बच्ची, लेकिन मालूम होता है कि पिछले कुछ दिनों से उसका आग्रह कुछ ज़्यादा बढ़ गया है और वह तुम्हारे पीछे पड़ा रहता

है।'

'उसका कहना है कि वह मुझसे प्यार करता है, इसलिए उसके आग्रह को माफ किया जा सकता है।'

'अजब बात है, पहले तो तुम उसे माफ करने के लिए कभी तैयार नहीं रहती थीं, बल्कि जब भी मैं उसका जिक्र करती थी, तो तुम उसकी बुराई करती थीं।'

'उससे भी अजब बात तो यह है कि तुम जो हमेशा उसका पक्ष लेती रही हो और जिद करती रही हो कि मैं उससे शादी कर लूं—तुम ही उसकी बुराई करने में आज पहल कर रही हो!'

'मान लिया! मैं इन्कार नहीं करती जेना। मैं सचमुच चाहती थी कि तुम मोजग्ल्याकोव से शादी कर लो। तुम्हारा लगातार दुःखी रहना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता था। मैं तुम्हारे दिल के दर्द को अच्छी तरह समझ सकती हूं (तुम मेरे बारे में जो चाहो सोचो), इसी वजह से रात को भी मैं जागती रहती हूं। अन्त में मुझे यकीन हो गया कि तुम्हारी जिन्दगी में कोई बुनियादी तबदीली होनी चाहिए तभी तुम बच सकती हो! और यह तबदीली शादी ही हो सकती है। हम लोग पैसे वाले नहीं हैं, मिसाल के लिए हम विदेश नहीं जा सकते। यहां के बेवकूफ लोग हैरान हैं कि तुम तेईस बरस की हो गई हो, अभी तक तुम्हारी शादी नहीं हुई और लोग इस बारे में तरह-तरह की कहानियां गढ़ा करते हैं। क्या उनका खयाल है कि मैं यहां के प्रिवी-कांउसलर से या अटर्नी इवान इवानोविच से तुम्हारी शादी कर दूंगी? क्या यहां तुम्हारा पति बनने के काबिल कोई आदमी है? मोजग्ल्याकोव खरदिमाग जरूर है लेकिन वह बाकी लोगों से कहीं बेहतर है। उसका खानदान अच्छा है, उसकी बड़ी पहुंच है, और उसके पास डेढ़ सौ भूमिदास हैं। जोखिम उठाने और किसी तरह जिन्दगी में गुजारा करने से तो कहीं अच्छा है कि तुम उससे शादी कर लो। इसलिए मैंने उसकी तरफ ध्यान दिया था। लेकिन मैं

कसम खाकर कहती हूं कि मेरे मन में उसके लिए अच्छा स्नेह कभी भी नहीं था। उस सर्वशक्तिमान ईश्वर ने ही मुझे बेचारगी सौंपी है, अगर ईश्वर इस समय हमारी मदद करे—कितना अच्छा हो अगर तुमने भी कोई वचन न दिया हो। तुमने आज तक कोई पक्की बात भी नहीं की रेना?'

'इस प्रकार की क्या जरूरत है, अब तो शब्दों में तुम बातें बना कर सकती हो?' रेना ने चिढ़कर कहा।

'क्यों रेना? अपनी मां के लिए तुम ऐसा शब्द इस्तेमाल कर सकती हो? लेकिन मैं क्या कहने जा रही थी? तुमने तो बहुत दिनों से अपनी मां की बातों पर विश्वास करना छोड़ दिया है। तुम मुझे अपनी मां की बजाय अपना दुश्मन समझती हो।'

'इससे क्या हुआ मां! क्या अब हम दोनों लड़ाई पर उतरेंगी? जैसे हम एक-दूसरे को नहीं समझतीं! मेरा ख्याल है कि समझने का वक्त अब आया है।'

'तुम मेरी इकलौती बच्ची हो बच्ची, तुम्हें विश्वास नहीं कि तुम्हारी जिन्दगी बनाने के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं।'

रेना ने मचलकर और मुंह से भरी निगाह मां पर डाली।

'मेरा ख्याल है कि मेरी जिन्दगी बनाने के लिए, तुम कारवर्ट से मेरी शादी करना चाहती हो, क्यों?' रेना ने एक अजब मुस्कराहट के साथ कहा।

'मैंने इस बारे में तुमसे एक भी शब्द नहीं कहा, लेकिन चूंकि तुमने यह जिक्र शुरू किया है, तो अगर तुम कारवर्ट से शादी कर भी लो तो यह दुर्भाग्य नाकाबिल नहीं होगा, बल्कि तुम्हें सुख ही मिलेगा।'

'और मैं इसे एकदम बेहूदी बात समझती हूं!' रेना ने आवेश से कहा, 'वाहियात—मैं कहती हूं! और मां, मैं यह भी समझती हूं कि तुममें सबसे ज्यादा लालसा की प्रेरणा है, तुम पूरी स्वार्थिनी हो।

यहां के लोग भी तुम्हें यही कहते हैं। तुम्हारे दिमाग में क... और भरी रहती हैं, वे खब्तें चाहे कितनी ही बेहूदी, नामुमकिन और हास्यास्पद क्यों न हों। जब काउण्ट यहां बैठे थे तो मैं फौरन भांप गई थी कि तुम्हारे दिमाग में काउण्ट है। जब मोजग्ल्याकोव ने बेवकूफों की तरह कहा कि बूढ़े को शादी कर लेनी चाहिए तो तुम्हारे चेहरे से मैं जान गई थी कि तुम क्या सोच रही हो—मैं कसम खाकर बता सकती थी कि तुम यही बात सोच रही हो। और अब तुमने खुद यही बात मुझे बता भी दी है। तुम्हारी खब्तों से अब मेरा मन तंग आ गया है—मुझे अब वे असह्य लगती हैं। मैं तुमसे यही कहूंगी कि इस बारे में मुझसे एक भी शब्द न कहना! सुना मां—एक शब्द भी नहीं—मैं चाहती हूं, तुम इस बात को याद रखो!'

गुस्से के मारे जेना का गला रुंध गया था।

'तुम निरी बच्ची हो जेना, गुस्सैल, बीमार बच्ची।' मार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने भावुक, करुणा भरे स्वर में जवाब दिया। 'तुम मेरे सामने गुस्ताखी से बोलती हो, मेरी बेइज्जती करती हो। मुझे रोज जैसी बातें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं, उन्हें कोई और मां बर्दाश्त नहीं करेगी। लेकिन तुम परेशान हो, बीमार हो, दुखी हो और मैं एक मां हूं और सबसे पहले मैं एक ईसाई हूं। बर्दाश्त करना और माफ करना मेरा फर्ज है। लेकिन एक बात है जेना—अगर मैं सचमुच इस रिश्ते की बात सोचती हूं तो तुम वाहियात बात क्यों समझती हो? मेरा ख्याल है कि मोजग्ल्याकोव ने इससे ज्यादा अक्लमंदी की बात कभी नहीं की, जब उसने बताया कि काउण्ट को शादी की ही जरूरत है—लेकिन उस फूहड़ नस्तास्या से हरगिज नहीं! इसमें तो मोजग्ल्याकोव की बेहद ज्यादती थी! उसने सारा मामला चौपट कर दिया।'

'सुनो मां, मुझे साफ-साफ बताओ—यह सिर्फ कोरी बकवास है, सिर्फ तुम्हारी उत्सुकता है या सचमुच तुम्हारा यही इरादा है?'

'मैं तुमसे सिर्फ यही पूछती हूं कि तुम्हें इसमें कौन-सी बेहूदगी नजर आती है।'

ज़ेना ने बेसब्री से अपना पैर फर्श पर पटकते हुए कहा, 'ईश्वर के लिए !···मैंने कौन-सा पाप किया है, जो मेरी किस्मत में ऐसा लिखा है ? चूंकि तुम खुद कुछ नहीं समझती, इसलिए मैं तुम्हें समझाऊंगी। बाकी बेहूदगियों को छोड़ दो—बूढ़े के दिमाग की कमजोरी का फायदा उठकर उससे शादी करना, एक अपाहिज से, उसका पैसा हाथियाने के लिए—और फिर रोज़, हर दम उसकी मौत की इच्छा करना, मेरे ख्याल में बेहूदगी ही नहीं, बल्कि कमीनापन है, इतना कमीनापन है कि ऐसे ख्यालों के लिए मैं हरगिज़ तुम्हें बधाई नहीं दे सकती मां।'

एक मिनट के लिए खामोशी छाई रही।

सहसा मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने पूछा, 'ज़ेना ! क्या तुम भूल गई हो, दो बरस पहले क्या हुआ था ?'

ज़ेना चौंक पड़ी।

'मां ! तुमने वचन दिया था कि इस बात की याद कभी नहीं दिलाओगी।' ज़ेना ने सख्ती से कहा।

'और अब मेरी बच्ची, मैं मिन्नत करती हूं कि जो वचन मैंने आज तक नहीं तोड़ा, उसे सिर्फ एक बार तोड़ने की इजाज़त दी जाए, ज़ेना ! वक्त आ गया है कि हम दोनों बैठकर साफ-साफ बातें करें। दो साल की खामोशी बड़ी भयंकर रही है, अब इस तरह गुज़ारा नहीं चल सकता। मैं घुटने टेककर तुमसे बात करने की इजाज़त मांगने के लिए तैयार हूं। ओह ज़ेना, तुम्हारी मां घुटनों के बल तुम्हारे आगे विनती कर रही है। और मैं तुम्हें वचन देती हूं, एक दुःखी, प्रेममयी मां वचन देती है कि भविष्य में कभी, चाहे कैसी परिस्थितियां हों, अपनी जान बचाने के लिए भी मैं इस प्रसंग में एक शब्द नहीं बोलूंगी। यह आखिरी बार है और इस वक्त इसकी चर्चा करना एकदम ज़रूरी है।'

मारया अलैक्जेंड्रोव्ना को यकीन था कि उसकी इस बात का ज़रूर असर होगा।

'कहती जाओ,' ज़ेना ने कहा। उसका चेहरा पहले से भी ज्यादा पीला पड़ गया था।

'धन्यवाद ज़ेना! दो बरस पहले एक टीचर बेचारे मित्या के पास आया करता था, तुम्हारे छोटे भाई मित्या के पास जो अब इस संसार में नहीं है।'

'तुमने इतनी संजीदगी से क्यों बात शुरू की मां? आखिर इस व्याख्यान की और इन दुखभरे ब्यौरों की क्या ज़रूरत है, जिनसे हम दोनों अच्छी तरह परिचित हैं?' ज़ेना ने कटुता और नफरत से बीच में टोककर कहा।

'इसलिए मेरी बच्ची कि मुझे, तुम्हारी मां को, अब तुम्हारे सामने अपनी सफाई देने के लिए मजबूर होना पड़ा है। इसलिए क्योंकि अब मैं तुम्हारे सामने सारी बातों को नये दृष्टिकोण से पेश करना चाहती हूं। तुम उन्हें गलत दृष्टिकोण से देखती रही हो। और इसलिए भी क्योंकि इन सारी बातों से मैं जो नतीजे निकालना चाहती हूं, मैं चाहती हूं कि तुम उन्हें अच्छी तरह से समझो। यह मत सोचो, मेरी बच्ची कि मैं तुम्हारी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना चाहती हूं। नहीं ज़ेना, तुम देखोगी कि मैं एक सच्ची मां हूं और शायद तुम्हारी आंखों में आंसू आ जाएं और तुम खुद ही मेरे कदमों में आकर गिड़गिड़ाओगी, एक कमीनी औरत के कदमों में—जैसा कि तुमने अभी मुझे पुकारा है—और जिस चीज़ को तुम अभी तक घमण्ड से ठुकराती आई हो, उसीके लिए गिड़-गिड़ाओगी। और ज़ेना, इसलिए मैं सारी बातें शुरू से करना चाहती हूं, अगर मुझे ऐसा न करने दिया गया तो मैं खामोश हो जाऊंगी।'

'कहती जाओ!' ज़ेना ने फिर कहा। वह समस्त मन से अपनी मां के व्याख्यान देने के मोह को कोस रही थी।

'मैं अपनी बात जारी रखती हूं जेना ! छोटे शहर के स्कूल के इस टीचर का, जो अभी लड़का ही था, तुमपर असर पड़ा—कैसे पड़ा इस बात को मैं कभी नहीं समझ सकी। मुझे तुम्हारी अक्ल, तुम्हारे स्वाभिमान पर भरोसा है और सबसे ज्यादा उसकी मामूली हैसियत (हम साफ-साफ बात करेंगे न ?) को देखते हुए मैं किसी किस्म का शक करने को तैयार नहीं थी। लेकिन अचानक तुमने आकर मुझसे कहा कि तुम उससे शादी करना चाहती हो। ओह, ज़ेना, मेरे कलेजे में जैसे किसीने छुरा भोंक दिया। मैं चीखी, चिल्लाई और बेहोश हो गई। लेकिन···तुम्हें ये सब बातें याद हैं। यह स्वाभाविक ही था कि मैंने तुम्हारे ऊपर अपना अधिकार इस्तेमाल करना ठीक समझा, जिस अधिकार को तुमने अत्याचार कहा था। जरा सोचो तो सही—एक लड़का, जिसका बाप क्लर्क है, जिसे महीने में बारह रूबल तनख्वाह मिलती है, रीडर्ज लाइब्रेरी ने जिसपर तरस करके एक सस्ती-सी बेढब कविता छाप दी है, जिसे उस कम्बख्त शेक्सपियर की बातें करने के सिवा कुछ नहीं आता, क्या ऐसा लड़का तुम्हारा पति बन सकता था ? ज़िनेदा मास्कालीवा का पति ? यह सब फ्लोरियन और उसके गड़रियों के लिए तो सब ठीक है, माफ करना ज़ेना, लेकिन इस घटना की याद आते ही मुझे गुस्सा आ जाता है। मैंने उस लड़के को नापसंद कर दिया, लेकिन दुनिया की कोई ताकत तुम्हें नहीं रोक सकी। तुम्हारे पिता सिर्फ मूर्खों की तरह आंख झपकाते रहे, उनकी समझ में यह तक नहीं आया कि मैं उन्हें क्या कह रही हूं। तुमने उस लड़के के साथ अपना ताल्लुक जारी रखा, यहां तक कि तुम उससे मिलती भी रहीं और सबसे बुरी बात तो यह है कि तुमने उसके साथ पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया। शहर में अफवाहें फैलनी शुरू हो गईं। लोग बड़े अपमानपूर्ण इशारों से मुझे यह बात जतलाने लगे—खुले आम इसकी चर्चा होने लगी, और लोगों को खुशी भी हुई। अचानक मेरी भविष्यवाणी सच निकली; तुम दोनों का किसी बात पर झगड़ा हो

गया। उसन साबित कर दिया कि वह तुम्हारे योग्य नहीं है। उस लड़के ने (मैं उसे हरगिज़ आदमी नहीं कह सकती) तुम्हें धमकी दी कि वह तुम्हारे खतों को सारे शहर के लोगों को दिखाएगा। इस धमकी से तुम्हें बड़ा गुस्सा आया और तुमने उसके कान पर एक मुक्का मारा। हां ज़ेना, मुझे यह बात भी मालूम है, मैं सब कुछ जानती हूं। उसी दिन उस बद-किस्मत ने तुम्हारा एक खत जोशिन को दिखाया, जो पक्का बदमाश है, और एक घंटे के बाद वह खत नतालिया दमित्रीव्ना के हाथों में चला गया जो मेरी जानी दुश्मन है। उसी शाम को उस पागल ने, जिसे अपने किए पर पश्चात्ताप हो रहा था, ज़हर खाने का हास्यास्पद प्रयत्न किया। संक्षेप में कहा जा सकता है कि वह बदनामी बड़ी भयंकर थी। फूहड़ नस्तास्या डर के मारे यह खबर सुनाने के लिए मेरे पास दौड़ी आई। तुम्हारा खत नतालिया दमित्रीव्ना के पास एक घंटे तक रहा था, दो घंटे में सारे शहर में तुम्हारी बदनामी फैल जाती। मैंने अपने-आपको संभाला, मैं बेहोश नहीं हुई, लेकिन ज़ेना! तुमने मेरे दिल को कितनी चोट पहुंचाई थी। उस बेहया राक्षसी औरत नस्तास्या ने वह खत वापस लाने के बदले में दो सौ चांदी के रूबल मांगे। मैं अपने स्लीपर पहने बर्फ में दौड़ती हुई यहूदी बूमस्टाईन के यहां गई और अपना नेकलेस गिरवी रख आई जो मेरी साध्वी मां की एकमात्र निशानी थी। दो घंटे के बाद वह खत मेरे हाथों में आ गया। नस्तास्या खत चुरा लाई थी। उसने गहने रखने की डिबिया तोड़कर वह खत निकाला था। तुम्हारी इज्ज़त बच गई और खत का सबूत किसीके पास न रहा। लेकिन उस दिन मुझे तुम्हारी वजह से कितनी परेशानी उठानी पड़ी थी! अगले दिन जिन्दगी में पहली बार मुझे अपने सिर में सफेद बाल नजर आए। ज़ेना! अब तुम उस लड़के की हरकत को अच्छी तरह समझ सकती हो। शायद तुम भी एक तिरछी मुस्कान के साथ इस बात को मानोगी कि अपनी किस्मत को उसके हवाले करना निरी मूर्खता होती। लेकिन जब से तुमने ये दुःख सहे हैं,

तुम लगातार अपने-आपको सताती रही हो मेरी बच्ची। तुम उसे भूल नहीं पाईं, उसको नहीं क्योंकि वह तो कभी भी तुम्हारे योग्य नहीं था, बल्कि अपने बीते हुए सुख की याद को तुम नहीं भूल पाईं। यह बद-किस्मत लड़का अब मृत्युशय्या पर पड़ा है। लोगों का कहना है कि उसे तपेदिक है और तुम—तुम निरी देवी हो—जब तक वह ज़िंदा है तुम शादी नहीं करोगी, क्योंकि तुम उसके दिल को तकलीफ नहीं पहुंचाना चाहतीं। क्योंकि उसे अब भी ईर्ष्या होती है, हालांकि मुझे यकीन है कि उसने कभी तुझसे सच्चा, ऊंचे ढंग का प्यार नहीं किया। मुझे मालूम है, जब उसे पता चला कि मोज़ग्ल्याकोव तुम्हें चाहता है तो उसने जासूसी की, लोगों को पता लगाने के लिए भेजा और कइयों ने इस बारे में पूछताछ भी की। तुम उसके दिल को चोट नहीं पहुंचाना चाहतीं। मेरी बच्ची, मैंने तुम्हारे मन की बात बूझ ली है या नहीं ? ईश्वर जानता है, मैंने अपने तकिए को कैसे कड़वे आंसुओं से तर किया है।...'

'बस, इतना ही काफी है मां !' ज़ेना ने बीच में टोककर खिन्न स्वर में कहा, 'तुम्हारे तकिए की किसे परवाह है ? क्या तुम मक्कारी और व्याख्यान के बगैर नहीं रह सकतीं ?' ज़ेना ने नफरत से कहा।

'तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं है ज़ेना ! मेरी तरफ दुश्मन की तरह मत देखो मेरी बच्ची ! इन दो सालों में मेरी आंखें सूखी नहीं रही हैं, लेकिन मैंने अपने आंसुओं को तुमसे छिपाए रखा और मैं कसम खाकर कहती हूं कि इस बीच मैं खुद भी बहुत बदल गई हूं। तुम्हारी भावनाओं को तो मैं बहुत पहले से समझती थी, लेकिन मैं कसम खाकर कहती हूं कि तुम्हें कितना दुःख है, इसका एहसास मुझे अभी हुआ है। क्या इस प्यार को सिर्फ रोमांस समझने में मैंने कोई गलती की? यह सब उस कम्बख्त शेक्सपियर की करतूत है जो हर जगह, जहां उसको ज़रूरत न हो, अपनी टांग अड़ाया करता है। कौन मां मुझे चौकन्ना रहने के लिए, कदम

उठाने के लिए दोषी कह सकती है, मुझे सख्त कह सकती है? लेकिन अब, दो साल तक तुम्हारी मानसिक यंत्रणा देखने के बाद मैं तुम्हारी भावनाओं की कद्र करने लगी हूं। यकीन करो तुम भी अपने को उतनी अच्छी तरह नहीं समझतीं जितना मैं समझती हूं। मुझे यकीन है कि तुम्हें उस लड़के से नहीं बल्कि अपने सुनहरी सपनों से, अपनी बीती खुशी से, अपने ऊंचे आदर्शों से प्यार है। मैंने कभी जिन्दगी में, शायद तुमसे भी ज्यादा तीव्रता से प्यार किया है। मैंने भी दुःख झेले हैं—मेरे सामने भी ऊंचे आदर्श रहे हैं। अगर मैं सोचती हूं कि सिर्फ काउन्ट से शादी करके ही तुम अपने को बचा सकती हो और अपनी वर्तमान परिस्थितियों से निकलने के लिए तुम्हारे सामने सिर्फ यही एक रास्ता है, तो तुम्हें मुझे दोष नहीं देना चाहिए।'

ज़ेना चकित भाव से इस लंबे व्याख्यान को सुन रही थी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि बिना किसी खास कारण के मां कभी इस लहजे में नहीं बोल सकती। लेकिन इस प्रत्याशित परिणाम से वह स्तब्ध रह गई।

'तुम्हारे कहने का मतलब है कि तुम सचमुच मेरी शादी काउन्ट से करना चाहती हो?' ज़ेना ने चकित स्वर में पूछा। वह आतंकित भाव से अपनी मां की तरफ देख रही थी। 'तो यह सिर्फ तुम्हारे दिवास्वप्न और ख्याली पुलाव नहीं हैं, बल्कि तुम्हारा पक्का इरादा है। मेरा अनुमान सही निकला न! लेकिन—लेकिन इस शादी से मेरी रक्षा कैसे होगी, मेरी वर्तमान परिस्थितियों में यह जरूरी किसलिए है? और···और इसका और उन गुजरी बातों का जो तुमने अभी कही हैं, भला आपस में क्या सम्बन्ध है? तुम्हें समझना मेरे लिए असम्भव है मां!'

'मुझे हैरानी है कि तुम इतना भी नहीं समझ सकीं!' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ज़ेना की उत्तेजना से प्रभावित होकर बोलीं, 'सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस शादी से तुम एक दूसरी ही दुनिया में पहुंच

जाओगी। तुम्हें हमेशा के लिए इस नर्क से छुटकारा मिल जाएगा—यहां तुम्हारे लिए खौफनाक स्मृतियों के सिवा क्या रखा है ! यहां किसी भी घर में तुम्हारा स्वागत नहीं किया जाता। यहां तुम्हारा कोई दोस्त नहीं। यहां तुम्हारी इतनी बदनामी हुई है और यहां की बातूनी औरतें तुम्हारी खूबसूरती से जलती हैं। तुम चाहो तो वसंत के मौसम में विदेश जा सकती हो, इटली, स्विट्जरलैंड—स्पेन, ज़ेना, जहां अल्हाम्ब्रा है, जहां ग्वादालकिवीर है। यहां की गंदी नदी की बजाय, जिसका नाम इतना अश्लील है—'

'लेकिन ज़रा रुको मां, तुम तो इस तरह बात कर रही हो जैसे सचमुच मेरी शादी हो चुकी हो या काउन्ट मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रख ही चुके हों···'

'उसकी चिन्ता न करो मेरी प्यारी। मैं जानती हूं कि मैं क्या कह रही हूं। लेकिन मुझे अपनी बात जारी रखने दो। मैंने तुम्हारे आगे पहली दलील दी है, अब सुनो दूसरी दलील। मैं जानती हूं मेरी बच्ची कि मोज़ग्ल्याकोव से शादी करना तुम्हें कितना बुरा लगेगा।'

'यह बताने की तुम्हें कोई ज़रूरत नहीं कि मैं उससे हरगिज़ शादी नहीं करूंगी। यह मैं खुद जानती हूं।' ज़ेना ने क्षोभ से जवाब दिया, उसकी आंखों से चिनगारियां फूट रही थीं।

'काश, तुम जानतीं कि मुझे तुम्हारी नफरत का पता है! ईश्वर की वेदी के सामने ऐसे व्यक्ति से प्यार करने का वचन देना, जिससे कभी प्यार नहीं किया जा सकता, बड़ी भयंकर बात है ! उस आदमी से शादी करना, जिसके लिए मन में कभी आदर की भावना न हो सके ! और वह तुमसे तुम्हारे प्यार की मांग करता है, इसीलिए तुमसे शादी करना चाहता है। जिस तरह वह तुम्हारी तरफ देखता है, उससे मैं सब कुछ भांप सकती हूं। शादी करके हर वक्त प्यार का अभिनय करना कितना भयंकर होता है ! मुझे खुद पच्चीस बरसों में इस बात का तजुर्बा हो

चुका है। तुम्हारे पिता ने मेरी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी। मैं कहूंगी कि उन्होंने मेरी जवानी खत्म कर दी है, तुमने कितनी ही बार मेरे आंसू देखे हैं!'

'पापा दूर देहात में है, मेहरबानी करके उनका ज़िक्र मत करो।' ज़ेना ने जवाब दिया।

'तुम हमेशा उनकी वकालत करती हो, यह मुझे मालूम है। ओह ज़ेना, जब मैंने सिर्फ फायदे के लिए मोज़ग्ल्याकोव से तुम्हारी शादी करने का फैसला किया था तो मेरा दिल किस तरह बैठने लगा था। लेकिन काउन्ट के साथ अभिनय करने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ेगी। कहना न होगा कि तुम उनसे···उस तरह का प्यार नहीं कर सकती; खैर, जो भी हो, काउन्ट वैसे भी उस किस्म के प्यार की मांग करने में असमर्थ हैं।'

'हे ईश्वर! कैसी बेबूदी बात है! मैं तुम्हें बता सकती हूं कि तुम शुरू से ही गलती कर रही हो। तो सुन लो, मैं किसी भी अज्ञात कारण के लिए अपने-आपको कुर्बान नहीं करूंगी, सुन लो कि मैं कभी शादी नहीं करूंगी—हमेशा क्वांरी रहूंगी। पिछले दो बरसों से तुम मुझे शादी करने के लिए परेशान करती आ रही हो। और अब तुम्हें इस परिस्थिति से समझौता करना पड़ेगा, मैं शादी नहीं करूंगी। बस, मुझे इतना ही कहना है।'

'ज़ेना डार्लिंग, ईश्वर के लिए मेरी पूरी बात सुने बगैर मुझसे नाराज़ मत होओ! तुम कितनी जल्दबाज़ हो! ज़रा मेरे दृष्टिकोण से सोचकर देखो, तो तुम फौरन मेरी बात से सहमत हो जाओगी। काउन्ट एक या ज्यादा से ज्यादा दो साल और जीएंगे। क्वांरी बुढ़िया बनने से तो जवान-विधवा होना कहीं बेहतर है। फिर काउन्ट के मरने के बाद तुम काउन्टेस कहलाओगी, आज़ाद, धनी और स्वावलम्बी। तुम इन तमाम चीज़ों को भले ही नफरत की नज़र से देखो—काउन्ट के मरने की बात को। लेकिन मैं एक मां हूं और भला कौन मां मेरी दूरदर्शिता

के लिए मुझे दोष देगी ? और मान लो अगर अपनी नेकी की वजह से अभी भी तुम्हारे दिल में उस लड़के के लिए दया है और इतनी दया है कि उसके जीते जी तुम शादी नहीं करना चाहतीं (मेरा ख्याल है कि ऐसी ही बात है) तो ज़रा सोचो, काउन्ट से शादी करके तुम उसे कितना उत्साहित करोगी, उसे कितनी खुशी होगी। अगर उसमें रत्ती-भर भी अक्ल होगी तो वह समझ जाएगा कि काउन्ट से ईर्ष्या करना बेकार और हास्यास्पद बात है। वह समझ जाएगा कि तुमने अपने फायदे के लिए, मजबूरी से यह शादी की है। और वह यह भी समझ जाएगा—मेरे कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि काउन्ट के मरने के बाद तुम चाहे जिससे शादी कर सकती हो !'

'दूसरे शब्दों में—काउन्ट से शादी करके उसे लूटा जाए और उसके मरने की इन्तज़ार की जाए ताकि मैं जिसे प्यार करती हूं, उससे शादी कर सकूं। तुम्हारी स्कीमें भी खूब हैं ! तुम मुझे प्रलोभन देना चाहती हो, यह सुझाव देकर—मैं तुम्हारे इरादे समझ गई। मां, मैं तुम्हारी नस-नस को समझती हूं। तुम ग्लानिपूर्ण स्थिति में भी अपनी नेकी का प्रदर्शन किए बगैर नहीं रह सकतीं। तुमने साफ-साफ, सीधे ढंग से क्यों नहीं कहा—ज़ेना, देखो यह नीचता तो है, लेकिन है फायदे की चीज; तुम्हें इसके लिए राज़ी हो जाना चाहिए।—कम से कम उस बात में ज्यादा ईमानदारी होती।'

'लेकिन उस दृष्टिकोण से इस मामले को क्यों देखा जाए मेरी बच्ची, धोखाधड़ी, मक्कारी और लालच के दृष्टिकोण से देखने की क्या ज़रूरत है ? लेकिन मैं दुनिया की सारी पवित्रता की दुहाई देती हूं, इस प्रस्ताव में नीचता और धोखा आखिर है कहां ? ज़रा शीशे में अपनी सूरत देखो—तुम इतनी खूबसूरत हो कि कोई अपनी सारी सल्तनत तुमपर कुर्बान कर सकता है ! और अचानक तुम जैसी खूबसूरत लड़की भला अपने जीवन के बेहतरीन साल एक बूढ़े की खातिर कुर्बान कर देगी ?

तुम एक चमकदार सितारा हो, तुम उसके जीवन की संध्या को आलोकित करोगी ? जिस तरह सिरपेंचे की बेल बाग की दीवार पर छा जाती है, उसी तरह तुम काउन्ट के बुढ़ापे पर छा जाओ—तुम न कि वह कंटली झाड़ी, वह घृणित लालची औरत जिसने काउन्ट पर जादू कर दिया है और उसका खून चूस रही है। क्या काउन्ट का पैसा और पदवी तुमसे ज्यादा कीमती हैं ? नीचता और धोखा यहां भला किस जगह है ? ज़ेना, तुम नहीं जानतीं कि तुम क्या कह रही हो।'

'ज़ाहिर है कि पैसा और पदवी बहुत कीमती हैं क्योंकि उन्हें पाने के लिए एक अपाहिज से शादी करनी होगी। धोखा तो धोखा ही है मां, उद्देश्य चाहे जो भी हो !'

'हरगिज नहीं, मेरी प्यारी बच्ची, हरगिज़ नहीं ! इसी बात को एक उदात्त ईसाई दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है। एक बार गुस्से में आकर तुमने मुझसे कहा था कि तुम संन्यासिनी बनना चाहती हो। तुम्हारा दिल दुःख झेलकर कठोर हो गया था। तुमने कहा था (सचमुच कहा था) कि अब तुम किसीसे प्यार नहीं कर सकतीं। अगर तुम्हारा प्यार में विश्वास नहीं है तो फिर अपनी भावनाओं को किसी और ऊंची चीज में, एक बच्चे की तरह समस्त हृदय, पूरे विश्वास और पवित्रता के साथ लगा दो—ईश्वर तुम्हें आशीष देगा। बूढ़े काउन्ट ने भी ज़िन्दगी में दुःख झेले हैं, वे भी दुःखी और पीड़ित इन्सान हैं। मैं उन्हें कई बरसों से जानती हूं और हमेशा मेरे दिल में उनके लिए सहानुभूति की, प्यार की एक भावना रही है, जिसे मैं ठीक से समझा नहीं सकती, शायद यह मेरा पूर्वाभास हो। तुम उनकी दोस्त, बेटी, खिलौना बनो—अगर शब्दों में ही हर बात को व्यक्त करना हो तो। लेकिन उनके दिल को गर्माकर तुम एक नेक काम करोगी—इससे ईश्वर प्रसन्न होगा। काउन्ट हास्यास्पद जरूर हैं—लेकिन इस बात की परवाह मत करो। वे सिर्फ आधे इन्सान हैं—उनपर तरस खाओ ! तुम ईसाई हो। अपने-आपको मजबूर

करो—ऐसे काम मजबूरी से ही किए जाते हैं। अस्पताल के मरीज़ों के ज़ख्मों पर पट्टी बांधना हमें बुरा लगता है, छूत की बीमारियों के अस्पताल की हवा में सांस लेने में भी ग्लानि होती है। लेकिन ईश्वर के फरिश्ते यह काम करते हैं और इस काम के लिए ईश्वर को धन्यवाद देते हैं। तुम्हारे घायल हृदय के लिए मरहम मिल गई, यह एक पवित्र काम है—लो तुम्हारे ज़ख्मों को भरने का रास्ता निकल आया! इसमें स्वार्थ और नीचता कहां है? तुम्हें मुझपर यकीन नहीं है! तुम्हारा ख्याल है कि मैं फर्ज़ और नेकी की बातें करके तुम्हारे साथ कपट कर रही हूं? तुम नहीं समझ सकतीं कि मुझ जैसी अहंकारी सोसाइटी-लेडी के पास भी दिल है, भावनाएं और सिद्धान्त हैं! खैर, मैं तुम्हें यकीन करने के लिए नहीं कहती! मैं तुम्हें यह भी नहीं कहती कि तुम अपनी मां की बेइज्ज़ती मत करो! मैं तो सिर्फ यह चाहती हूं कि तुम यह स्वीकार करो कि तुम्हारी मां की बात कायदे की है और उसीमें तुम्हारी मुक्ति है। यह कल्पना करने की कोशिश करो कि मैं नहीं बल्कि कोई और बोल रहा है। अपनी आंखें बन्द करके एक ओर हट जाओ, कल्पना करो कि कोई अदृश्य शक्ति तुमसे बात कर रही है। तुम्हें सबसे ज्यादा ग्लानि इससे हो रही है कि यह सब पैसे की खातिर किया जा रहा है, और यह एक किस्म की खरीद-फरोख्त है। अच्छी बात है, अगर तुम्हें पैसे से इतनी नफरत है तो पैसे को ठुकरा देना। सिर्फ अपने गुज़ारे के लिए पैसा रखके बाकी गरीबों में बांट देना। मिसाल के लिए उस बदकिस्मत की मदद कर सकती हो जो मृत्यु-शय्या पर पड़ा है।'

'वह किसीकी मदद नहीं लेगा।' ज़ेना ने धीमे स्वर में, जैसे अपने से ही बात करते हुए कहा।

'वह नहीं लेगा, लेकिन उसकी मां तो लेगी,' मारया अलैग्ज़ेंड्रोव्ना ने विजेता के स्वर में कहा, 'वह छिपकर मदद लेगी ताकि उसे पता न चले। छह महीने पहले उसकी मदद करने के लिए तुमने अपने इयररिंग

बेचे थे, जो तुम्हारी मौसी ने तुम्हें भेंट किए थे। मुझे यह बात मालम है। मुझे यह भी मालूम है कि बुढ़िया अपने बदकिस्मत बेटे का पेट भरने के लिए लोगों के कपड़े भी धोती है।'

'जल्द ही उसे मदद की जरूरत नहीं रहेगी।'

'मैं जानती हूं, इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है,' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने बीच में दखल देते हुए कहा। अचानक उन्हें एक नई प्रेरणा मिली, 'मैं जानती हूं, तुम्हारा क्या मतलब है। लोग कहते हैं कि उसे तपेदिक है और वह जल्द ही मर जाएगा। लेकिन कौन कहता है कि वह मर जाएगा? अभी उस दिन मैंने कालिस्त स्तेनीस्लाविच से उसके बारे में पूछा था, क्योंकि मेरे पास भी दिल है ज़ेना। कालिस्त स्तेनीस्लाविच ने मुझे बताया कि उसकी बीमारी खतरनाक जरूर है, लेकिन उसने मुझे यकीन दिलाया कि उस बेचारे को तपेदिक नहीं, बल्कि उसके फेफड़ों में कोई खराबी है। तुम जाकर उसे खुद पूछ सकती हो। उसने मुझे पक्की तरह बताया कि अगर मरीज़ की परिस्थितियां ऐसी न होतीं तो हवा तब्दीली से वह ठीक हो सकता था। उसने मुझे बताया, और मैंने पहले भी यह सुना है, और किताब में भी पढ़ा है कि स्पेन के किनारे कोई बड़ा शानदार द्वीप है। मेरा ख्याल है उस द्वीप का नाम मलागा है—किसी शराब जैसा ही नाम है—जहां न सिर्फ कमजोर फेफड़ों वाले लोग, बल्कि तपेदिक के मरीज़ भी वहां की जलवायु से ही ठीक हो जाते हैं। लोग खास तौर पर तन्दुरुस्त होने के लिए वहां जाते हैं—लेकिन सिर्फ उच्चवर्ग के लोग ही—शायद व्यापारी लोग भी, लेकिन बहुत पैसे वाले लोग ही वहां जा सकते हैं। और वह जादू-भरा अल्हाम्ब्रा, मेंहदी की झाड़ियां, नींबू के बाग, टट्टुओं पर सवार स्पेन के लोग!—एक शायर के स्वभाव वाले व्यक्ति के मन के ऊपर ये चीजें अपने-आप ही एक असाधारण प्रभाव डालती हैं। तुम्हारा ख्याल है कि वह तुम्हारी मदद नहीं स्वीकार करेगा? ऐसा यात्रा के लिए तुम्हारा

पैसा नहीं लेगा ? तो अगर तुम्हें उसपर तरस आता है तो उसे धोखा दो ! अगर किसी इन्सान की ज़िन्दगी का सवाल हो तो धोखाधड़ी को भी माफ किया जा सकता है। उसे प्रोत्साहित करो। अगर कर सकती हो तो उसे प्यार करने का वादा करो। उससे कह दो कि विधवा होने के बाद ही तुम उससे शादी कर लोगी। किसी भी बात को शालीन ढंग से कहा जा सकता है। तुम्हारी मां कभी भी तुम्हें कोई बुराई नहीं सिखाएगी, तुम उसकी ज़िन्दगी बचाने के लिए उससे झूठ बोलोगी, इसलिए हर बात क्षम्य है। उम्मीद दिलाकर तुम उसे फिर से ज़िन्दा कर दोगी। वह खुद ही अपनी सेहत का ध्यान रखना शुरू कर देगा, इस बारे में सलाह मांगेगा, और डाक्टरों के आदेश पर चलेगा। वह सुखी होने के लिए तन्दुरुस्त बनने की कोशिश करेगा। अगर वह ठीक हो गया, और तुमने उससे शादी न भी की तब भी तुम उसे बचा तो लोगी ही ! उसकी ज़िन्दगी लौट आएगी। वह तन्दुरुस्त हो चुका होगा। और फिर तुम उससे हमदर्दी क्यों न करो ? शायद किस्मत उसे बहुत कुछ सिखाए, वह पहले से बेहतर हो जाए और अगर वह तुम्हारे योग्य बन जाए तो तुम विधवा होने के बाद उससे शादी भी कर सकती हो। तुम धनी और आज़ाद होओगी, उसे तन्दुरुस्ती दिलाने के बाद तुम उसे सामाजिक प्रतिष्ठा भी दिला सकती हो, उसे कोई पेशा अपनाने में मदद दे सकती हो। उस वक्त तुम्हारा उससे शादी करना क्षम्य होगा, लेकिन इस वक्त यह नामुमकिन है। इस वक्त अगर तुम यह पागलपन कर बैठी तो क्या नतीजा निकलेगा ? सिवा नफरत, गरीबी, नन्हे बच्चों के कान उमेठने, (उस आदमी के पेशे में तो यह होगा ही) एकसाथ बैठकर शेक्सपियर पढ़ने के सिवा मोर्दासोव की ज़िन्दगी से बंधे रहने में तुम्हें क्या मिलेगा और अन्त में जल्द ही उसकी मौत हो जाएगी। लेकिन अगर तुम उसकी ज़िन्दगी लौटा सकीं, तो वह ज़िन्दगी अच्छे कामों में इस्तेमाल होगी। अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह तुम्हारी पूजा

करने लगेगा। उसे अपने बुरे काम पर सख्त अफसोस है जो उसके दिल को कचोट रहा है। उसे माफ करके और उसे नई जिन्दगी देकर तुम उसे नई उम्मीद दोगी, इससे उसे आत्मिक शान्ति मिलेगी। वह किसी सरकारी दफ्तर में काम कर सकेगा, उसे तरक्की और ऊंचा ओहदा मिलेगा।

'मान लो अगर वह तन्दुरुस्त न हो सका, तब भी कम से कम वह सुख से तो मरेगा, तुम्हारी गोद में उसे आत्मिक शान्ति मिलेगी—क्योंकि उस वक्त तुम उसके पास रहोगी—उसे यह विश्वास होगा कि तुम उसे प्यार करती हो और तुमने उसे माफ कर दिया है। मेंहदी की झाड़ियों और नींबुओं के पेड़ों तले, सुन्दर नीले आकाश तले! ओह ज़ेना, यह सारी बातें तुम्हारे बस में हैं! सब परिस्थितियां तुम्हारे हक में हैं—और काउन्ट से शादी करके तुम ये सारी चीज़ें हासिल कर सकती हो।'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने अपनी बात खत्म कर दी। इसके बाद एक लम्बी खामोशी छा गई। ज़ेना के हृदय में भयंकर आन्दोलन मच रहा था।

हम ज़ेना की भावनाओं की यहां चर्चा नहीं करेंगे, क्योंकि हम उन भावनाओं का सही अनुमान नहीं लगा सकते। लेकिन ज़ाहिर तो यही होता था कि मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने ज़ेना के दिल का रास्ता पा लिया था। उस समय उन्हें अपनी बेटी के दिल की हालत का ठीक से पता नहीं था, और हर संभव रास्ते की कल्पना करने के बाद वे अब समझ गई थीं कि उन्होंने सही रास्ता पा लिया है। उन्होंने ज़ेना के दिल के सबसे ज्यादा दुखते घावों को अपने खुरदरे हाथों से टटोला था और वे अपनी आदत के मुताबिक अपने उदास विचारों का प्रदर्शन किए बगैर नहीं रह सकी थीं। यह स्वाभाविक ही था कि ज़ेना पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने मन ही मन कहा, 'अगर

वह मुझपर नहीं यकीन करती तो कोई हर्ज नहीं। मैं अगर उसे सारे मामले पर फिर से सोचने के लिए राज़ी कर लूं तो वही बहुत है।' सबसे बड़ी बात यह है कि जिस बात को साफ़-साफ़ नहीं कहा जा सकता उसके बारे में सूक्ष्म संकेतों से काम लिया जाए। इस तरह से वे अपने उद्देश्य में सफल हो गईं। जो असर वे चाहती थीं, वह पैदा हो गया। ज़ेना उत्सुक भाव से मां की बातें सुन रही थी। उसके गाल जल रहे थे और वह ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रही थी।

'सुनो मां!' ज़ेना ने दृढ़ निश्चय के स्वर में कहा। उसके गालों का पीलापन साफ़ बता रहा था कि उस निश्चय की उसे कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है, 'सुनो मां!'

लेकिन इसी वक्त हाल में शोर सुनाई दिया। कोई कर्कश स्वर में मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना के बारे में पूछताछ कर रहा था। ज़ेना ने फ़ौरन अपने को रोक लिया। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना अपनी जगह से उछलकर खड़ी हो गईं।

'हे मेरे ईश्वर! शैतान, उस बकवासी कर्नल की कव्वी बीवी को यहां ले आया है! पन्द्रह दिन पहले मैंने उसे इस घर से करीब-करीब निकाल दिया था,' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना परेशान हो गईं, 'लेकिन···लेकिन अब मुझे उसका स्वागत करना पड़ेगा। करना चाहिए! वह शायद कोई खबर लेकर आई है, वरना यहां आने की उसकी हिम्मत न पड़ती। यह बड़ी ज़रूरी बात है ज़ेना। मुझे जल्द मालूम होना चाहिए। मौजूदा हालत में मैं किसी हथकंडे से नफ़रत नहीं कर सकती।'

फिर वे आगंतुक स्त्री की तरफ़ बढ़ीं। 'तुम कितनी अच्छी हो जो मुझसे मिलने चली आईं। आखिर तुम्हें मेरा ख्याल कैसे आया, सोफ़िया पेत्रोव्ना? तुम्हारे अचानक आने से मुझे कितनी खुशी हुई है!'

ज़ेना कमरे से भाग गई।

६

कर्नल की बीवी सोफिया पेत्रोव्ना फारपुखीना सिर्फ नैतिक अर्थों में बकवासिन कव्वी थी। शारीरिक दृष्टि से वह एक चिड़िया से ज्यादा मिलती थी। वह पचास बरस की, नाटे कद की औरत थी। उसके सारे चेहरे पर पीले रंग के दाग थे, उसका छोटा, सूखा शरीर चिड़ियों की सी पतली लेकिन मजबूत टांगों पर टिका था। कर्नल की बीवी ने गहरे रंग की रेशमी पोशाक पहन रखी थी, जो हर वक्त सरसराती रहती थी, क्योंकि कर्नल की बीवी क्षणभर के लिए भी निश्चल नहीं बैठती थी। वह बड़ी दुश्मनी साधने वाली और लोगों की बदनामी करते फिरने वाली औरत थी। उसका पति कर्नल है, इस बात को वह कभी नहीं भूल सकती थी। अक्सर उसका अपने रिटायर्ड कर्नल पति से झगड़ा होता था और वह पति का मुंह भी नोच लेती थी। इसके अलावा वह वोद्का के लबालब भरे चार गिलास सुबह पीती थी और करीब इतने ही शाम के वक्त। उसे अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा से सख्त नफरत थी क्योंकि अन्ना निकोलाईव्ना ने पिछले हफ्ते उसे अपने घर से निकाल दिया था। उसे नतालिया दमित्रीव्ना पास्कुदीना से भी नफरत थी, जिसे उसने अपने घर से निकाल दिया था, क्योंकि नतालिया दमित्रीव्ना ने अन्ना निकोलाईव्ना का पक्ष लिया था।

कर्नल की बीवी चहकी, 'मैं सिर्फ एक मिनट के लिए यहां आई हूं, माई डियर। मुझे बिल्कुल बैठना नहीं चाहिए। मैं सिर्फ तुम्हें बताने के लिए आई हूं कि यहां कैसे चमत्कार हो रहे हैं! सारा शहर काउन्ट के पीछे पागल हो गया है! हमारे शहर के चालाक लोग—समझ रही हो न—काउन्ट को फांसने की कोशिश में उसके पीछे भाग रहे हैं, उसपर झपट्टा मार रहे हैं, उसे शैम्पेन पिलाई जा रही है, तुम्हें यकीन नहीं होगा! तुमने काउन्ट को अपने यहां से कैसे जाने दिया? जानती हो

इस वक्त वह नतालिया दमित्रीव्ना के यहां है ?'

'नतालिया दमित्रीव्ना के यहां ?' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना उत्तेजना में कुर्सी से उछलकर खड़ी हो गईं। 'वाह ! वे तो कह रहे थे कि गवर्नर के यहां जा रहे हैं वहां से शायद एक मिनट के लिए अन्ना निकोलाईव्ना के घर जाएंगे।'

'एक मिनट के लिए ? क्यों ? ज़रा जाकर उसे पकड़ने की कोशिश तो करो ! गवर्नर कहीं बाहर गए हुए थे, इसलिए काउन्ट अन्ना निको-लाईव्ना के यहां चले गए और वहां खाना खाने का वादा कर आए। उधर नतालिया जो उनसे चिपकी हुई है, उन्हें घसीटकर अपने यहां खाना खाने के लिए ले गई। देख लिया अपने काउन्ट को !'

'और मोज़ग्ल्याकोव ? उसने तो वादा किया था कि…'

'तुम और तुम्हारा मोज़ग्ल्याकोव ! तुम्हारा हीरा ! वाह, वही तो काउन्ट को वहां लेकर गया था। ख्याल रखना—अगर लोग काउन्ट को जुए की मेज़ पर ले गए तो वे फिर हार जाएंगे, जैसा पिछले साल हुआ था ! लोग काउन्ट को ज़रूर खेलने के लिए ले जाएंगे और उन्हें नंगा करके छोड़ेंगे। और वह नतालिया ! लोगों में न जाने कैसी-कैसी बातें फैला रही है ! चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि तुमने काउन्ट को… फांसने की कोशिश की है…क्योंकि तुम…समझ गईं न ? नतालिया ने यह बात खुद काउन्ट से कही। काउन्ट की समझ में एक भी शब्द नहीं आता, वह पानी में डूबे बिल्ली के बच्चे की तरह हर बात 'अरे हां, अरे हां' करते रहते हैं। उसे देखतीं तो पता चलता, ज़रा सोचो तो सही, वह अपनी सोन्का को काउन्ट के सामने ले आई ! पन्द्रह बरस की होकर भी ऊंची स्कर्ट पहनती है—बिल्कुल घुटनों से ऊपर ! फिर उसने उस यतीम छोकरी माश्का को भी बुलवा भेजा। उसने भी ऊंची स्कर्ट पहन रखी थी—घुटनों से ऊपर ! मैंने अपने शीशे में से देखा था…उन्होंने लाल रंग की टोपियां पहनी थीं, जिनपर पंख लगे थे—इसका मतलब

मेरी बिल्कुल समझ में नहीं आया—फिर उसने काउन्ट के सामने प्यानो की धुन पर दोनों छोकरियों से एक यूक्रेनियन डांस करवाया। तुम तो काउन्ट की कमज़ोरी से अच्छी तरह वाकिफ हो। उनका दिल पिघल गया। वह लगातार कह रहे थे, 'कैसी सुडौल हैं!' 'कैसी सुडौल हैं!' उन्होंने अपने शीशे में से छोकरियों की तरफ देखा, और उन दोनों कव्वियों ने नाचते-नाचते अपना बुरा हाल कर लिया। उनके चेहरे लाल सुर्ख थे, वे ज़ोर से टांगें फेंक रही थीं। निरी उछल-कूद थी। छि:! इसको डांस कहते हैं? मैंने खुद मदाम जार्नी के बोर्डिंग स्कूल में इनाम बंटने के जलसे में एक शॉल डान्स किया था। उसका बड़ा शानदार असर हुआ था। सैनेट के सदस्यों ने तालियां बजाई थीं। काउन्टों की बेटियां उस स्कूल में पढ़ती थीं। लेकिन यह लड़कियां कां-कां[1] से ज्यादा कुछ नहीं जानतीं। मैं तो सचमुच शर्म से पानी-पानी हो रही थी। मैं वहां मुश्किल से बैठ पाई।'

'लेकिन···क्या तुम भी नतालिया दमित्रीव्ना के यहां थीं? मेरा ख्याल था···'

'क्योंकि उसने पिछले हफ्ते मेरी बेइज्जती की थी, इसलिए? मैं हरेक को साफ-साफ इस बारे में बता देती हूं। माई डियर, मैं तो सिर्फ काउन्ट को देखना चाहती थी, चाहे दरवाज़े के छेद में से ही मुझे झांकना पड़ता। नहीं तो मैं काउन्ट को और कहां देख सकती थी! मैं सिर्फ काउन्ट की वजह से ही वहां गई थी, वरना हरगिज़ न जाती। ज़रा सोचो तो सही, मेरे सिवा उसने सबको चॉकलेट दिया और सारे वक्त मुझसे एक शब्द भी नहीं बोली। उसने जान-बूझकर, मुझे जलाने के लिए ऐसा किया। मुटल्ली कहीं की! मैं उसे मज़ा चखाऊंगी। अच्छा गुडबाई, मुझे जाने की जल्दी करनी चाहिए। अभी अकुलीना पानफीलोव्ना को पकड़कर

१. फ्रेंच नृत्य—फ्रेंच चित्रकार लात्रे ने पेरिस के वेश्यालयों में जाकर कां-कां नृत्य के चित्र बनाए थे।

भी यह बात बतानी है। लेकिन तुम काउन्ट को हाथ से गया समझो। वे अब यहां नहीं आएंगे। तुम जानती हो कि वे कितने भुलक्कड़ हैं, और अन्ना निकोलाईव्ना ज़रूर उन्हें अपने घर घसीटकर ले जाएगी। सबको डर है कि कहीं···तुम मेरा मतलब समझ गई हो; मेरा मतलब है कि ज़ेना···'

'कैसी भयंकर बात है ?'

'मैं दावे से कहती हूं। सारा शहर इसी बात की चर्चा कर रहा है। अन्ना निकोलाईव्ना ने फैसला किया है कि वह काउन्ट को खाने तक रोके रहेगी और फिर हमेशा के लिए उन्हें वहीं रखेगी। वह तुम्हें जलाने के लिए यह सब कर रही है। मैंने दीवार के छेद में से उसके आंगन में झांककर देखा था—वहां खाने तैयार किए जा रहे थे, छुरियों की खनखनाहट हो रही थी—शैम्पेन मंगवाई जा रही थी। जल्दी करो, रास्ते में ही काउन्ट को पकड़ लो। आखिर उन्होंने सबसे पहले तुम्हारे यहां खाना खाने का वादा किया था। वह तुम्हारे मेहमान हैं, उसके नहीं। देखना कहीं वह साज़िश करने वाली गन्दी औरत तुम्हें मात न दे जाए। मैं उसे अपनी जूती के तले के बराबर भी नहीं समझती, उसका पति चाहे अटर्नी है! मैं भी तो एक कर्नल की बीवी हूं! मदाम जर्नी के बोर्डिंग स्कूल में मैंने तालीम पाई है—ओह, गुडबाई डियर, मेरी स्लेज खड़ी इन्तज़ार कर रही है, वरना मैं तुम्हारी स्लेज में जाती···'

चलता-फिरता अखबार अदृश्य हो गया। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना का मारे उत्तेजना के बुरा हाल था। लेकिन कर्नल की बीवी की सलाह बड़ी ठीक और व्यावहारिक थी। वक्त बहुत थोड़ा था, देर नहीं करनी चाहिए। लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत अभी तक ज्यों की त्यों थी। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ज़ेना के कमरे में भागी गईं।

ज़ेना दोनों बांहें बांधे, सिर झुकाए कमरे में चहलकदमी कर रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह उत्तेजित थी। उसकी

आंखों में आंसू छलछला आए थे, लेकिन जिस नजर से उसने अपनी मां को देखा, उसमें दृढ़ निश्चय था। जल्दी से अपने आंसुओं को दबाकर, मां के कुछ कहने से पहले ही ज़ेना व्यंग्य-भरी मुस्कान के साथ बोली :

'मां, अभी तुमने मुझे एक लम्बा-चौड़ा व्याख्यान दिया था, ज़रूरत से ज़्यादा लम्बा। लेकिन तुम मेरी आंखों में धूल नहीं झोंक सकीं। मैं बच्ची नहीं हूं। कमीनेपन और स्वार्थसिद्धि के लिए संन्यासिनी बनने का, और ऊंचे उद्देश्यों का ढोंग रचना जेजुएटवाद होगा, मैं अपने-आपको इस धोखे में नहीं आने दूंगी···कभी नहीं···सुना ? मैं चाहती हूं कि तुम अच्छी तरह इस बात को समझ लो।'

'लेकिन मेरी प्यारी बच्ची !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना बोलीं। क्षणभर के लिए उनका साहस ठंडा पड़ गया था।

'चुप रहो मां ! धीरज से मेरी सारी बात सुनो ! यह अच्छी तरह जानते हुए कि यह सब धोखाधड़ी और नीचता है, तुम्हारा प्रस्ताव मुझे बिना शर्त के मंजूर है। बिना शर्त के, मैं कहती हूं, और मैं काउन्ट से शादी करने को तैयार हूं और तुम्हारी सारी कोशिशों का समर्थन करने के लिए तैयार हूं। मैं ऐसा क्यों कर रही हूं, यह जानना तुम्हारे लिए ज़रूरी नहीं है। मैंने यह फैसला किया है, यही जानना तुम्हारे लिए काफी है। मैंने सब बातों का फैसला कर लिया है—मैं काउन्ट के जूते उठाऊंगी, मैं उनकी नौकरानी की तरह रहूंगी, अपने कमीनेपन का हर्जाना भरने के लिए, मैं उनकी खुशी के लिए नाचूंगी। मैं उन्हें खुश करने के लिए हर तरीके का इस्तेमाल करूंगी, ताकि उन्हें मुझसे शादी करने का अफ़सोस न हो। लेकिन इस फैसले के बदले में मैं चाहती हूं कि तुम मुझे साफ-साफ बताओ—तुम इस मामले को कैसे तय करना चाहती हो ? तुम्हारी ज़िद से मालूम होता है कि तुम्हारे दिमाग में कोई न कोई निश्चित स्कीम ज़रूर है। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं—अगर तुम्हारे दिमाग में कोई स्कीम न होती तो तुम यह चर्चा शुरू ही न करतीं। कम

से कम जिन्दगी में एक बार तो साफ बात करो। मेरी सिर्फ यही शर्त है। जब तक मुझे ठीक से नहीं मालूम हो जाता कि तुम यह सारा मामला कैसे तय करोगी, तब तक मैं फैसला नहीं कर सकती।'

मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ज़ेना के इस अप्रत्याशित हमले से इतना घबरा गई थीं कि थोड़ी देर तो वे खामोश और निश्चल खड़ी आश्चर्य से ज़ेना का मुंह ताकती रहीं। वे अपनी बेटी के हठीले, रोमांटिकवाद के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार थीं। ज़ेना की नेकी और कठोरता से वे हर समय भयभीत रहती थीं। सहसा उन्हें पता चला कि उनकी बेटी अपने सिद्धान्तों के बावजूद भी हर चीज़ के लिए तैयार है—अब सारी बातें ठोस ढंग से चल रही थीं—उनकी आंखें खुशी से चमकने लगीं।

'मेरी ज़ेना ! ज़ेना ! आखिर तुम मेरे ही रक्त-मांस से तो बनी हो !'

इससे ज्यादा वे और कुछ न कह सकीं और भागी हुई अपनी बेटी को लगे लगाने के लिए बढ़ीं।

'हे ईश्वर ! मैंने तुम्हें गले लगाने के लिए तो नहीं कहा था मां !' ज़ेना धीरज खोकर घृणापूर्ण स्वर में बोली, 'मुझे तुम्हारे इस हर्षोन्माद की ज़रूरत नहीं है। मैं सिर्फ अपने सवाल का जवाब चाहती हूं।'

'लेकिन ज़ेना, मैं तुमसे प्यार करती हूं, तुम्हारी आराधना करती हूं और तुम मुझसे नफरत करती हो···आखिर तुम्हारी खुशी के लिए ही तो मैं यह सब कर रही हूं।'

और उनकी आंखों में सच्चे आंसू छलछला आए। मारया अलैक्जें-ड्रोव्ना अपने ढंग से सचमुच ज़ेना को प्यार करती थीं, अब सफलता और उत्तेजना से वे और भी ज्यादा भावुक हो उठी थीं। ज़ेना जानती थी कि अपनी तमाम संकीर्णताओं के बावजूद भी उसकी मां उसे चाहती है, ज़ेना को यह प्यार बोझ-सा महसूस होता था। सचमुच अगर उसकी मां उससे नफरत करती तो अच्छा होता।

'देखो, मां गुस्सा मत करो। तुम जानती हो कि मेरा मन परेशान है,' ज़ेना ने मां को सांत्वना देने के लिए कहा।

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना का उत्साह फौरन लौट आया और वे चहक उठीं। 'मैं नाराज़ नहीं हूं प्यारी बच्ची! मैं तुम्हारी परेशानी को समझती हूं। अच्छा तो लो, तुमने मुझसे साफगोई की मांग की है, यकीन रखो कि मैं तुमसे बिल्कुल साफ बात करूंगी। लेकिन तुम्हें मेरी बातों का यकीन होगा? सबसे पहली बात तो यह है कि अभी तक मेरे पास कोई ब्यौरेवार निश्चित स्कीम नहीं है, क्योंकि यह नामुमकिन है। तुम समझदार लड़की हो, कारण खुद ही समझ सकती हो। मुझे तो कई अड़चनें पहले से ही नज़र आ रही हैं। अभी एक मिनट पहले वह कव्वी बहुत-सी बातों के बारे में बकवास कर रही थी···(हे ईश्वर! मुझे जल्दी करनी चाहिए!) देखो मैं बिल्कुल साफ-साफ बातें कर रही हूं। लेकिन मैं कसम खाकर कहती हूं कि मैं अपने उद्देश्य में सफल हो जाऊंगी।' वे खुशी से पागल हो रही थीं, 'यह मेरा दिवास्वप्न नहीं है प्यारी बच्ची, जैसा कि तुमने अभी कहा था। इसकी बुनियाद में सचाई है। इसकी बुनियाद में काउन्ट के दिमाग की कमज़ोरी है। तुम जानती हो कि काउन्ट का दिमाग एक ऐसी चादर है जिसपर कोई भी नमूना खींचा जा सकता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि कहीं कोई इस मामले में दखल न दे बैठे! मैं उन बेवकूफों से हरगिज़ मात नहीं खाऊंगी।'

उन्होंने मेज़ पर मुक्का मारकर कहा। उनकी आंखें अंगारों की तरह जल रही थीं।

'मैं उन्हें ऐसा नहीं करने दूंगी, लेकिन इसके लिए मुझे जितनी जल्दी हो सके करनी चाहिए। असली चाल अगर हो सके तो आज ही खेली जानी चाहिए।'

'अच्छी बात है मां, लेकिन एक और रहस्योद्घाटन के लिए तैयार हो जाओ। जानती हो, मैं तुम्हारी स्कीम में क्यों इतनी दिलचस्पी ले

रही हूं और मुझे इसपर भरोसा क्यों नहीं है ? क्योंकि मुझे अपने ऊपर भरोसा नहीं है। मैंने तुम्हें कहा था कि मैंने इस कमीनेपन के लिए अपने को तैयार कर लिया है, लेकिन अगर तुम्हारी स्कीम घृणित हुई और मेरा मन विद्रोह कर उठा तो मैं साफ कहे देती हूं कि मुझसे यह सब बर्दाश्त नहीं होगा और मैं उस मामले से पिंड छुड़ा लूंगी। यह एक नए किस्म का कमीनापन है, समझीं—कमीनी हरकतों के लिए अपने को तैयार करना और गन्दगी छूने से डरना—लेकिन किया क्या जाए ? मैं जानती हूं, आखिर में यही होगा।'

'लेकिन इसमें कौन-सा कमीनापन है, मेरी बच्ची ?' मारया अलेक्जेंड्रोव्ना ने भीरु स्वर में ऐतराज किया, 'आखिर यह स्वार्थ की शादी के सिवा और कुछ नहीं, सब लोग यही करना चाहते हैं। सिर्फ इसी दृष्टिकोण से सारे मामले को देखो तो सब बातें बिल्कुल उचित मालूम देंगी।'

'ओह मां, ईश्वर के लिए मेरे सामने ढोंग मत रचो ! मैं हर चीज के लिए राजी हूं—हर चीज के लिए। इससे ज्यादा तुम क्या चाहती हो ? अगर मैं चीजों को उनके सही नाम से पुकारूं, तो तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। यही तो मेरी एकमात्र सांत्वना है।' उसके होंठों पर एक वक्र मुस्कान छा गई।

'अच्छा, अच्छा मेरी प्यारी ! विचारों में मतभेद होते हुए भी हम एक-दूसरे की इज्जत कर सकती हैं। लेकिन अगर तुम्हें डर है कि इस मामले में अप्रिय तरीकों से काम लिया जाएगा, तो वह सिरदर्दी तुम मुझपर छोड़ो। मैं कसम खाकर कहती हूं कि तुमपर कीचड़ का एक भी छींटा नहीं पड़ेगा। क्या मैं तुम्हारी स्थिति खराब करना चाहूंगी ? सिर्फ मुझपर भरोसा रखो, सब बातें बड़े शानदार और शिष्ट ढंग से होंगी। रत्ती-भर बदनामी नहीं होगी, और मान लो अगर जरा-सी ऐसी बदनामी हुई भी, जिसे रोका नहीं जा सकता (इन बातों का क्या भरोसा?) तो

उस वक्त तक हम यहां से दूर पहुंच चुके होंगे। हम यहां नहीं रहेंगे—दूर पहुंच जाएंगे। लोग बेशक गला फाड़कर चिल्लाते रहें! हमारी बला से! यह सिर्फ उनकी ईर्ष्या होगी। क्या वे इस काबिल हैं कि उनकी वजह से परेशान हुआ जाए? मुझे तुमपर ताज्जुब होता है। ज़ेना—मुझसे नाराज़ मत होना। वाह! तुम जैसी स्वाभिमानी लड़की इन लोगों से डरेगी!'

'ओह मां, मुझ लोगों से कतई डर नहीं लगता! तुम मेरी बात बिल्कुल नहीं समझतीं।' ज़ेना खीझकर बोली।

'बस, बस, डार्लिंग, गुस्सा मत करो! मेरे कहने का सिर्फ यही मत-लब था कि ये लोग तो आए दिन इस तरह की गन्दी हरकतें करते ही रहते हैं। और इस तरह की बात तुम सारी ज़िन्दगी में बस इस बार ही करोगी······लेकिन मैं भी कितनी बेवकूफ हूं, फिजूल की बातें किए जा रही हूं। इस बात से ज़रा भी नुकसान नहीं होगा, बल्कि यह चीज़ बिल्कुल शरीफाना है। मैं तुम्हारे आगे यह साबित कर दूंगी। मैं फिर कहती हूं कि हर चीज़ दृष्टिकोण पर निर्भर करती है···'

'बस करो मां, बहुत सबूत दे चुकीं!' ज़ेना ने गुस्से में फर्श पर पैर पटकते हुए कहा।

'अच्छा डार्लिंग मैं आगे से ऐसी बात नहीं कहूंगी, लेकिन मेरी ज़बान······'

इसके बाद कुछ देर तक खामोशी छाई रही। मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना आतुर दृष्टि से ज़ेना की आंखों में झांककर देखने लगी, जिस तरह एक नन्हा पिल्ला यह जानते हुए कि वह कसूरवार है, अपनी मालकिन की आंखों में झांकता है।

ज़ेना ने पूछा, 'मैं कल्पना नहीं कर सकती कि तुम इस मामले को कैसे तय करोगी। मुझे यकीन है कि सिवा बदनामी के तुम्हारे हाथ कुछ नहीं आएगा। मैं लोगों की राय को बिल्कुल तुच्छ समझती हूं लेकिन तुम

खुद अपने को अपमानित महसूस करोगी।'

'ओह ! अगर इस वजह से तुम्हें परेशानी हो रही है तो बिल्कुल निश्चिन्त रहो ! मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूं। तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूं। जब तक हम दोनों में एकता है, तुम्हें मेरी चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम जानतीं, मैं कितनी बार बाल-बाल बची हूं। मुझे इससे भी बदतर स्थितियों का सामना करना पड़ा है, मुझे सिर्फ एक बार मौका दो ! चाहे जो कुछ हो, सबसे पहले तो काउन्ट को जल्द से जल्द यहां लाना होगा। सबसे पहले यही काम करना चाहिए। बाकी सारी बातें इसीपर निर्भर करती हैं। मुझे ऐसा लग रहा है कि सब लोग गड़बड़ करेंगे लेकिन उसकी फिक्र न करो। मैं बिना किसीकी मदद के ही उन्हें मात दे दूंगी। सिर्फ एक ही आदमी से ज़रा-सा डर लगता है, वह है मोज़ग्ल्याकोव।'

'मोज़ग्ल्याकोव?' ज़ेना ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में दुहराया।

'हां, मोज़ग्ल्याकोव। लेकिन तुम चिन्ता न करो ज़ेना। मैं कसम खाकर कहती हूं कि मैं उसे ऐसे बिन्दु पर पहुंचा दूंगी जहां वह अपने-आप ही हमारी मदद करेगा ! तुम अभी तक मुझे नहीं जानतीं ज़ेना ! तुम नहीं जानतीं कि काम करते वक्त मैं कैसी हो जाती हूं। ओह ज़ेना, मेरी डार्लिंग ! ज्योंही मैंने काउन्ट के आने की खबर सुनी, मेरे विचारों में जैसे आग-सी लग गई। सहसा मुझे एक नई रोशनी दिखाई दी। क्या कभी किसी ने सोचा था कि काउन्ट हमारे पास आएंगे। ऐसा मौका हज़ार सालों में भी नहीं आएगा ज़ेना ! मेरी प्यारी ! तुम्हारी बेइज़्ज़ती एक बूढ़े और अपाहिज आदमी से शादी करने में नहीं, बल्कि एक ऐसे आदमी से शादी करने में है, जिसे तुम बर्दाश्त नहीं कर सकतीं, और सचमुच तुम्हें जिसकी बीवी बनना पड़ेगा। काउन्ट से शादी करके तुम उसकी सचमुच की बीवी नहीं बनोगी। यह शादी थोड़े ही होगी। यह तो परिवार में ही मामूली-सा हेरफेर होगा। सारा फायदा उनका ही रहेगा—

सोचो तो सही, अचानक उन्हें इतना बहुमूल्य सुख नसीब हो जाएगा। ओह ज़ेना, आज तुम कितनी प्यारी दिखाई दे रही हो! तुम मामूली सुन्दरी नहीं हो, सुन्दरियों में भी सुन्दरी हो। अगर मैं पुरुष होती तो तुम्हारे कहने पर आधी सल्तनत तुम्हारे कदमों में ला रखती। सब के सब कितने गधे हैं? इस नन्हे हाथ को कौन नहीं चूमना चाहेगा?' और मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने भावावेश में आकर अपनी बेटी का हाथ चूम लिया। 'यह मेरे ही शरीर का टुकड़ा है, मेरा अपना रक्त-मांस! उस बेवकूफ को तुमसे शादी करनी ही पड़ेगी, चाहे ज़बरदस्ती ही क्यों न करनी पड़े। और फिर हम दोनों मज़े में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, मेरी नन्ही-मुन्नी बिटिया! सुख मिलने पर तुम अपनी मां को दुत्कार तो नहीं दोगी न! हम दोनों में चाहे कितना ही झगड़ा हुआ हो लेकिन तुम्हें मुझसे बड़ा दोस्त कोई नहीं मिला। आखिरकार—'

'मां, तुमने अपना इरादा पक्का कर लिया है, इसलिए—अब तुम्हें कुछ करना चाहिए। तुम यहां फिज़ूल में अपना वक्त बर्बाद कर रही हो।' ज़ेना ने अधीरता से कहा।

'वक्त हो गया है ज़ेना! मैं भी कितनी बातूनी औरत हूं।' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना चिल्लाई, 'लोग काउन्ट को हमेशा के लिए अपने जाल में फंसाना चाहते हैं। मैं फौरन गाड़ी में बैठकर चल दूंगी। मैं वहां जाकर पहले मोज़ग्ल्याकोव को बुलाऊंगी और फिर—काउन्ट को वहां से ले आऊंगी—अगर ज़रूरत पड़ी तो ज़बर्दस्ती भी करूंगी। गुडबाई ज़ेना, गुडबाई डार्लिंग, परेशान मत होना, मन में किसी बात का सन्देह न आने देना, सबसे बड़ी बात यह है कि दुखी मत होना। सब ठीक हो जाएगा। एकदम शानदार! सबसे बड़ी बात है दृष्टिकोण!···गुड-बाई, गुडबाई।'

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने ज़ेना के शरीर पर क्रास का चिह्न बनाया और भागती हुई कमरे से बाहर चली गई, क्षण-भर के लिए उन्होंने

शीशे में अपनी सूरत देखी और दो मिनट बाद उनकी स्लेज गाड़ी मोर्दासोव की गलियों में चक्कर काटने लगी। स्लेज में रोज़ इस वक्त घोड़े जोत दिए जाते थे, ताकि मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अगर बाहर जाना चाहें तो गाड़ी तैयार मिले। वे बड़ी शान-शौकत से रहती थीं।

गाड़ी में बैठते हुए मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने मन ही मन सोचा, 'ओह नहीं ! तुम लोग मुझे मात नहीं दे सकोगे। ज़ेना राज़ी हो गई है, आधा काम तो वैसे ही हो गया। लेकिन फिर भी सारा मामला गड़बड़ा सकता है। क्या बकवास है ? ज़ेना ! ज़ेना ! आखिर उसे अक्ल आ ही गई। तो उसके दिमाग पर कुछ बातों का असर तो पड़ना ही है। मैंने उसे बेहद सब्ज़ बाग दिखाए, मैंने ठीक जगह को छू लिया। लेकिन आज वह कितनी प्यारी दिखाई दे रही है ! कितनी प्यारी ! अगर मैं इतनी खूबसूरत होती तो अपनी मर्ज़ी के मुताबिक आधे यूरोप को पलटकर रख देती। अच्छा देखो, क्या होता है······जब वह काउन्टेस बन जाएगी और दुनियादारी सीख लेगी तब शेक्सपियर की कोई जगह नहीं रहेगी। अभी तक उसने क्या देखा है ? मोर्दासोव और वह मास्टर···वह काउन्टेस के रूप में कितनी शानदार लगेगी ! मुझे उसका अहंकार बहुत अच्छा लगता है, वह कितनी साहसी और उदासीन है ! वह सचमुच महारानी मालूम होती है। भला उसने पहले अपना फायदा क्यों नहीं देखा ? यह कैसे हुआ ? लेकिन······उसने अब देख लिया है···बाकी सब ठीक हो जाएगा। आखिर मैं तो उसकी तरफ रहूंगी ही। अन्त में वह सब बातों पर मेरे साथ सहमत हो जाएगी और मेरे बगैर कुछ नहीं कर पाएगी। मैं खुद भी काउन्टेस बन जाऊंगी और पीटर्सबर्ग में भी लोग मुझे जान जाएंगे। अलविदा मनहूस कस्बे ! काउन्ट मर जाएगा, वह लड़का भी मर जाएगा, फिर मैं उसकी शादी किसी शाही खानदान के आदमी से कर दूंगी। मुझे डर सिर्फ इसी बात का है कि कहीं मैंने ज़ेना पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा न किया हो। क्या मैंने बहुत ज़्यादा खुले ढंग से बात की

थी ? क्या मैं ज़रूरत से ज्यादा भावुक हो गई थी ? मुझे उससे डर लगता है, ओह, मुझे उससे डर लगता है।'

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अपने विचारों में तल्लीन हो गईं ? निश्चय ही वे विचार चिन्ताजनक थे, लेकिन कहावत है, 'जहां चाह तहां राह।'

ज़ेना एकान्त पाकर अपने कमरे में चहलकदमी करने लगी, वह किसी गहरी सोच में डूबी थी, उसकी दोनों बांहें सीने पर बंधी थीं। उसें बहुत-सी बातें सोचनी थीं। वह अचेत ढंग से बार-बार कह रही थी, 'वक्त हो गया है, वक्त हो गया है !' इस संक्षिप्त वाक्य का क्या अर्थ है। रह-रहकर उसकी लम्बी रेशमी पलकों में आंसू चमकने लगते थे। उसने आंसुओं को रोकने या सुखाने की कोई कोशिश नहीं की। लेकिन उसका ख्याल था कि उसकी मां को परेशान नहीं होना चाहिए था, न ही अपनी बेटी के दिल की थाह लेने की कोशिश करनी चाहिए थी। ज़ेना ने मन में पक्का निश्चय कर लिया था और वह सब नतीजों को भुगतने के लिए तैयार थी।

जब कर्नल की बीवी चली गई तो नस्तास्या पेत्रोव्ना ने अंधेरे कोने से निकलकर मन ही मन कहा, 'अच्छा तो यह बात है। और मैं उस बूढ़े काउन्ट की खातिर गुलाबी रंग की बो बांधने जा रही थी। मैं कितनी बेवकूफ थी जो मैंने यकीन कर लिया कि काउन्ट मुझसे शादी कर लेगा। वाह री गुलाबी बो ! आहा, मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ! तो मैं भिखमंगी, फूहड़ औरत हूं ? मैंने दो सौ रूबल रिश्वत लिए थे। तुम्हारा ख्याल था कि मैं बिना कुछ लिए ही तुम्हें छोड़ दूंगी, बेगम साहिबा ? मैंने वह रकम बड़े शिष्ट ढंग से ली थी, इस मामले में जो खर्च हुए थे, उनके लिए···तुम्हें क्या पता कि मुझे भी किसीको रिश्वत देनी पड़ी हो। मैंने ताले को अपने हाथों से तोड़ने में संकोच नहीं किया, लेकिन तुम्हें क्या ? मैंने तुम्हारा गन्दा काम किया था बेगम साहिबा ! तुम्हें तो बैठकर कसीदा काढ़ने के सिवा और कोई काम नहीं है। ज़रा देखो, मैं तुम्हें

तुम्हारा कसीदा दिखाती हूं। तुम दोनों को पता चल जाएगा कि मैं किस तरह की फूहड़ औरत हूं। तुम भी नस्तास्या पेत्रोव्ना की आजिज़ी को देख लेना।'

७

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने अपने भीतर के शैतान को बहकने की खुली छूट दे दी थी। उन्होंने एक शानदार और दुःसाहसपूर्ण स्कीम बनाई थी। अपनी बेटी की शादी एक अमीर, अपाहिज काउन्ट से करना, शादी चुपके से हो ताकि किसीको पहले से पता न चले, अपने मेहमान की सठियाई बुद्धि और लाचारी का फायदा उठाना—मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के दुश्मनों के शब्दों में 'रात को चोर की तरह छिपकर काम करना', ये सारी बातें दुःसाहसपूर्ण होने के साथ गुस्ताखी-भरी भी थीं। स्कीम बड़ी शानदार थी, लेकिन असफल होने पर इसमें भयंकर बदनामी का खतरा भी था। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना को यह बात मालूम थी, लेकिन वे परेशान नहीं थीं। 'तुम नहीं जानतीं, मैं कितनी बार बाल-बाल बच चुकी हूं,' उन्होंने ज़ेना को बताया था। दरअसल वे सच ही कह रही थीं, वरना वे शहर की वीरांगना न कहलातीं।

इन सब बातों में लुटेरेपन की गंध आती थी, लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना को इसकी भी फिक्र न थी। इस मामले में तो वे इस अकाट्य सत्य से चिपकी हुई थीं, 'एक बार अगर उनकी शादी हो गई तो कोई उस शादी को तोड़ नहीं सकता।' इस सीधे-सादे वाक्य ने, जिसमें अनेक फायदे थे, मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की कल्पना को मुग्ध कर

लिया था। उनके खून में रोमांच हो रहा था और उनका सारा शरीर कांप रहा था। वे पागलों की तरह भावावेश में थीं, और मुश्किल से अपने-आपको संयत रख पा रही थीं। चूंकि उनमें असाधारण सृजनशक्ति और कल्पना थी, उन्होंने पहले से ही सारी कार्रवाई का नक्शा तैयार कर लिया था। यह नक्शा अभी कच्चा था, सिर्फ़ उसकी धुंधली रूपरेखा ही उनकी आंखों के आगे चमक रही थी। अभी अप्रत्याशित परिस्थितियों और छोटी-छोटी चीज़ों का सामना करना था, लेकिन मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को अपने ऊपर पूरा भरोसा था। वे असफलता के भय से परेशान नहीं हो रही थीं। ओह, बिलकुल नहीं ! वे जल्द से जल्द युद्ध के मैदान में कूदना चाहती थीं। देरी और रुकावटों की कल्पना से उनका मन अधीरता, एक शालीन अधीरता से जल रहा था। चूंकि हमने रुकावटों का ज़िक्र किया है, हम पाठकों से अपने विचार का विस्तृत विवरण देने की इजाज़त चाहते हैं। मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना जानती थीं कि सबसे भयंकर रुकावटें मोर्दासोव के नागरिक, विशेषकर कुलीन वर्ग की महिलाएं डालेंगी। वे तजुर्बे से जानती थीं कि मोर्दासोव की महिलाओं को उनसे कितनी सख्त नफरत है ! मिसाल के लिए उन्हें पूरी तरह मालूम था कि शहर के सब लोगों को उनके इरादों का पता चल गया है, हालांकि अभी तक किसीने इस बात का ज़िक्र एक-दूसरे से नहीं किया था। उनका यह कटु अनुभव था कि उनके घर की हर बात, चाहे वह कितनी ही गुप्त रखी जाती हो, शाम तक हर दूकान में, हर बाज़ारू औरत के पास पहुंच जाती थी। अभी तक तो मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को हमेशा अनिष्ट की आशंका ही हुई थी लेकिन इन आशंकाओं ने कभी उन्हें धोखा नहीं दिया। इस बार भी उन्हें धोखा नहीं मिला। दरअसल ये बातें हुई थीं, जिनके बारे में वे निश्चित रूप से कुछ नहीं जानती थीं। दोपहर के करीब, यानी काउन्ट के मोर्दासोव में आने के तीन घंटे बाद ही शहर में अजब किस्म की अफवाहें फ़ैलने लगीं। ये अफवाहें किसने फैलाईं यह

कोई नहीं जानता, लेकिन ये एकसाथ ही फैलने लगीं। लोगों ने एक-दूसरे को यकीन दिलाया कि मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने पहले से ही काउन्ट की शादी अपनी तेईस बरस की लड़की ज़ेना से करने का फैसला कर लिया था, कि उनके पास शादी के लिए दहेज नहीं है, कि मोज़ग्ल्याकोव का पत्ता काट दिया गया है, सारा मामला पक्का हो गया है और इकरारनामे पर दस्तखत हो चुके हैं। इस तरह की अफवाहें कैसे फैलीं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि सब लोग मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को इतनी अच्छी तरह समझते थे कि उनके गुप्त से गुप्त विचारों और आकांक्षाओं का पता भी उन्हें फौरन चल जाता था ? यह अफवाह एकदम गलत है—क्योंकि एक घंटे में ऐसे मामले भला कैसे तय हो सकते हैं ?—-ऐसी अफवाहों का साफ झूठ होना स्वतःसिद्ध था, क्योंकि किसीको अभी तक इन अफवाहों का मूल-स्रोत नहीं मालूम था—इन तमाम बातों के बावजूद भी मोर्दासोव के लोगों के विचार टस से मस नहीं हुए। अफवाहें फैलती रहीं और असाधारण रूप से जड़ें पकड़ती गईं। सबसे मज़ेदार बात तो यह है कि यह अफवाह ऐन उसी वक्त फैलनी शुरू हुई जिस वक्त मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने ज़ेना से इस विषय में बातचीत शुरू की थी। छोटे शहरों के लोगों का सहज ज्ञान ऐसा होता है ! कई बार तो छोटे शहरों के खबरें गढ़ने वालों का सहज ज्ञान चमत्कार की सीमा तक जा पहुंचता है—इसका कारण जानना मुश्किल नहीं। यह ज्ञान एक-दूसरे के अत्यंत अंतरंग, सम्पूर्ण और लंबे अध्ययन पर आधारित होता है। छोटे शहर का हर आदमी जैसे शीशे की पारदर्शी दीवारों के घर में रहता है, और वह अन्य सम्मानित नागरिकों से कुछ भी छिपा सके, इसकी संभावना बिलकुल नहीं होती। इन शहरों में लोग आपको पूरी तरह से जानते हैं और आपके बारे में कई ऐसी बातें भी जानते हैं जो स्वयं आपको नहीं मालूम होतीं। छोटे शहर का हर आदमी मनोवैज्ञानिक होता है जो इन्सान के दिल के हर रहस्य को सहज ज्ञान से ही जान लेता है। इसी-

लिए सच पूछिए तो छोटे शहरों में जब मैं मनोवैज्ञानिक और ज्योतिषियों की बजाय, बहुत अधिक संख्या में गधों को देखता हूं तो मुझे ताज्जुब होता है। लेकिन हम बहकने लगे हैं—यह एक असंगत विचार है। यह खबर बिजली की गर्ज और तूफान की तरह सारे शहर में फैल गई। काउन्ट से शादी करना सब लोगों को इतनी फायदे की, इतनी अक्लमंदी की बात मालूम हुई कि किसीका ध्यान इस बात की विलक्षणता की ओर गया ही नहीं। एक और बात ज़िक्र के काबिल है। किसी अज्ञात कारण से सब लोग मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोवना से भी ज्यादा ज़ेना से नफरत करते थे। शायद कुछ हद तक ज़ेना की खूबसूरती इसका कारण रही हो। जो भी हो, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोवना उन्हींमें से एक थीं—सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे। अगर वह शहर से चली जातीं तो शायद लोग उनके बगैर ऊब जाते। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोवना के बारे में प्रतिदिन नई कहानियां सुनने में आती थीं, जिससे मोर्दासोव के समाज की जिन्दादिली बनी रहती थी। उनके बगैर वहां की जिन्दगी नीरस हो जाती। लेकिन इसके विपरीत ज़ेना इस तरह पेश आती थी, जैसे वह मोर्दासोव की बजाय बादलों में रह रही हो। लगता था जैसे वह वहां की नहीं है और बाकी लोगों से ऊंची है, शायद अनजाने में वह लोगों से ऐसी गुस्ताखी से पेश आती थी, जिसे लोग बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। और अचानक वही ज़ेना, जिसकी इतनी बदनामी हुई थी, वही गुस्ताख ज़ेना अब करोड़ों की मालिक, एक काउन्टेस बनने वाली थी—और अभिजात-वर्ग में शामिल होने वाली थी, एक या दो साल में वह विधवा हो जाएगी और किसी ग्रैंड ड्यूक से यहां तक कि किसी जनरल से शादी कर लेगी। क्या पता वह किसी गवर्नर से शादी कर ले? (संयोगवश मोर्दासोव का गवर्नर विधुर था और स्त्रीजाति के प्रति उसके मन में पक्षपात की भावना काफी थी) फिर वह इलाके की सबसे प्रमुख महिला बन जाएगी—यह कल्पना करना ही लोगों के लिए अप्रिय था। इसलिए

इस खबर से कि ज़ेना काउन्ट से शादी करने जा रही है, मोर्दासोव में जितना क्षोभ फैला उतना पहले किसी खबर से नहीं फैला था। चारों तरफ क्रुद्ध चीत्कार होने लगा। 'यह पाप है।' 'यह नीचता है।' लोग चिल्लाए। 'बूढ़ा पागल है, उसे धोखा दिया जा रहा है, चालाकी से गुमराह किया जा रहा है, उसके दिमाग की कमज़ोरी का फायदा उठाया जा रहा है। बूढ़े को इन खून के प्यासे लोगों के पंजों से छुड़वाना चाहिए। यह सरासर लुटेरापन और नीचता है! और देखा जाए तो ज़ेना किस दृष्टि से अन्य लड़कियों से बेहतर है? और किसी लड़की की भी तो काउन्ट से शादी हो सकती है!' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने अभी तक इन सारी दलीलों और उक्तियों का सिर्फ अनुमान ही लगाया था, लेकिन उनके लिए इतना ही काफी था। वे अच्छी तरह से जानती थीं कि सब के सब लोग उनके रास्ते में रुकावट डालने के लिए हर तरह के संभव और असंभव प्रयत्न करेंगे। क्या वे पहले से ही काउन्ट का अपहरण करने की कोशिश नहीं कर रहे थे, ताकि उन्हें काउन्ट को छुड़ाने के लिए शक्ति का प्रयोग करना पड़े? और अगर वह काउन्ट को पकड़ने और उन्हें बरगलाकर अपने पास लाने में सफल भी हो गई तब भी काउन्ट के गले में ज़्यादा देर तक पट्टा बांधकर नहीं रख पाएंगी। और फिर इस बात की क्या गारन्टी है कि दो या तीन घंटों में मोर्दासोव की महिला-मंडली विजेताओं की तरह उसके ड्राइंगरूम में न आ धमकेगी? वे लोग ऐसे किसी बहाने से आएंगी कि उन्हें घर में न आने देना असंभव होगा। अगर आप उनके आने पर दरवाज़ा बन्द कर लें तो वे खिड़की के रास्ते भीतर आ जाएंगी। यह बात, चाहे आप इसपर विश्वास न कर सकें, पहले मोर्दासोव में हो चुकी है। कहने का मतलब यह है कि अब मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के पास गंवाने के लिए एक घंटा, एक क्षण भी नहीं था, लेकिन अभी तो काम शुरू भी नहीं हुआ था। अचानक मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के दिमाग में एक शानदार विचार आया

और फौरन पनप भी गया। ठीक समय आने पर हम इस नये विचार के बारे में बताना नहीं भूलेंगे। इस वक्त हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि हमारी हीरोइन की गाड़ी मोर्दासोव की सड़कों पर तेजी से भाग रही थी—काउन्ट को वापस लाने के लिए वे ज़रूरत पड़ने पर युद्ध करने के लिए भी तयार थीं। इस समय वे क्रुद्ध और उत्तेजित थीं। काउन्ट उन्हें कहां मिलेंगे और वे काउन्ट को कैसे वापस लाएंगी, यह अभी उन्हें मालूम नहीं था, लेकिन वे यह निश्चित रूप से जानती थीं, कि अपने इरादों से एक इंच भी पीछे हटने की बजाय वे सारे मोर्दासोव को पाताल भेजना ज्यादा पसन्द करेंगी।

पहले कदम में उन्हें शानदार सफलता मिली। वे काउन्ट को लोगों के घरों से बाहर पकड़ने में कामयाब हो गईं और किसी तरह अपने साथ खाने पर ले आईं। अगर यह पूछा जाए कि वे कैसे अन्ना निकोलाईव्ना को नीचा दिखा आईं, जबकि सारे तुरप के पत्ते तो उनके दुश्मनों के हाथ में थे, तो मैं यह ज़रूर कहूंगा कि मैं ऐसे सवाल को मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना का अपमान समझता हूं। वे अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा पर विजय प्राप्त कर लेंगी, भला इस बात में किसीको शक हो सकता है? काउन्ट उनकी बैरन के यहां जा ही रहे थे कि मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने जाकर उन्हें गिरफ्तार करके अपनी गाड़ी में पटक दिया। मोज़ग्ल्याकोव ने बहुत दलीलें दीं, क्योंकि उसे बदनामी का डर था, लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने एक न सुनी। खतरे के मौके पर मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना को कभी बदनामी से डर नहीं लगता था, क्योंकि उनका सिद्धान्त था कि सफलता पाने के लिए किसी भी साधन का इस्तेमाल किया जा सकता है—इसीलिए मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अपने दुश्मनों से ऊंची उठ जाती थीं। कहना न होगा कि काउन्ट ने इस बात का विशेष विरोध नहीं किया और अपनी आदत के मुताबिक जल्द ही सब कुछ भूल गए और बेहद खुश नज़र आने लगे। खाने के दौरान काउन्ट लगातार चहकते

रहे, हंसी-मजाक और चुटकलेबाज़ी कहते रहे—उन्होंने अधूरी कहानियां सुनाईं और अपने भुलक्कड़पन में एक विषय के बाद दूसरे विषय पर बातें करने लगे। नतालिया दमित्रीव्‌ना के यहां काउन्ट ने शैम्पेन के तीन गिलास पिए थे, खाने के दौरान और शराब पी, जिससे उनका दिमाग चकरा गया। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्‌ना खुद शराब ढालती जा रही थीं। खाना बहुत बढ़िया बना था, उस बदमाश निकिता ने अपनी मालकिन की लाज रख ली थी। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्‌ना ने बड़ी शिष्टता से काउन्ट की खातिरदारी की और वातावरण की ज़िन्दादिली बनाए रखी। लेकिन बाकी सब लोग गन्दे नाले के पानी की तरह नीरस थे। ऐसा लगता था जैसे सबने कोई साज़िश कर रखी हो। ज़ेना ने एक संजीदा खामोशी अख्तियार कर रखी थी। नस्तास्या पेत्रोव्‌ना निराश मुंह लटकाए बैठी थी; यहां तक कि वह बार-बार मोज़ग्ल्याकोव की तरफ इशारे कर रही थी, लेकिन मोज़ग्ल्याकोव उन इशारों की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा था। अगर मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्‌ना न होतीं तो खाने के वक्त मौत जैसा मातम छा जाता।

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्‌ना बेहद परेशान थीं। और बातों के अलावा ज़ेना का मातमी चेहरा और रोने से लाल हुई आंखों को देखकर वे बेहद घबरा उठी थीं। इसके साथ ही एक और दिक्कत भी थी। सारा काम बेहद जल्दी होना चाहिए था, लेकिन कमबख्त मोज़ग्ल्याकोव लकड़ी के कुन्दे की तरह लापरवाही से बैठा था, जैसे उसने रास्ते में रुकावट डालने का निश्चय कर लिया हो। उसकी मौजूदगी में मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्‌ना अपनी बात आखिर कैसे शुरू कर सकती थीं? वे परेशानी से उठ खड़ी हुईं। अब आप ज़रा उनके ताज्जुब और उनकी सुखद घबराहट की कल्पना कीजिए, जब सब लोगों के उठते ही, मोज़ग्ल्याकोव उनके पास आया और अचानक उसने क्षमा-याचना करते हुए फौरन बाहर जाने की इजाज़त मांगी।

'तुम कहां जा रहे हो ?' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने जरूरत से ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हुए कहा।

'देखिए मारया अलैक्जेंड्रोव्ना, मुझे न जाने क्या हो गया है, मैं नहीं जानता कि आपको कैसे बताऊं···ईश्वर के नाम पर आप मुझे सलाह दें,' मोजग्ल्याकोव बोला। वह घबराया-सा दिखाई दे रहा था।

'क्यों ? क्या बात है ?'

'आज मैं अपने धर्मपिता बोरोदुयेव से मिला था। आप उस व्यापारी को जानती हैं न ! बूढ़ा मुझसे सख्त नाराज है। उसका कहना है कि मैं घमंडी हो गया हूं। मैं मोर्दासोव तीन बार आ चुका हूं, लेकिन उससे एक बार भी नहीं मिला। उसने कहा—आज मेरे यहां चाय पीने आना। ठीक चार बज गए हैं और वह पुराने ढंग से सोकर उठने के बाद चार और पांच बजे के बीच चाय पीता है। मैं क्या करूं ? मैं जानता हूं कि आपको छोड़कर जाना शिष्टाचार के विरुद्ध है, लेकिन जरा सोचिए—उसने मेरे स्वर्गीय पिता को आत्महत्या करने से बचा लिया था, जब उन्होंने सारे सरकारी पैसों को जुए में बर्बाद कर डाला था। इसीलिए उसे मेरा धर्मपिता बनने के लिए कहा गया था। अगर ज़ेना के साथ मेरी शादी हो गई तो मेरे पास सिर्फ डेढ़ सौ भूमिदास रह जाएंगे। और उसके पास लोगों का कहना है कि दस लाख रूबल हैं—शायद इससे भी कहीं ज्यादा, और उसका कोई बालबच्चा नहीं है। अगर मैं उसकी नजरों में अच्छा बना रहा तो वह अपनी वसीयत में मेरे लिए एक लाख रूबल छोड़ जाएगा और आप जानती हैं कि वह सत्तर बरस का है।'

'हे ईश्वर, तो फिर तुम क्या सोच रहे हो ? देर किसलिए कर रहे हो ?' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना जोर से बोलीं। वे अपनी खुशी को छिपा नहीं पा रही थीं। 'फौरन जाओ ! ऐसी बातों में भी भला कोई खिलवाड़ किया करता है ? अच्छा, तो इसीलिए खाने के वक्त तुम इतने गुमसुम थे, मैंने फौरन तुम्हारी हालत भांप ली थी ! जाओ, माई डियर,

जाओ ! तुम्हें आज सुबह ही अपने धर्मपिता से मिलने जाना चाहिए था, ताकि तुम यह दिखा सकते कि तुम उनकी मेहरबानी की कितनी कद्र करते हो। आह, नौजवान कितने लापरवाह होते हैं !'

'वाह मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना !' मोज़ग्ल्याकोव चकित स्वर में बोला, "आपने खुद ही तो मुझे डांटा था कि मैं उसका साथ क्यों नहीं छोड़ता ! आपने कहा था कि वह क्षुद्र दुकानदारों और सूदखोरों के साथ सांठ-गांठ करता है, वह मामूली किसान है।'

'वाह माई डीयर ! इन्सान की ज़बान से न जाने कितनी फिजूल बातें निकल जाती हैं। मुझसे भी गलती हो सकती है। मैं कोई संत नहीं हूं। मैंने ऐसी बात कभी कही थी, यह तो मुझे ठीक से याद नहीं; शायद कभी वैसे ही मैंने यह कह दिया हो···लेकिन यह मत भूलो कि तब तुम ज़ेना से प्रेम-निवेदन नहीं कर रहे थे—चाहे यह मेरा स्वार्थीपन ही हो, लेकिन अब मैं अपना दृष्टिकोण बदले बगैर नहीं रह सकती और भला कौन मां इसलिए मुझे दोष देगी ? क्षण-भर की भी देर मत करो ! सारी शाम वहीं रहो—और तुम सरसरी तौर पर मेरा भी ज़िक्र कर सकते हो। उन्हें कहना कि मैं उनकी इज्ज़त करती हूं, उन्हें बेहद चाहती हूं। लेकिन इस बात को ज़रा होशियारी से कहना ! हे ईश्वर ! मैं तो इस बात को एकदम भूल गई थी ! मुझे तो खुद ही तुमसे यह कहना चाहिए था।'

'आपने मुझे फिर से जिन्दा कर दिया है मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना !' मोज़ग्ल्याकोव ने आनन्द से विभोर होकर कहा, 'मैं कसम खाकर कहता हूं कि अब हमेशा, हर बात में आपका कहा माना करूंगा, ज़रा सोचिए तो सही, मुझे आपको यह बताने में भी डर लग रहा था—अच्छा गुड-बाई, मैं चलूं ! मेरी तरफ से ज़िनेदा अफानासीव्ना से माफी मांग लीजिएगा, मैं ज़रूर सीधे यहीं लौटकर आऊंगा···'

'मेरा आशीर्वाद, मेरे प्यारे ! याद रखना, मेरा ज़िक्र ज़रूर करना ! वह बुड्ढा सचमुच बड़ा प्यारा आदमी है। मैंने बहुत दिनों से उसके प्रति

अपना दृष्टिकोण बदल लिया है। उसमें परंपरागत सच्चे रूसी के दर्शन होते हैं, सच्चे रूसी के। अलविदा, मेरे प्यारे अलविदा !'

'ओह, कितना अच्छा हुआ कि उससे पिंड छूटा ! ईश्वर खुद मेरी मदद कर रहा है !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना खुशी से हांफती हुई सोचने लगीं।

पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच हॉल में जाकर अभी अपना समूर का कोट पहन ही रहा था कि सहसा नस्तास्या पेत्रोव्ना जैसे आकाश से टपक पड़ीं। वह मोज़ग्ल्याकोव की ताक में बैठी थीं।

'तुम किधर जा रहे हो ?' नस्तास्या पेत्रोव्ना ने उसकी बांह पकड़कर पूछा।

'बोरोदुयेव से मिलने। वह मेरा धर्मपिता है। मेरे बप्तिस्मा के समय उसे हाथ में पवित्र जल का पात्र लेकर खड़े होने का गौरव प्राप्त हुआ था···बूढ़ा बड़ा अमीर आदमी है। वह मेरे नाम भी कुछ छोड़ जाएगा। मुझे उसकी अच्छी नज़रों में रहना चाहिए।'

पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच बेहद खुश था।

'बोरोदुयेव के यहां ? तब तुम अपनी दुल्हिन से हमेशा के लिए विदा लेकर जा सकते हो,' नस्तास्या पेत्रोव्ना कर्कश स्वर में बोली।

'क्या मतलब ?'

'वही जो मैं कह रही हूं। तुम्हारा ख्याल था कि वह पहले से ही तुम्हारी हो चुकी है, क्यों ?अब उसकी शादी काउन्ट से होने वाली है। मैंने अपने कानों से सब कुछ सुना है।'

'काउन्ट से ! बस, रहने दो, नस्तास्या पेत्रोव्ना···'

'रहने दूं ? किसलिए ? इधर आओ ! खुद सब कुछ देखना और सुनना चाहते हो ? अपना कोट उतारकर मेरे साथ चले आओ !'

पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच पर जैसे वज्रपात हुआ। वह कोट उतारकर पंजों के बल नस्तास्या पेत्रोव्ना के पीछे-पीछे चला आया। वह उसे उसी

अंधेरे कोने में ले गई जहां से उसने सुबह झांककर चोरी से सारी बातें सुनी थीं।

'लेकिन यह सब क्या हो रहा है, नस्तास्या पेत्रोव्ना? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।'

'तुम ज़रा झुककर सुनोगे तो सब कुछ समझ में आ जाएगा। शायद कॉमेडी अभी शुरू होने ही वाली है।'

'कौनसी कॉमिडी?'

'शि: ! इतनी ज़ोर से मत बोलो! कॉमेडी यही है कि तुम्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। आज जब तुम काउन्ट के साथ चले गए थे, तब मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना पूरे एक घंटे तक ज़ेना को समझाती रही थीं कि उसे काउन्ट से शादी कर लेनी चाहिए। उनका कहना था कि काउन्ट को फुसलाने से ज़्यादा आसान काम कोई नहीं है। काश, तुम उनकी बातें सुन सकते—मेरा तो जी मिचलाने लगा था। मैंने यहीं खड़े होकर सारी बातें सुनी थीं। ज़ेना राज़ी हो गई थी। काश तुम सुन सकते, वे दोनों मिलकर किस तरह तुम्हें गालियां दे रही थीं! वे तुम्हें बेवकूफ समझती हैं, और ज़ेना ने तो साफ-साफ कह दिया था कि चाहे कुछ हो वह तुमसे शादी नहीं करेगी। और मैं कितनी बेवकूफ थी! मैं गले में लाल रंग का रूमाल बांधने जा रही थी, सुनो! सुनो तो सही!'

'लेकिन यह तो नीचतम विश्वासघात होगा', पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच मूर्खों की तरह नस्तास्या पेत्रोव्ना का मुंह ताकते हुए फुसफुसाया।

'तुम सुनो तो सही, तुम्हें अभी और शानदार बातें सुनने को मिलेंगी।'

'किधर से सुनूं?'

'ज़रा नीचे झुक जाओ—उस छोटे छेद की तरफ।'

'लेकिन नस्तास्या पेत्रोव्ना, मैं छिपकर किसीकी बातें नहीं सुन सकता!'

'यह सोचने के लिए अब बहुत देर हो चुकी है ! अब तुम्हें अपना अहंकार ताक पर रखना पड़ेगा। मेरे प्यारे ! चूंकि तुम यहां आ ही गए हो, तो सुन लो।'

'ओह, लेकिन—'

'अगर तुम छिपकर बात नहीं सुन सकते तब, अगर कोई तुम्हें उल्लू बनाए तो तुम्हें बुरा नहीं मानना चाहिए। बहुत खूब ! कोई तुम्हारी मदद करने की कोशिश करे तो तुम बनने लगते हो। मुझे कोई परवाह नहीं, बिलकुल मैं अपने लिए नहीं कह रही...मैं तो शाम तक यहां से जा चुकी होऊंगी !'

पावेल अलैक्जैंड्रोविच ने किसी तरह अपने दिल को पक्का किया और छेद में से झांकने लगा। उसका दिल जोर से धड़क रहा था और उसकी कनपटियां फड़क रही थीं। वह क्या कर रहा था, इसकी उसे कोई होश नहीं थी !

८

'अच्छा, तो काउन्ट, नतालिया दमित्रीव्ना के यहां खूब मजे में वक्त कटा न !' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने भावी युद्धक्षेत्र की ओर एक व्यग्र दृष्टि डालते हुए कहा। वे अधिक से अधिक मासूम ढंग से वार्तालाप शुरू करना चाहती थीं। उनका हृदय आशंका और उत्तेजना से धड़क रहा था।

खाने के बाद काउन्ट को फौरन ड्राइंगरूम में धकेला गया, जिसमें सुबह उनका स्वागत हुआ था। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना के यहां सभी दावतें और गंभीर आयोजन इसी कमरे में किए जाते थे। उन्हें इस कमरे पर

बड़ा अभिमान था। छह गिलास शराब पीने के बाद बूढ़े काउन्ट को एक सुखद कमज़ोरी महसूस हो रही थी और उनके पैर लड़खड़ा रहे थे। लेकिन वह पहले से भी ज़्यादा, लगातार बकवास किए जा रहे थे। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अच्छी तरह जानती थी कि काउन्ट का यह क्षणिक उल्लास जल्द ही खत्म हो जाएगा, क्योंकि उनका सिर भारी हो रहा था, और उन्हें नींद आने वाली थी। इसी एक क्षण से फायदा उठाया जा सकता था। दुबारा युद्ध-क्षेत्र की तरफ नज़र डालने पर उनका हृदय संतोष और मातृ-सुलभ प्रसन्नता से धड़कने लगा, जब उन्होंने बूढ़े आशिक-मिज़ाज काउन्ट को ज़ेना की तरफ प्रसन्न मुद्रा से देखते हुए पाया।

'बड़ी दिलचस्प है, बड़ी शानदार औरत है नतालिया दमित्रीव्ना।' काउन्ट धीमी आवाज़ में बोले।

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की आंखों से चिनगारियां फूटने लगीं, 'अच्छा काउन्ट! अगर तुम्हारी नतालिया दमित्रीव्ना इतनी शानदार औरत है तो, मैं फिर आपसे क्या कह सकती हूं! आप यहां की सोसाइटी को नहीं जानते, बिलकुल नहीं जानते! वह संदिग्ध सच्चरित्रा और उदात्त भावनाओं का पाखंड करती है, वह एक हास्यास्पद जीव है, सिर्फ उसने अपने ऊपर एक सुनहरी मुलम्मा चढ़ा रखा है। इस मुलम्मे को हटा दीजिए तो आपको फूलों के नीचे असली नर्क दिखाई देगा, असली ततैयों का छत्ता, जिसमें अगर आप चले गए तो आपको खा लिया जाएगा, आपकी एक भी हड्डी बाकी नहीं बचेगी।'

'नहीं तो। क्या सच? तुमने तो मुझे आश्चर्य में डाल दिया!'

'लेकिन मैं आपको यकीन दिलाती हूं कि यह सच है! आह, मेरे प्रिंस! सुनो ज़ेना, अपने कर्तव्य से लाचार होकर मुझे काउन्ट को नतालिया की बदनामी का किस्सा सुनाना पड़ेगा—पिछले हफ्ते की बात याद है न? काउन्ट—वही नतालिया दमित्रीव्ना, गुणों की खान जिस-

पर आप इतने लट्टू हैं, ओह मेरे प्यारे काउन्ट ! मैं कसम खाती हूं कि मैं किसीकी निन्दा नहीं करती, लेकिन मैं आपको यह किस्सा ज़रूर सुनाऊंगी, चाहे आपको इसे सुनकर हंसी ही क्यों न आए। मैं आपको ख़ुर्दबीन के ज़रिए यहां के लोगों का असली रूप दिखाना चाहती हूं। पन्द्रह दिन हुए यही नतालिया दमित्रीव्ना मुझसे मिलने आई थी। कॉफी लाई गई। मुझे न जाने किस काम से कमरे से बाहर जाना पड़ा। मुझे अच्छी तरह याद है, चांदी की चीनीदानी ऊपर तक चीनी से भरी थी। जब मैं लौटकर आई तो क्या देखती हूं—चीनीदानी के बिलकुल पेंदे में चीनी के सिर्फ तीन टुकड़े बच गए थे ! कमरे में नतालिया दमित्रीव्ना के सिवा और कोई आदमी नहीं था। क्यों आपकी क्या राय है ? उसकी पत्थर की बनी एक हवेली है और बेशुमार धन-दौलत है। यह घटना बड़ी हास्यास्पद और क्षुद्र है, लेकिन आप इस मिसाल से समझ जाएंगे कि हमारे यहां के शिष्ट समाज के तौर-तरीके क्या हैं।'

'क्या सच ?' काउन्ट ने सच्ची हैरत से पूछा। 'लेकिन इतना लालच ! तुम्हारे कहने का मतलब है कि वह सारी चीनी अकेली ही खा गई ?'

'ऐसी है आपकी शानदार औरत, काउन्ट ! कहिए इस घटना के बारे में आपकी क्या राय है ? मेरा ख्याल है कि अगर मैं ऐसा घृणित काम करने की बात सोच भी सकती तो फौरन वहीं मर जाती।'

'हां, हां···लेकिन तुम जानती हो, फिर भी वह एक सुन्दरी है।'

'नतालिया दमित्रीव्ना ? वह देखने में बिलकुल टब मालूम देती है। ओह काउन्ट, काउन्ट ! आप इस तरह की बात कह रहे हैं ! मुझे आपसे ज्यादा विवेक की उम्मीद थी।'

'हां, हां—है तो टब···लेकिन उसका शरीर कितना सुडौल है और वह नन्ही लड़की जो नाच रही थी, उसके शरीर की बनावट भी···'

'सोनिया ? अरे वह तो निरी बच्ची है काउन्ट ! वह अभी चौदह

बरस की है।'

'हां···हां, लेकिन उसमें कितनी फुर्ती है और उसका शरीर···उभर रहा है। कितनी प्यारी है! और दूसरी लड़की जो उसके साथ नाच रही थी—उसका शरीर भी···'

'ओह, शायद आप उस बदनसीब यतीम लड़की की बात कर रहे हैं। वह अक्सर उनके यहां रहती है!'

'यतीम! हां थी तो मैली-कुचैली हालत में—कम से कम उसे अपने हाथ तो धो लेने चाहिए थे लेकिन···उसमें गज़ब का आकर्षण था।'

यह कहकर काउन्ट ने अपने शीशे में से उत्सुकतापूर्वक ज़ेना को देखा और खुशी से जैसे पिघलकर बुदबुदाए, 'कैसी खूबसूरत है!'

'ज़ेना हमें प्यानो पर कुछ सुनाओ···या, नहीं गाओ। काउन्ट, आपने ज़ेना का गाना नहीं सुना! आप उसे संगीतकार कह सकते हैं। एकदम संगीतकार!' और जब ज़ेना उठकर इठलाती हुई, थिरकती चाल से प्यानो की तरफ चली गई तो बेचारा काउन्ट फौरन परास्त हो गया। मारया अलक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने धीमी आवाज़ में कहा, 'काश, आप जान सकते वह कितनी अच्छी बेटी है! उसमें प्यार करने की कितनी क्षमता है! मुझसे उसका कितना प्यार है, आह, उसकी भावनाएं, उसका दिल।'

'हां, हां, भावनाएं···जानती हो सारी ज़िन्दगी में मैंने सिर्फ एक ही औरत देखी है जो इतनी खूबसूरत थी।' काउन्ट ने क्लान्त स्वर में कहा, 'वह थी स्वर्गीय काउन्टेस नेनस्काया। उसे मरे तीस बरस हो गए हैं। वह बड़ी शानदार औरत थी, उसकी खूबसूरती का बयान नहीं किया जा सकता—बाद में उसने अपने रसोइए से शादी कर ली थी।'

'रसोइए से, काउन्ट?'

'हां, हां अपने रसोइए से—विदेश में, वह फ्रेंच था। काउन्टेस ने उसे भी काउन्ट बनवा दिया था। वह बड़ा दर्शनीय पुरुष था, और बहुत

पढ़ा-लिखा भी था, उसकी छोटी-छोटी मूंछें थीं।'

'और···और क्या उनकी आपस में पट गई थी, काउन्ट ?'

'हां, हां, आपस में खूब पटती थी। दरअसल शादी के जल्द बाद ही वे एक-दूसरे से अलग हो गए थे। उसके पति ने उसे लूट लिया था और उसे छोड़कर चला गया था। मेरा ख्याल है कि किसी चटनी के बारे में उनका झगड़ा हुआ था···'

'मैं क्या बजाऊं, मां ?' ज़ेना ने पूछा।

'ज़ेना, तुम कुछ गाकर सुनाओ ! आप नहीं जानते, ज़ेना कितना अच्छा गाती है। आप संगीत के शौकीन हैं काउन्ट ?'

'हां, हां, चार्मिंग ! चार्मिंग ! मुझे संगीत से प्यार है। जब मैं विदेश में था तो मैं बीटोवन को भी जानता था !'

'बीटोवन ! ज़रा सोचो तो सही ज़ेना, काउन्ट बीटोवन से परिचित थे। ओह काउन्ट, क्या आप सचमुच बीटोवन को जानते थे ?' मारया अलेक्ज़ेन्ड्रोव्ना आनन्द से विभोर हो गईं।

'हां, हां ! हम दोनों बड़े अंतरंग मित्र थे ! उसकी नाक पर हमेशा नसवार लगी रहती थी ! वह बड़ा विलक्षण आदमी था।'

'कौन, बीटोवन ?'

'हां, हां, बीटोवन। शायद वह आदमी बीटोवन नहीं, बल्कि कोई दूसरा जर्मन था। विदेशों में बहुत से जर्मन रहते हैं, लेकिन मेरा ख्याल है, मैं फिर भूल गया हूं—'

'मैं कौन-सा गीत गाऊं मां ?' ज़ेना ने पूछा।

'ओह ज़ेना ! वह वीररस वाला गीत सुनाओ। किले की महिला, कप्तान और उसके गायक कवि का गीत। ओह काउन्ट ! मुझे वीररस से कितना प्रेम है ! वे किले ! मध्ययुग की वह ज़िन्दगी ! गायक, हरकारे, दंगल !···मैं तुम्हारा साथ दूंगी। ज़ेना। इधर आइए काउन्ट, और नज़दीक···ओह वे किले, ओह, ओह !'

'हां, हां···किले। मुझे भी किले अच्छे लगते हैं, काउन्ट उत्साहपूर्वक बुदबुदाए। उन्होंने अपनी असली आंख ज़ेना पर गड़ा दी, 'ओह! हे ईश्वर, यह गीत! मैं यह गीत जानता हूं। मैंने बहुत दिन हुए यह गीत सुना था। इससे मुझे एक बात याद आ गई—हे ईश्वर!'

ज़ेना के गाने का काउन्ट परक्या असर हुआ, इसका ज़िक्र मैं यहां नहीं करूंगा। ज़ेना ने एक पुराना फ्रेंच बैलेड गाया जो कभी बहुत लोकप्रिय था। ज़ेना बहुत सुन्दर गाती थी। उसकी साफ, शक्तिशाली और मन्द्र स्वर की आवाज़ सीधे दिल में चुभती थी। ज़ेना का खूबसूरत चेहरा, आंखें, अलौकिक पतली उंगलियां जिनसे वह प्यानो बजा रही थी, उसके काले सघन, चमकीले केश, उत्तेजित वक्ष, उसके सुन्दर अहंकार भरे, उदात्त शरीर ने बेचारे बूढ़े पर जादू फेर दिया। जब तक वह गाती रही बूढ़े की नज़रें उसपर गड़ी रहीं और भावावेश से उसका गला रुंध गया। उसका बूढ़ा दिल जिसमें शैम्पेन से, संगीत से, और नव जागरित स्मृतियों से गर्मी आ गई थी, (कौन इन्सान ऐसा है जिसकी प्रिय स्मृतियां न हों?) और उनका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, बरसों से उन्हें ऐसी धड़कन महसूस नहीं हुई थी···वह ज़ेना के चरणों में गिरने के लिए बेताब हो रहे थे—जब ज़ेना का गाना खत्म हुआ तो काउन्ट की आंखों में आंसू आ गए थे।

'ओ, मेरी प्यारी बच्ची!' कहकर काउन्ट ने ज़ेना की उंगलियों को चूम लिया। 'ओह, मेरी जादूगरनी, अब मुझे गुज़रा ज़माना याद आ गया, ओह, मेरी प्यारी बच्ची!'

भावावेश के कारण काउन्ट अपना वाक्य पूरा न कर सके।

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना को लगा कि उनका मौका आ गया है। वे गम्भीर स्वर में बोलीं—'आप अपने को तबाह क्यों कर रहे हैं काउन्ट? इतनी भावुकता, ज़िन्दादिली और आध्यात्मिक वैभव के होते हुए भी आपने अपने-आपको एकान्त में क्यों दफना दिया है। अपने दोस्तों से,

इन्सानों से कतराना ! लेकिन यह एक अक्षम्य अपराध है। ज़रा सोचिए काउन्ट, ज़िन्दगी को सही नज़र से देखिए। अपने अतीत की स्मृतियों को फिर से याद कीजिए—अपने सुनहरी यौवन की स्मृतियों को, उन सुनहरी निश्चिन्त दिनों की स्मृतियों को—उन्हें फिर से ताज़ा कीजिए। फिर से समाज में, इन्सानों के बीच रहना शुरू कीजिए ! विदेश जाइए, इटली में, स्पेन में। स्पेन में काउन्ट ! आपको एक अभिभावक की ज़रूरत है, एक ऐसे दिल की जो आपसे प्यार कर सके, आपकी इज़्ज़त कर सके, आपसे हमदर्दी कर सके। लेकिन आपके अनेक मित्र तो हैं। उन्हें बुलाइए, वे भागे-भागे आएंगे। झुंड के झुंड ! मैं खुद सबसे पहले सब कुछ छोड़कर आपकी पुकार पर दौड़ी आऊंगी। मुझे अपनी मित्रता की याद है काउन्ट। मैं अपने पति को छोड़कर आपका अनुसरण करूंगी··· अगर मैं जवान होती और अपनी बेटी की तरह खूबसूरत होती तो मैं आपकी साथिन, मित्र और अगर आप चाहते तो आपकी पत्नी भी बन जाती।'

'मुझे यकीन है कि अपनी जवानी के दिनों में तुम भी बड़ी खूबसूरत रही होगी।' काउन्ट ने अपनी नाक साफ करते हुए कहा, उनकी आंखों में आंसू आ गए थे।

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने एक उदास स्वर में उत्तर दिया, 'हम अपने बच्चों में ज़िन्दा रहते हैं, काउन्ट, मेरा भी एक संरक्षक फरिश्ता है—वह है मेरी बेटी, जो मेरे विचारों, मेरे दिल और मेरी ज़िन्दगी की दोस्त है काउन्ट ! वह अभी तक शादी के सात प्रस्तावों को ठुकरा चुकी है, वह मुझसे अलग नहीं होना चाहती।'

'अच्छा तो जब तुम मेरे साथ विदेश चलोगी तो वह भी तुम्हारे साथ चलेगी ? तब तो मैं ज़रूर विदेश जाऊंगा, ज़रूर ! और अगर मैं इतना खुशकिस्मत होता कि यह उम्मीद कर सकता—लेकिन वह बड़ी प्यारी, प्यारी बच्ची है, ओह मेरी प्यारी बच्ची !' काउन्ट फिर उसकी

उंगलियां चूमने लगा। बेचारे बूढ़े काउन्ट ज़ेना के आगे घुटनों के बल गिरने के लिए भी तैयार थे।

'ओह काउन्ट ! आप पूछ रहे हैं कि आप उम्मीद कर सकते हैं या नहीं ?' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना में वाक्-चातुर्य का नया विस्फोट हुआ। 'आप भी कितने अजब हैं काउन्ट ! आप सचमुच अपने को इस योग्य नहीं समझते कि महिलाएं आपपर आकर्षित हों ? जवान होने से ही कोई आदमी सुन्दर नहीं हो जाता। याद रखिए कि आप हमारे अभिजातवर्ग के अवशेष हैं। आप सबसे अधिक परिष्कृत, सुसंस्कृत भावनाओं और शिष्ट आचरण के प्रतिनिधि हैं। क्या मोरिया बूढ़े मेज़ेप्पा से प्यार नहीं करती थी ? मुझे याद है मैंने सम्राट् लुई के दरबार के सुयोग्य मारक्विस लोज़ियन के बारे में पढ़ा था···कौन से लुई के, यह मैं भूल गई हूं··· खैर लेज़ियन ने बुढ़ापे में राजदरबार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का दिल जीता था। और आपसे किसने कहा कि आप बूढ़े हैं ? आपको यह किसने सिखाया ? भला आप जैसे लोग भी कभी बूढ़े होते हैं ? आपमें कितनी भावुकता, विवेक, ज़िन्दादिली, हाज़िरजवाबी, और शिष्टाचार है ! आप तो किसी चश्मे के पास एक खूबसूरत जवान बीवी को लेकर चले जाएं, मिसाल के लिए, जो मेरी ज़ेना जैसी हो—मेरा मतलब ऐन ज़ेना ही नहीं है, मैं तो सिर्फ मिसाल दे रही हूं—फिर आप देखेंगे कि आपकी सेहत पर कितना शानदार असर होता है। आप अभिजातवर्ग के स्मृति-चिह्न और वह सुन्दरियों में सुन्दरी। आप विजेता की तरह उसका हाथ पकड़कर चलेंगे, वह शानदार लोगों के सामने गाएगी, आप अपने चुट-कुले सुनाएंगे और सब लोग आपको देखने के लिए टूट पड़ेंगे। यूरोप भर में आपकी ही चर्चा होगी, क्योंकि सारे अखबारों में आप ही का ज़िक्र रहेगा···आह, काउन्ट, प्यारे काउन्ट ! और आप पूछते हैं कि क्या आप इतने खुशकिस्मत हैं कि···।'

'लेख···हां-हां। अखबारों में लेख छपते हैं।' काउन्ट बुड़बुड़ाए।

उन्हें मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना की अनर्गल बातें पूरी तरह समझ में नहीं आई थीं, और वह पहले से ज्यादा भावुक हो उठे थे, 'लेकिन···मेरी बच्ची अगर तुम थक नहीं गईं तो वह गीत फिर सुनाओ।'

'ओह काउन्ट इसे और भी कई गीत आते हैं, इस गीत से कहीं अच्छे। आपको लिरोन्देल की याद है काउन्ट ! शायद आपने इस गीत को कहीं सुना होगा।'

'मुझे याद है, या यूं कहूं कि मुझे भूल गया है। नहीं, नहीं, मैं वही गीत सुनना चाहता हूं जो इसने अभी गाया था। मैं लिरोन्देल नहीं चाहता, मुझे वही गीत चाहिए।' काउन्ट ने बच्चों की तरह मिन्नत की।

ज़ेना ने फिर वही गीत गाया। काउन्ट अपने ऊपर संयम न रख सके, वे ज़ेना के कदमों पर गिर पड़े और रोने लगे।

'ओ किले की कप्तान !' काउन्ट ने आवेश और बुढ़ापे से कांपती हुई आवाज़ में कहा, 'ओ मेरी किले की कप्तान ! मेरी प्यारी बच्ची ! तुमने मुझे बहुत पुरानी बातों की याद दिलाई है। मेरी किस्मत उम्मीद से कहीं ज्यादा बिगड़ गई। मैं वाईकाउन्टेस के साथ मिलकर गीत गाया करता था। यही गीत—और अब, अब मैं नहीं जानता—'

इन शब्दों के साथ ही काउन्ट हांफने लगे और उनका गला रुंध गया।

साफ ज़ाहिर था कि काउन्ट की ज़बान बेकाबू हो रही थी। उनके कुछ शब्दों को तो समझ सकना भी असंभव था। सिर्फ इतनी ही बात साफ थी, कि काउन्ट तीव्र भावावेश में थे। मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने फौरन आग पर तेल छिड़क दिया।

'काउन्ट, अब मुझे डर है कि आप मेरी ज़ेना से प्यार करने लगेंगे,' मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना को वह क्षण अत्यन्त गम्भीर मालूम हुआ।

काउन्ट का जवाब मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना की बड़ी से बड़ी उम्मीदों से भी कहीं ज्यादा आशाजनक था।

'मैं इसके प्यार में पागल हूं !' सहसा बूढ़े काउन्ट में नये जीवन का संचार हो गया और वे भावावेश से कांपने लगे। 'मैं इसकी खातिर अपनी ज़िन्दगी लुटा सकता हूं, काश मैं उम्मीद रख सकता···मुझे उठाओ, मुझे कमज़ोरी महसूस हो रही है···काश, इसे अपना दिल भेंट कर सकता, मैं···वह रोज़ मुझे गीत सुनाती और मैं इसकी तरफ देखता··· हर वक्त इसे देखता रहता···हे ईश्वर !'

'काउन्ट ! आप उसके आगे शादी का प्रस्ताव रख रहे हैं। आप मेरी ज़ेना को, मेरी मेरी नन्ही-मुन्नी, फरिश्ते-सी ज़ेना को मुझसे छीनना चाहते हैं ! लेकिन ज़ेना, मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी। लोगों को तुम्हें मेरी बांहों से जुदा करने में ज़बरदस्ती करनी पड़ेगी, एक मां की बांहों में से !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना अपनी बेटी के गले से लिपट गईं, हालांकि उन्हें महसूस हुआ कि ज़ेना पूरी ताकत से उन्हें दूर धकेल रही थी। उन्होंने ज़रूरत से ज़्यादा उत्साह दिखाया था, ज़ेना का रोम-रोम इस कॉमेडी के प्रति घृणा से भर उठा। लेकिन वह खामोश रही। मारया अलक्ज़ैन्ड्रोव्ना बस यही चाहती थीं।

'यह अपनी मां के साथ रहने की खातिर शादी के नौ प्रस्ताव ठुकरा चुकी है। लेकिन इस बार मेरा दिल कहता है कि हमें जुदा होना ही पड़ेगा। आज सुबह मैंने इसे आपकी तरफ देखते हुए देखा, आपकी शालीनता और सुसंस्कृत व्यवहार ने इसका दिल जीत लिया है···ओह, मुझे लगता है कि आप हमें अलग कर देंगे।'

'मैं इसकी आराधना करता हूं,' काउन्ट ने कहा। वे अभी भी पत्ते की तरह कांप रहे थे।

'तो तुम अपनी मां को छोड़कर चली जाओगी।' मारया अलक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने फिर अपनी बेटी के गले से लिपटते हुए कहा।

ज़ेना ने फौरन इस घबराहट भरे दृश्य का अन्त कर दिया। उसने अपना खूबसूरत हाथ काउन्ट की तरफ बढ़ा दिया और किसी तरह अपने-

आपको मुस्कराने के लिए बाध्य भी कर लिया। काउन्ट ने आदर भाव से ज़ेना का हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसपर चुम्बनों की वर्षा कर दी।

'अभी तो मेरी ज़िन्दगी शुरू हुई है !' काउन्ट ने भावावेश से रुंधे गले से कहा।

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना गंभीरतापूर्वक बोलीं, 'ज़ेना, इस आदमी की तरफ देखो ! इनसे ज्यादा शालीन और नेक आदमी मैंने कभी नहीं देखा। ये तो जैसे मध्ययुग के नाईट हैं। लेकिन: काउन्ट, अफसोस तो यह है कि ज़ेना यह बात जानती है···ओह आप यहां क्यों आए ? मैं आपको अपना खज़ाना, अपना फरिश्ता सौंप रही हूं, इसकी अच्छी तरह देख-भाल कीजिएगा काउन्ट ! एक मां आपसे मिन्नत कर रही है ! क्या संसार की कोई मां मुझे मेरे दु:ख पर दोष देगी ?'

'बस करो मां, इतना ही काफी है !' ज़ेना आहिस्ता से बोली।

'आप ज़ेना की रक्षा करेंगे न काउन्ट ! अगर कोई आदमी मेरी ज़ेना के सामने गुस्ताखी दिखाएगा या उसकी बदनामी करके उसे चोट पहुंचाएगा तो आपकी तलवार की चमक से उसकी आंखें चौंधिया जाएंगी न ?'

'बस करो मां, क्या तुम चाहती हो कि मैं···'

'हां हां, चौंधियाना,' काउन्ट बड़बड़ाया, 'अभी तो मेरी ज़िन्दगी शुरू हुई है—मैं चाहता हूं यह शादी अभी हो जाए, इसी क्षण ! मैं किसी-को दुखानोवो भेजना चाहता हूं। वहां मेरे पास हीरे रखे हैं, मैं उन हीरों को ज़ेना के कदमों में बिछाना चाहता हूं।'

'कैसा उत्साह है ! प्रेम का इतना आवेश ! इतनी सहृदयता !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना बोलीं, 'काउन्ट, आपने सोसाइटी से दूर रहकर भला अपने को क्यों बर्बाद होने दिया ? मैं बार-बार यही बात कहूंगी। मैं गुस्से से पागल हो जाती हूं जब मुझे उस नारकीय···'

'मैं क्या करता ? मैं इतना डर गया था।' काउन्ट रिरियाए, 'वे लोग मुझे पागलखाने में भेजना चाहते थे। मैं बहुत डर गया था।'

'पागलखाने में ? राक्षस कहीं के ! हैवान ! कितना कमीनापन है ! मैंने भी यह बात सुनी थी काउन्ट। वाह, वे खुद ही पागल होंगे। उन्होंने किसलिए ऐसा किया ? किसलिए ?'

'यह तो मैं खुद भी नहीं जानता।' बूढ़े काउन्ट ने कुर्सी में धंसते हुए कहा। उन्हें इतनी कमज़ोरी महसूस हो रही थी। 'मुझे याद है, मैं किसी द-दावत में गया था, वहां मैंने एक क-कहानी सुनाई, उन्हें वह पसन्द न-नहीं आई, इसलिए इतना गुलगपाड़ा मचा।'

'बस इतनी-सी ही बात थी ?'

'नहीं बाद में मैंने काउन्ट प्योत्र, द-देमेन्तिव के साथ ताश खेली और छह प्वाइंट हार गया। मेरे पास द-दो बादशाह और तीन बेगमें थीं···शायद तीन बेगमें और दो बादशाह थे ? नहीं, एक बादशाह था··· बे-बेगमें बाद में आईं।'

'बस इतनी-सी बात पर ? यह तो मामूली बात है ! कैसी हैवानियत है ! आप रो रहे हैं काउन्ट ! लेकिन आगे से यह बात नहीं होगी ! मैं आपके साथ रहूंगी काउन्ट ! मैं ज़ेना से अलग नहीं होऊंगी, और हम देखेंगे कौन एक भी शब्द कहने का साहस करता है ? जानते हैं कि आपकी शादी से उन लोगों को कितना आघात पहुंचेगा। उनमें घबराहट फैल जाएगी। वे देख लेंगे कि आप अभी भी···मेरे कहने का मतलब है कि उन्हें मालूम हो जाएगा कि ज़ेना जैसी खूबसूरत लड़की किसी पागल से शादी नहीं करेगी। अब आप गर्व से अपना सिर ऊपर उठा सकते हैं, आप उनकी आंखों में आंखें डालकर देखेंगे—'

'हां, हां, मैं उनकी आंखों में आंखें डालकर देखूंगा।' काउन्ट आंखें बंद करके बुड़बुड़ाए।

'हाय, काउन्ट का बुरा हाल हो रहा है ! अब उनसे कोई बात

करना बेकार है।' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने सोचा और काउन्ट से कहा, 'काउन्ट, मैं देख रही हूं कि आप घबरा गए हैं। आपको अपना मन शान्त रखना चाहिए। इस उत्तेजना के बाद आपको आराम की ज़रूरत है।' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने मातृवत् ढंग से काउन्ट के ऊपर झुकते हुए कहा।

'हां, हां, मैं भी ज़रा-सा आराम करना चाहता हूं।'

'ठीक है; अपने को शान्त कीजिए काउन्ट! इस सारी उत्तेजना के बाद—ठहरिए, मैं आपके साथ चलती हूं···अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं खुद आपको बिस्तर में लिटा दूंगी। आप उस तस्वीर की तरफ इस तरह क्यों देख रहे हैं, काउन्ट! यह मेरी मां की तस्वीर है। वे औरत नहीं देवी थीं। ओह, वे अब हमारे बीच क्यों नहीं हैं? वे पूरी संत थीं काउन्ट, मैं उन्हें इसके सिवा किसी और नाम से नहीं पुकार सकती।'

'संत? वाह, खूब! मेरे भी एक मां थी—शाहज़ादी—और ज़रा कल्पना करो, वह बेहद मोटी औरत थी। लेकिन मैं यह नहीं कहना चाहता था—मुझे कुछ कमज़ोरी-सी महसूस हो रही हो।'

'अलविदा, मेरी प्यारी बच्ची! आज—या कल—खुशी से, खैर एक ही बात है—अलविदा! अलविदा!' काउन्ट ने अपना हाथ हिलाना चाहा, लेकिन वे फिसलकर दहलीज में गिरते-गिरते बचे।

'सावधान, काउन्ट! मेरी बांह का सहारा ले लीजिए,' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना चिल्लाई।

'खूबसूरत! खूबसूरत! अभी तो मेरी ज़िन्दगी शुरू हुई है,' काउन्ट बुड़बुड़ा रहे थे।

ज़ेना कमरे में अकेली रह गई। उसके दिल पर एक भारी बोझ था। मारे ग्लानि के उसका दिल मिचला रहा था। उसे अपने-आपसे नफरत होने लगी थी। उसके गाल जल रहे थे। वह मुट्ठियां बांधे, दांत भींचे, सिर झुकाकर खामोश खड़ी थी। शर्म के आंसू उसके गालों पर ढुलकने

लगे···इसी वक्त दरवाज़ा खुला और मोज़ग्ल्याकोव कमरे में घुस आया।

९

मोज़ग्ल्याकोव ने सारी बातें सुन ली थीं।

वह कमरे में घुसने की बजाय अपने-आपको धकेलकर वहां लाया था। गुस्से और आवेश से उसका चेहरा पीला पड़ गया था। ज़ेना चकित-भाव से उसकी तरफ देखने लगी।

'अच्छा तो यूं होगा, क्यों ?' मोज़ग्ल्याकोव हांफकर बोला, 'आखिरकार, तुम जैसी हो, उसी रूप में मैंने तुम्हें देख लिया !'

'मैं जैसी हूं ?' ज़ेना ने इस तरह आंखें फाड़कर देखा जैसे किसी पागल को देख रही हो। सहसा उसकी आंखों में से चिनगारियां फूटने लगीं।

'मुझसे इस तरह बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी !' ज़ेना ने आगे बढ़ते हुए पूछा।

'मैंने सब कुछ सुन लिया है !' मोज़ग्ल्याकोव ने गंभीर स्वर में कहा, लेकिन वह अपने-आप एक कदम पीछे हट गया।

'तुमने सुन लीं ? क्या तुम छिपकर सारी बातें सुन रहे थे ?' ज़ेना ने उसकी तरफ तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली।

'हां, छिपकर सुन रहा था ! हां, मैंने यह कमीनापन ज़रूर किया, लेकिन कम से कम मुझे यह मालूम हो गया कि तुम दुनिया की सबसे ज्यादा—तुम कैसी औरत हो; इसके लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है।'

मोज़ग्ल्याकोव ज़ेना की क्रुद्ध दृष्टि के आगे कांप रहा था।

'अच्छा, अगर तुमने सारी बातें सुन लीं, तो तुम मुझे भला क्या दोष दे सकते हो? मुझे दोष देने का तुम्हें क्या अधिकार है। तुम्हें मुझसे गुस्ताखी से बोलने का क्या अधिकार है?'

'मुझे क्या अधिकार है? तुम पूछ रही हो? तुम काउन्ट से शादी करने जा रही हो और मुझे पूछने तक का अधिकार नहीं!···तुमने मुझे वचन दिया था, इसलिए पूछ रहा हूं।'

'कब?'

'तुम पूछती हो कि कब?'

'आज सुबह ही जब तुमने मुझपर दबाव डाला तो मैंने तुम्हें निश्चित रूप से कह दिया था कि मैं तुम्हें अभी तक कोई निश्चित जवाब नहीं दे सकती।'

'लेकिन तुमने मुझे दुत्कारा नहीं, न ही साफ-साफ इन्कार किया। इसका मतलब है कि तुम मुझे रिज़र्व श्रेणी में रखना चाहती थीं, इसका मतलब है कि तुम मुझे झूठा प्रोत्साहन दे रही थीं।'

ज़ेना के चेहरे पर एक गहरी आन्तरिक यन्त्रणा का भाव प्रकट हुआ, लेकिन उसने अपनी भावना पर काबू पा लिया।

'मैंने तुम्हें दुत्कारा नहीं,' ज़ेना ने स्पष्ट और दृढ़ स्वर में उत्तर दिया हालांकि साफ ज़ाहिर था कि उसकी आवाज़ कांप रही है, 'सिर्फ इसलिए कि मुझे तुमपर तरस आ गया था। तुमने खुद ही मिन्नत की थी कि मैं अपनी मर्ज़ी से चाहे जितना वक्त सोचने में लगा सकती हूं, जल्दी की कोई ज़रूरत नहीं। तुमने कहा था कि मैं इन्कार न करूं, जब तक तुमसे अच्छी तरह परिचित न हो जाऊं, इन्तज़ार करूं। तुमने कहा था—जब तुम्हें तसल्ली हो जाएगी कि मैं ऊंचे विचारों वाला व्यक्ति हूं, तब शायद तुम मुझे नहीं ठुकराओगी।···कोर्टशिप के शुरू में ही ये तुम्हारे अपने शब्द थे। अब तुम मुकर नहीं सकते। लेकिन आज जब

तुम वक्त से पंद्रह दिन पहले ही यहां आ गए तो तुम्हें देखकर मैं कितनी नाराज़ हुई, यह तो तुम जानते ही हो, मैंने अपनी यह नाराज़गी छिपाने की बजाय तुम्हारे सामने साफ ज़ाहिर कर दी। तुमने खुद यह नाराज़गी देखी थी, क्योंकि तुमने मुझसे पूछा भी था कि मैं तुम्हारे जल्दी आने की वजह से तुमसे नाराज़ तो नहीं हूं। एक लड़की पर किसी ऐसे व्यक्ति को प्रोत्साहन देने का दोष नहीं दिया जा सकता, जिससे वह नफरत करती हो, यहां तक कि उस नफरत को छिपा भी न सकती हो, न छिपाने की कोशिश ही करती हो। तुमने यह कहने की जुर्रत की कि मैंने तुम्हें रिज़र्व श्रेणी में रख छोड़ा है! अच्छी बात है तो मैं तुम्हें साफ-साफ बताती हूं कि तुम्हारे बारे में मेरी क्या राय थी। मैंने सोचा था—इस आदमी का दिमाग चाहे बढ़िया न हो, लेकिन शायद इसका दिल नेक है, इसलिए ऐसे आदमी से शादी की जा सकती है।...लेकिन मेरी यह खुशकिस्मती है कि मैंने देख लिया कि तुम न सिर्फ बेवकूफ हो, बल्कि बदतमीज़ भी हो। अब मेरे लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं रह गया कि मैं तुमसे विदा लूं। गुडबाई!'

इन शब्दों के साथ ज़ेना ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया और धीमी चाल से दरवाज़े की ओर बढ़ी।

मोज़ग्ल्याकोव यह आभास पाकर कि सारा खेल खत्म हो गया है, गुस्से से पागल हो गया।

'ओह! तो मैं बेवकूफ हूं, क्यों?' वह चिल्लाया, 'तो अब मैं बेवकूफ बन गया हूं! अच्छी बात है! गुडबाई! लेकिन जाने से पहले मैं सारे शहर को बताकर जाऊंगा कि किस तरह तुम दोनों मां-बेटी ने मिलकर काउन्ट को उल्लू बनाया है—उसे शराब पिलाकर! मैं सब लोगों को बताऊंगा! तुम भी मोज़ग्ल्याकोव को याद रखोगी!'

ज़ेना चौंक पड़ी और जैसे जवाब देने के लिए रुक गई लेकिन अगले ही क्षण उसने तिरस्कारपूर्वक अपने कन्धे सिकोड़ लिए और ज़ोर से

दरवाजा बन्द करके वहां से चली गई।

इसी वक्त मारया अलैक्जेंड्रोव्ना दहलीज में दाखिल हुईं। वे मोजग्ल्याकोव की बात को सुन चुकी थीं, और एक ही नजर में सारी स्थिति भांप गई थीं, इसलिए डर से वे कांप रही थीं। मोजग्ल्याकोव अभी वहीं था। वह काउन्ट के नजदीकी परिचितों में से था और वह सारे शहर में यह खबर फैलाने जा रहा था—कम से कम कुछ अरसे के लिए तो इस सारे मामले का गोपनीय रहना बिलकुल जरूरी था। मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने मन ही मन सारा हिसाब लगा लिया था। और आंख झपकते ही उन्होंने सारी परिस्थिति को नाप-जोख लिया था और मन ही मन मोजग्ल्याकोव को साथ मिलाने की स्कीम बना ली थी।

'क्या बात है मेरे अजीज ?' मरया अलैक्जेंन्ड्रोव्ना ने मैत्रीपूर्ण ढंग से अपना हाथ आगे बढ़ाया।

'ओह, मैं तुम्हारा अजीज हूं, क्यों ?' मोजग्ल्याकोव गुस्से से आग-बबूला होकर बोला, 'तुम्हारी सारी हरकतों के बाद भी मैं तुम्हारा अजीज हूं ! श्रीमतीजी, मैं आपकी खिदमत में हाजिर हूं। आपका ख्याल है कि आप अब भी मेरी आंखों में धूल झोंक सकती हैं···'

'तुम्हें इन असाधारण मानसिक दशा में देखकर मुझे अफसोस हो रहा है। बात कहने का कसा ढंग है ! किसी महिला के सामने अपने को संयत रखने की भी जरूरत तुम नहीं समझते !'

'महिला—तुम संभ्रान्त महिला हो ! अपने-आपको तुम जो चाहे कह लो, लेकिन संभ्रान्त महिला नहीं कह सकतीं।' मोजग्ल्याकोव चिल्लाया। वह क्या कहना चाहता था, यह तो मैं ठीक से नहीं कह सकता, लेकिन जो कुछ वह कह रहा था उसमें दोषारोपण की भावना अत्यधिक थी।

मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने मृदुभाव से उसके चेहरे की तरफ देखा। और फिर मातमी आवाज में सामने रखी कुर्सी की तरफ, जहां अभी

पन्द्रह मिनट पहले काउन्ट बैठे थे, इशारा करते हुए कहा, 'बैठ जाओ।'

मोजग्ल्याकोव ने चकित स्वर में कहा, 'लेकिन मरया अलैक्जैंड्रोव्ना, आप मेरी तरफ इस तरह देख रही हैं जैसे आप बिलकुल निर्दोष हों और मैंने आपको चोट पहुंचाई हो। वाह, यह नामुमकिन है। आपने इस लहजे में बात की ! इस लहजे को बर्दाश्त करना इन्सान के धीरज से बाहर की बात है, क्या आप इस बात को नहीं जानतीं ?

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने जवाब दिया, 'मेरे दोस्त, मुझे अब भी अपना दोस्त कहने की इजाजत दो, क्योंकि तुम्हें मुझसे बेहतर कोई दोस्त नहीं मिलेगा। मेरे दोस्त ! तुम दुःखी हो, तुम्हें दर्द हो रहा है, तुम्हारे हृदय की सबसे कोमल भावनाओं को ठेस पहुंची है, इसलिए तुम इस तरह बात कर रहे हो। मुझे इस बात से कोई ताज्जुब नहीं हुआ, लेकिन मैं तुम्हें अपना दिल खोलकर दिखाऊंगी, क्योंकि कुछ हद तक मैं तुम्हारी नजरों में अपने को कसूरवार समझती हूं। बैठ जाओ, फिर हम बातें करेंगे।'

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना मन्द दुःख-भरी आवाज में बोल रही थीं, उनके चेहरे पर मानसिक यातना के चिह्न थे। मोजग्ल्याकोव चकित भाव से उनके पास रखी आरामकुर्सी पर बैठ गया।

'क्या तुमने छिपकर सारी बातें सुनी हैं ?' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने भर्त्सना-भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा।

'हां सुनी हैं। अगर मैं ऐसा न करता तो मेरी सख्त बेवकूफी होती। कम से कम मुझे यह तो पता चल गया कि तुम मेरे खिलाफ कैसी साजिशें कर रही हो।' मोजग्ल्याकोव ने गुस्ताखी से जवाब दिया। गुस्से से उसमें साहस और आत्मविश्वास आ गया था।

'जरा सोचो तो सही तुम—तुम अपने लालन-पालन, अपने सिद्धांतों के बावजूद भी इतनी कमीनी हरकत कर सके। हे ईश्वर !'

मोजग्ल्याकोव उछल पड़ा और जोर से चिल्लाया, 'लेकिन मारया

अलैक्जैंड्रोव्ना ! सचमुच आप हद से बाहर जा रही हैं। याद रखिए कि आपने अपने सिद्धान्तों के बावजूद भी कैसी हरकत की है—इसके बाद भी आपमें इतना साहस है कि दूसरों की भर्त्सना करें !'

मारया अलैक्जैंड्रोवना ने उसकी बात को अनसुना करते हुए कहा, 'मैं एक और बात जानना चाहती हूं—वह यह कि तुम्हारे दिमाग में यह बात किसने डाली कि तुम छिपकर सारी बातें सुनो, कौन यहां जासूसी करता रहा है, मुझे यह बताओ।'

'माफ कीजिए—यह मैं आपको नहीं बता सकता।'

'अच्छी बात है, मैं खुद ही इस बात को मालूम कर लूंगी। मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हारी नज़रों में मैं अपने को कसूरवार समझती हूं दोस्त, लेकिन अगर तुम ग़ौर से सारी परिस्थितियों को देखोगे तो समझ जाओगे कि अगर मैं कसूरवार हूं भी तो सिर्फ तुम्हारी भलाई की खातिर ही—'

'मेरी भलाई ? बस हद हो गई ! मैं आपको साफ बता दूं कि अब आप मुझे ज्यादा देर उल्लू नहीं बना सकतीं। यह लड़का देखने में जैसा मूर्ख मालम होता है उतना मूर्ख नहीं है !'

यह कहकर वह इतनी ज़ोर से कुर्सी पर बैठा कि कुर्सी चरमरा उठी।

'मेरे दोस्त, ज़रा अपने दिमाग को ठंडा रखने की कोशिश करो ! ध्यान से मेरी बात सुनो, तुम भी मेरे हक में सोचने लगोगे। मैं खुद ही सारी बात तुम्हें समझाने वाली थी। छिपकर सुने बगैर ही तुम्हें मुझसे सारी बात मालूम हो जाती। मैंने आज पहले से ही तुम्हें इसलिए नहीं बताया, क्योंकि अभी तक यह निरी स्कीम ही थी। हो सकता था कि इसका कोई नतीजा न निकलता। तुम देख रहे हो कि मैं तुमसे दिल खोलकर बात कर रही हूं। दूसरे मुझे तुमसे यह कहना है कि मेरी बेटी को दोष मत दो। वह तुम्हें बेहद प्यार करती है, और उसका मन तुम्हारी

तरफ से हटाकर काउन्ट के प्रस्ताव पर लगाने में मुझे कितनी मेहनत करनी पड़ी, इसपर तुम्हें विश्वास नहीं होगा।'

'आपकी बेटी मेरे प्रेम में कितनी पागल है, इसका सबूत देखने का सुखद अनुभव मुझे अभी-अभी हुआ है,' मोज़ग्ल्याकोव ने ताना मारा।

'ठीक है, लेकिन तुमने उससे किस तरह बात की थी ? क्या एक प्रेमी को इसी तरह बात करनी चाहिए ? मैं तुमसे पूछती हूं कि क्या एक खानदानी आदमी को इस तरह बात करनी चाहिए ? तुमने उसका अपमान किया जिससे वह चिढ़ गई।'

'मारया अलैक्जेंड्रोवना, मेरे पास शिष्टाचार पर सोचने का वक्त नहीं है। और तुम दोनों अपनी कहो—जो अब मुझे देखकर मधुर मुस्कान बिखेर रही हो, लेकिन मेरे पीठ फेरते ही तुमने मुझपर गालियों की बौछार शुरू कर दी थी ! तुमने मेरा मुंह काला कर दिया ! मैं सब कुछ, सब कुछ जानता हूं !'

'तुम्हें सूचना देने वाला वही गन्दा व्यक्ति है, इसमें शक नहीं,' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ने तिरस्कारपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए कहा, 'हां पावेल अलैक्जेंड्रोविच, मैंने तुम्हारी बदनामी की, मैंने तुम्हारे बारे में बुरी बातें कहीं, मैं मानती हूं कि मैंने पूरी कोशिश की थी। लेकिन मुझे ज़ेना की नज़रों में तुम्हें गिराना पड़ा, यहां तक कि तुम्हें बदनाम भी करना पड़ा। यह इस बात का सबूत है कि मैंने ज़ेना को कितनी मुश्किल से तुम्हें धता बताने पर राज़ी किया ! बेवकूफ आदमी ! अगर वह तुम्हें प्यार न करती तो क्या मुझे उसके सामने तुम्हारी बुराई और बदनामी करने की, तुम्हें हास्यास्पद रूप में पेश करने की, और इतना सख्त कदम उठाने की कोई ज़रूरत थी ? ओह, तुम्हें कुछ पता नहीं है ! अभी भी मुझे तुम्हें ज़ेना के दिल से निकालने के लिए अपने मातृत्व के समस्त अधिकार का प्रयोग करना पड़ा था, और इन तमाम कोशिशों के बावजूद भी मैं उससे सिर्फ बहुत मामूली-सी ही हामी भरवा सकी हूं। चूंकि तुम

हमारी बातों को सुन चुके हो, तो तुमने यह भी देखा होगा कि उसने काउन्ट के सामने किसी भी शब्द या हावभाव से अपनी रज़ामन्दी नहीं ज़ाहिर की। सारे दृश्य में वह एक भी शब्द नहीं बोली। उसने मशीन की तरह गाना गाया। दुःख से उसके रोम-रोम में पीड़ा हो रही थी, मुझे उसकी हालत देखकर तरस आ रहा था, इसलिए मुझे काउन्ट को वहां से ले जाने के लिए मजबूर होना पड़ा था—मुझे यकीन है कि वह एकान्त में जाकर रोई होगी। जब तुम भीतर आए थे, तब तुमने भी उसके आंसू देखे होंगे।'

मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के इस ज़िक्र से मोज़ग्ल्याकोव को याद आया कि जब वह कमरे में घुसा था उस समय ज़ेना सचमुच रो रही थी।

'लेकिन आप—आप मेरे खिलाफ क्यों थीं, मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना? आपने क्यों मेरी बदनामी की?—जैसा कि आपने अभी-अभी स्वीकार किया है।···क्यों?'

'ओह, वह बात दूसरी थी! अगर तुम मुझसे शुरू से ही कायदे से सवाल पूछते तो तुम्हें बहुत पहले ही जवाब मिल गया होता। हां, तुम ठीक कह रहे हो। मैं अकेली ही इस काम के लिए ज़िम्मेदार हूं। ज़ेना को इसमें मत घसीटो। और मैंने यह काम किसलिए किया? तुम जानना चाहते हो। मेरा जवाब यह है—सबसे पहले ज़ेना की खातिर। काउन्ट धनी, सम्मानित व्यक्ति हैं, उनकी बहुत पहुंच है, उनसे शादी करके ज़ेना बहुत ठीक काम करेगी, और अगर काउन्ट मर गए, शायद वह जल्दी ही मर जाएंगे, क्योंकि हम सब लोग मरणशील हैं, तो ज़ेना एक जवान विधवा, एक काउन्टेस होगी, सबसे ऊंचे वर्ग की सदस्य होगी और शायद बहुत ज़्यादा पैसे वाली होगी। फिर वह जिससे चाहे शादी कर सकेगी, बहुत शानदार शादी कर सकेगी। लेकिन यह निश्चित है कि वह उसी आदमी से शादी करेगी जिसे वह चाहती है, जो उसे शादी से पहले चाहता था। काउन्ट से शादी करके ज़ेना ने जिसका दिल तोड़ दिया है,

वह इस निर्दयता का प्रायश्चित ज़रूर करेगी।'

'हुं !' मोज़ग्ल्याकोव गंभीरतापूर्वक अपने बूटों की तरफ देखकर गुर्राया।

'और दूसरे कारण का ज़िक्र भी मैं सरसरी तौर पर करूंगी, क्योंकि तुम शायद इस बात को नहीं समझ सकोगे। तुम लोग शेक्सपियर पढ़ते हो, सब तरह के उदात्त भाव उसकी पुस्तकों में से लेते हो लेकिन व्यवहार में—हालांकि तुम बड़े नेक हो, फिर भी अभी तुम्हारी उम्र बहुत छोटी है। और मैं एक मां हूं, पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच ! मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं ज़ेना की शादी काउन्ट से इसलिए भी कर रही हूं क्योंकि इस शादी के ज़रिए मैं काउन्ट को बचाना चाहती हूं। मुझे हमेशा से उस नेक, विशालहृदय, शिष्ट और सम्मानित बुज़ुर्ग से प्यार रहा है। किसी ज़माने में हम दोनों में बड़ी दोस्ती थी। बदकिस्मत काउन्ट आजकल उस नारकीय औरत के चंगुल में हैं, वह काउन्ट को दफनाकर ही छोड़ेगी। ईश्वर जानता है, मैंने आत्मत्याग की पवित्रता प्रदर्शित करने के लिए ही ज़ेना को काउन्ट से शादी करने के लिए तैयार किया है। वह भी इन उदात्त भावनाओं से और परोपकारिता के आकर्षण से मुग्ध हो गई है। उसके स्वभाव में भी शौर्य है। मैंने उसे समझाया कि एक ऐसे व्यक्ति का, जो शायद एक ही बरस और जी सकेगा, सहारा, सान्त्वना, मित्र, सन्तान, आदर्श और सुन्दरता बनना एक ईसाई का सच्चा धर्म है। जीवन के अन्तिम दिनों में उस घृणित औरत, भय और मनहूसी से घिरे रहने की बजाए उनके जीवन में प्रकाश, मित्रता और प्रेम का संचार होगा, उनके जीवन की संध्या उन्हें स्वर्ग की तरह सुखद मालूम होगी। मैं पूछती हूं, क्या यह स्वार्थ है ? क्या यह ईसाई संन्यासियों जैसा पवित्र काम नहीं है ?'

'अच्छा तो आपने सिर्फ काउन्ट की खातिर···सिर्फ ईसाई संन्यासिन की हैसियत से यह काम किया, क्यों ?' मोज़ग्ल्याकोव ने ताना मारा।

'मैं जानती हूं, तुम्हारे दिल में यह सवाल उठना कितना स्वाभाविक है। तुम्हारे दिल की बात भांपना मुश्किल नहीं है। शायद तुम्हारा ख्याल है कि काउन्ट की भलाई के साथ ही साथ इस स्कीम में मैंने जेजुएटों की तरह व्यक्तिगत स्वार्थ के दृष्टिकोण से भी सोचा था। मान लो अगर ऐसा ही हो तो ! हो सकता है, ये विचार मेरे मन में आए हों लेकिन वे खुद-बखुद ही आए थे। उसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं था। मैं जानती हूं कि इतने खुले ढंग से सब कुछ कबूल करते देखकर तुम्हें हैरानी हो रही है, लेकिन मैं तुमसे सिर्फ एक ही बात कहूंगी पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच, ज़ेना को इस झगड़े में मत घसीटो ! वह तो कपोती की तरह पवित्र और मासूम है—वह हिसाब-किताब नहीं करती, वह तो सिर्फ प्यार करना जानती है। मेरी प्यारी बच्ची ! अगर कोई हिसाब-किताब करने वाला है तो वह मैं कहूं। लेकिन पहले ज़रा सख्ती से अपने अन्तरात्मा को टटोलो और मुझे बताओ, इन परिस्थितियों में अगर मेरी जगह कोई और होता तो क्या हिसाब-किताब न करता ? ऊंचे से ऊंचे विचारों में भी, उन मामलों में भी जिनमें हमारा व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं होता, हम अपनी भलाई देखते हैं, लेकिन जानबूझकर नहीं। अधिकांश लोग यह सोचकर अपने को धोखा देते हैं कि वे सिर्फ परोपकार की भावना से प्रेरित होकर यह काम कर रहे हैं। मैं अपने-आपको धोखा नहीं दे सकती। मैं मानती हूं कि अपने नेक उद्देश्यों के बावजूद भी मैंने हिसाब-किताब किया। लेकिन ज़रा सोचकर देखो—क्या मैं अपनी खातिर हिसाब-किताब करती हूं ? मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच, मैं अपनी ज़िन्दगी काट चुकी हूं। मैंने अपनी प्यारी बच्ची की खातिर ऐसे नीच किस्म के हिसाब-किताब किए हैं—इन परिस्थितियों में भला कौन मां मुझे दोष दे सकती है ?'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना की आंखों में आंसू छलछला आए। इन स्पष्ट घोषणाओं को सुनकर पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच असहाय और

चकित भाव से आंख झपकाने लगा। आखिरकार वह बोला, 'इसमें शक नहीं कि कोई मां···आपके गीत की पंक्तियां तो बड़ी शानदार हैं मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ! लेकिन, लेकिन आपने मुझे अपना वचन दिया था। और आपने मुझे बढ़ावा भी दिया था—अब ज़रा मेरी हालत पर गौर कीजिए। मैं कितना बेवकूफ बन गया हूं !'

'लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो कि मैंने तुम्हारा ख्याल नहीं रखा, मेरे प्यारे दोस्त ! बल्कि इस सारे हिसाब-किताब में तुम्हारा इतना फायदा था कि इसी वजह से मैं यह सब कर सकी।'

'मेरा फायदा ? वह कैसे ?' मोज़ग्ल्याकोव अप्रतिभ हो गया।

'हे ईश्वर ! क्या तुम सचमुच इतने सीधे और अदूरदर्शी हो ?' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने अपनी आंखें छत तक उठाते हुए कहा, 'ओह, जवानी, जवानी ! शेक्सपियर की पुस्तकों में अपने-आपको दफनाने का यही नतीजा होता है, हम औरों के विचारों पर पनपते हैं और कल्पना करते हैं कि हम ज़िन्दा हैं। मेरे अच्छे पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच, तुम पूछते हो कि इसमें तुम्हारा क्या फायदा है ? सफाई करने के लिए मुझे ज़रा पिछली बातों का हवाला देने दो—ज़ेना तुमसे प्यार करती है इसमें शक की कोई गुंजायश नहीं। लेकिन मैंने देखा है कि तुम्हें चाहते हुए भी वह तुम्हारी भावनाओं पर अविश्वास करती है। मैंने देखा है कि कई बार, जैसे जान-बूझकर वह अपनी भावनाओं के प्रदर्शन पर संयम लगाकर तुमसे कठो-रता बरतती है—यह ज़्यादा सोचने और अविश्वास करने का फल है। तुमने भी यह बात देखी होगी, पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच।'

'हां देखी है, आज ही···लेकिन इन सब बातों से आखिर आप किस बात की भूमिका बांधना चाहती हैं ? मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ?'

'देखा, तुमने भी इस बात पर गौर किया है न ! तो मेरा ख्याल गलत नहीं था ! तुम्हारी नेकनीयती के प्रति भी उसके मन में अविश्वास है। मैं एक मां हूं—मैं अपनी बच्ची के दिल के रहस्यों को तो समझ

सकती हूं ! ज़रा कल्पना करने की कोशिश करो, अगर मैं उसे डांटती-फटकारती, गालियां बकती हुई कमरे में घुसती, जिससे वह चिढ़ जाती, उसके दिल को चोट पहुंचती, उसका अपमान होता—और वह कितनी पवित्र, खूबसूरत और स्वाभिमानी है—तो उसके मन में तुम्हारी बुराइयों के बारे में जो शक है उसे मैं अनजाने में ही और भी पक्का कर देती ···ज़रा सोचने की कोशिश करो, अगर तुम इस खबर को हलीमी से, दुःख और शोक के आंसुओं से, लेकिन आत्मा की उदात्त भावना से सुनते तो···'

'हुंह !'

'मुझे बीच में मत टोको, पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच ! मैं तुम्हारे मन पर सारी तस्वीर जैसी है वैसी ज्यों की त्यों अंकित कर देना चाहती हूं। मान लो, अगर तुम उसके पास जाकर कहते, 'ज़िनेदा, मैं तुम्हें अपने प्राणों से भी अधिक चाहता हूं, लेकिन कुछ पारिवारिक कारण हम दोनों को अलग किए हुए हैं। मैं इन कारणों को समझता हूं। वे तुम्हारी खुशी के लिए हैं और मैं उनका विरोध करने का साहस नहीं रखता। ज़िनेदा! मैंने तुम्हें माफ कर दिया, अगर तुम सुखी रह सकती हो तो सुखी रहो!' और यह कहकर अगर तुम उसकी तरफ देखते, एक घायल हिरन की दृष्टि से—तुम मेरा मतलब समझ गए होगे—इन शब्दों की कल्पना करो और सोचो। इन शब्दों का उसके दिल पर क्या असर पड़ता।'

'अच्छा, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना, मान लिया। मैं आपका मतलब समझ गया—लेकिन अगर मैं यह शब्द कहता तो भी मुझे वहां से गर्दन पकड़कर निकाल ही दिया जाता न !'

'नहीं, नहीं, मेरे दोस्त ! मुझे बीच में मत टोको ! मैं तुम्हें सारी स्थिति, उसके सारे नतीजे भी समझाना चाहती हूं, ताकि तुम देख सको कि स्थिति कितनी शानदार है। ज़रा कल्पना करने की कोशिश करो कि बरसों बाद ज़ेना से ऊंची सोसाइटी में तुम्हारी मुलाकात होती है,

तुम उसे किसी बालडान्स में मिलते हो जबकि सारे कमरे रोशनी से जगमगा रहे हैं, शानदार वाद्य-संगीत बज रहा है, दावत में बड़ी खबसूरत और शानदार महिलाएं हैं, इस आमोद-प्रमोद के वातावरण में तुम अकेले, उदास किसी खंभे के सहारे खड़े हो, तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है, तुम किसी गहरी सोच में डूबे हो (लेकिन तुम ऐसी जगह खड़े हो, जहां से तुम्हें देखा जा सकता है), ज़ेना डांस कर रही है, तुम्हारी नज़रें डांस की भूलभुलैया में उसका पीछा कर रही हैं। तुम्हारे आसपास स्ट्रॉप के संगीत की मनोहर स्वर-लहरियां फैल रही हैं, ऊंची सोसाइटी के सुन्दर वाक्य—लेकिन सिर्फ तुम्हारा चेहरा पीला है, तुम्हारे मन में प्यार की आग सुलग रही है। तुम्हारा क्या ख्याल है, उस वक्त ज़ेना क्या सोचेगी? किन नज़रों से वह तुम्हें देखेगी ? वह सोचेगी—इस आदमी ने, जिसने मेरी खातिर सब कुछ कुर्बान कर दिया है, मेरी खातिर जिसका दिल टूट गया है, क्या मैं उसपर शक कर सकती हूं ?···और यह स्वाभाविक ही है कि उसके दिल में भी सोया हुआ प्यार अपनी पूरी ताकत से फिर उमड़ आएगा !'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना सांस लेने के लिए रुक गईं। मोज़ग्ल्याकोव फिर इतनी ज़ोर से हिला कि उसके बोझ से कुर्सी चरमरा उठी। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने अपनी बात जारी रखी—

'काउन्ट की सेहत सुधारने के लिए ज़ेना विदेश जाएगी, इटली, स्पेन—स्पेन जहां मेंहदी के पेड़ हैं, नींबुओं के कुंज हैं, नीला आकाश है, गुआदालकीवीर है—प्यार का देश स्पेन जहां रहकर प्यार न करना नामुमकिन है। जहां गुलाब ही गुलाब है, जहां की हवा तक में चुम्बन बसे हैं। तुम भी ज़ेना के पीछे-पीछे वहां जाओगे, तुम अपनी कामयाबी, रिश्तेदारी सब कुछ छोड़कर वहां जाओगे ! वहां तुम्हारे प्यार की ज्वाला दुर्दमनीय रूप से भड़क उठेगी। प्यार, यौवन, स्पेन, ओह ईश्वर! निश्चय ही तुम्हारा प्यार पवित्र और अकलुषित होगा, लेकिन तुम

दोनों आकुल दृष्टि से एक-दूसरे की आंखों में आंखें डालकर देखोगे। तुम मेरा मतलब समझ गए न, मेरे दोस्त ! इसमें शक नहीं कि कुछ ऐसे कमीने चालाक राक्षस भी होंगे जो कहेंगे कि तुम सिर्फ अपने एक बीमार बूढ़े रिश्तेदार की वजह से ही विदेश नहीं आए हो। मैंने जान-बूझकर तुम्हारे प्यार को पवित्र कहा है, क्योंकि ऐसे लोग निश्चित रूप से तुम्हारे प्यार के दूसरे अर्थ लगाएंगे। लेकिन मैं एक मां हूं, पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच, तुम्हें मुझसे गलत काम करने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। निश्चय ही काउन्ट इस हालत में नहीं होंगे कि तुम दोनों पर निगरानी रख सकें, लेकिन उससे क्या होता है ? क्या यह भी कमीने किस्म की बदनामी का कोई आधार है ? आखिरकार काउन्ट अपने भाग्य को सराहते हुए इस संसार से चले जाएंगे। मुझे यह बताओ कि तब ज़ेना अगर तुमसे नहीं तो फिर किससे शादी करेगी ? तुम काउन्ट के इतने दूर के रिश्तेदार हो कि ज़ेना से तुम्हारी शादी में किसीको ऐतराज़ नहीं होगा। वह जवान, धनी और सम्मानित काउन्टेस होगी ! शादी के लिए वह वक्त कैसा शानदार रहेगा ! ऐसा वक्त जबकि फैशनेबल सोसाइटी का हर रईस ज़ेना से शादी करने में गर्व का अनुभव करेगा। उसके प्रभाव के ज़रिए ऊंचे से ऊंचे वर्ग में तुम्हारी पूछ होगी और तुम्हें फौरन कोई महत्त्वपूर्ण ओहदा मिल जाएगा और तुम्हारी तरक्की होगी। इस वक्त तुम्हारे पास सिर्फ डेढ़ सौ भूमिदास हैं, लेकिन तब तुम धनी हो जाओगे। काउन्ट अपनी जायदाद में तुम्हारे लिए भी कुछ न कुछ छोड़ जाएंगे, इसकी ज़िम्मेदारी मुझपर छोड़ो, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ज़ेना को तुम्हारी भावनाओं में विश्वास हो जाएगा और तुम सहसा उसकी नज़रों में नेकी और आत्मत्याग के प्रतीक बन जाओगे। और तुम पूछते हो कि इसमें तुम्हारा क्या फायदा है ? वाह, तुम अन्धे हो ! अगर तुम इस फायदे को नहीं देख सकते, जो तुमसे सिर्फ कुछ ही कदम दूर रह गया है और चिल्ला-चिल्लाकर कह

रहा है : लो मैं हूं, तुम्हारा फायदा ! पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच, ओह पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच !'

'मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्‌ना !' मोज़ग्ल्याकोव बेहद द्रवित हो गया था, 'अब मेरी समझ में सारी बात आ गई है ! मैं निरा पशु हूं, उजड्ड, घृणित पशु !'

उछलकर उसने अपने बाल नोंच लिए।

'तुमने अविवेक से काम लिया है—बहुत ज्यादा !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्‌ना ने टिप्पणी जोड़ी।

'मैं गधा हूं, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्‌ना !' मोज़ग्ल्याकोव निराशा से चिल्लाया, 'अब सारा खेल खत्म हो गया है, सिर्फ इस वजह से क्योंकि मैं उसके प्यार में पागल था !'

'शायद सारा खेल खत्म नहीं हुआ है,' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्‌ना ने धीरे से कहा, जैसे वह कुछ सोच रही हो।

'ओह, काश यह मुमकिन होता ! मेरी मदद कीजिए ! मुझे बताइए मैं क्या करूं ! मुझे बचाइए !'

और मोज़ग्ल्याकोव रोने लगा।

मारया अक्लैज़ैन्ड्रोव्‌ना ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर दयालु स्वर में कहा, 'मेरे दोस्त, तुम अपने प्यार की तीव्रता से उत्तेजित थे, इसीलिए तुमने ऐसा व्यवहार किया; तुम क्या कर रहे थे, इसका आभास तक तुम्हें नहीं था। ज़ेना को भी यह समझाया जा सकता है !'

'मैं उसके प्यार में पागल हूं, उसकी खातिर मैं सब कुछ कुर्बान कर सकता हूं !' मोज़ग्ल्याकोव चिल्लाया।

'बेफिक्र रहो, उसकी नजरों में मैं तुम्हें ठीक सही साबित कर दूंगी !…'

'ओह मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्‌ना !'

'हां, मैं इस बात का ज़िम्मा लेती हूं ! मैं तुम्हें उसके पास ले

चलूंगी। तुम उसके सामने वही बातें कहना जो मैंने तुम्हें समझाई हैं।'

'ओह, आप कितनी दयालु हैं, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ! लेकिन—क्या यह फौरन इसी वक्त नहीं हो सकता !'

'ईश्वर बचाए ! तुम कितने अनुभवहीन हो, मेरे दोस्त ! वह इतनी स्वाभिमानी है ! वह समझेगी उसका और भी अपमान किया जा रहा है ! उसके दिल को चोट पहुंचेगी। कल मैं सब कुछ संभाल लूंगी। इस वक्त यहां से चले जाओ—उस व्यापारी के यहां अगर तुम्हें पसन्द हो तो—आज शाम को लौट आना, वैसे मैं सोचती हूं कि तुम्हारा आज लौटना उचित नहीं होगा।'

'मैं जाता हूं ! जाता हूं ! हे ईश्वर ! आपने मुझे मेरी जिन्दगी लौटा दी ! लेकिन एक सवाल और है—मान लीजिए कि काउन्ट इतनी जल्दी न मरे तो !'

'हे ईश्वर, तुम कितने सीधे हो, मेरे प्यारे दोस्त ! वाह, हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे काउन्ट को चिरायु करें, इस नेक, वीर, शरीफ और प्यारे आदमी की लम्बी उम्र के लिए हमें पूरे दिल से ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। सबसे पहले मैं दिन-रात आंखों में आंसू भर-कर यह प्रार्थना किया करूंगी, अपनी बेटी की खुशी के लिए ! लेकिन अफसोस की बात है कि काउन्ट की सेहत बहुत खराब मालूम होती है, और अब उन्हें राजधानी में जाना पड़ेगा, ज़ेना को सोसाइटी में ले जाने के लिए। मुझे डर है, आह ! मुझे डर है कि कहीं इसीमें उनका दम न निकल जाए ! लेकिन—प्यारे दोस्त, हम उनकी लम्बी उम्र के लिए प्रार्थना करते रहेंगे—बाकी तो ईश्वर के हाथों में है। तुम जाना ही चाहते हो ? ईश्वर तुम्हारा भला करे, मेरे अज़ीज़ ! उम्मीद रखो, दुःख सहन करो और बहादुर बनो, सबसे बड़ी बात तो यह है कि बहादुर बनो ! तुम्हारी नेकी के प्रति मेरे मन में कभी भी सन्देह नहीं हुआ।'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने हार्दिकता से उसका हाथ दबाया, और

वह पंजों के बल कमरे से बाहर चला गया।

'चलो एक बेवकूफ से तो पीछा छूटा। अब बाकियों से समझ लूंगी,' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने विजेता भाव से कहा।

दरवाज़ा खुला और ज़ेना भीतर दाखिल हुई। इस वक्त उसका चेहरा हमेशा से भी ज्यादा पीला था। उसकी आंखें चमक रही थीं।

'मां, जल्दी इस किस्से को खत्म करो, वरना मैं और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगी। यह सारी बात इतनी कमीनी और क्षुद्र है कि मेरा मन यहां से भाग जाने को करता है। मुझे थकाओ नहीं ! मुझे सताओ नहीं ! मैं तंग आ गई हूं, सुना तुमने, इस सारी गन्दगी से मैं तंग आ गई हूं।'

'ज़ेना ! क्या बात है मेरी प्यारी बच्ची ? क्या तुम—छिपकर सब कुछ सुनती रही हो ?' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने एक चिन्तातुर अंतर्भेदी दृष्टि ज़ेना पर डालते हुए पूछा।

'हां, मैंने सब कुछ सुना है। शायद तुम उस बेवकूफ की तरह मुझे भी लानत देना चाहोगी ! सुनो ! मैं कसम खाकर कहती हूं कि अगर तुम मुझे इसी तरह तड़पाती रहीं और इस नीचतापूर्ण कॉमिडी में हर किस्म के कमीने रोल खेलने पर मजबूर करती रहीं तो मैं इस सारी स्कीम को एक ही वार से खत्म कर दूंगी। तुम्हारे लिए इतना ही काफी है कि मैं असली सौदे के लिए तैयार हो गई हूं······मुझे खुद अपना पता नहीं था। इस सड़ांद से मेरा दम घुटा जा रहा है······'

ज़ेना ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करके कमरे से बाहर चली गई।

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने उसके पीछे एक स्थिर दृष्टि डाली और कुछ क्षणों के लिए किसी गहरी सोच में डूब गईं।

सहसा वे सचेत होकर बोलीं, 'मुझे जल्दी करनी चाहिए ! असली खतरा तो ज़ेना से ही है, बहुत बड़ा जोखिम, और कहीं वे सारे वहशी हमपर टूट पड़ें ! अगर उन्होंने सारे शहर में यह खबर फैला दी—जो

उन्होंने निश्चय ही फैला दी है—तो सारा खेल खत्म हो जाएगा ! ज़ेना से यह बदनामी बर्दाश्त नहीं होगी और वह पीछे हट जाएगी। काउन्ट को हर कीमत पर और फौरन ही देहात में पहुंचा देना चाहिए। पहले मैं खुद वहां जाकर अपने अहमक घरवाले को यहां पकड़ लाती हूं। आखिर वह किसी न किसी काम तो आएगा ही, मेरे लौटने तक काउन्ट की नींद पूरी हो चुकी होगी और हम यहां से चल देंगे।'

मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने घंटी बजाई।

'गाड़ी तैयार है ?'

'गाड़ी तो बहुत देर से तैयार खड़ी है', अर्दली ने जवाब दिया।

गाड़ी तो उसी वक्त से तैयार थी जब मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना काउन्ट को सहारा देकर ऊपर ले गई थीं।

वे बाहर जाने की पोशाक पहनकर तैयार हो गईं और ज़ेना को अपने निश्चय की रूपरेखा बताने के लिए और कुछ आदेश देने के लिए वे उसके कमरे में गईं। लेकिन ज़ेना ने बात तक न सुनी। वह अपने पलंग पर तकियों में चेहरा छिपाकर लेटी थी, उसके गालों पर आंसू बह रहे थे और वह अपने सफेद हाथों से अपने खूबसूरत लंबे बालों को नोच रही थी। उसकी बांहें कुहनियों तक नंगी थीं। वह रह-रहकर कांप रही थी, जैसे उसे बहुत ठंड लग रही हो। मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने बोलना शुरू किया, लेकिन ज़ेना ने अपना सिर तक ऊपर नहीं उठाया।

कुछ देर ज़ेना के सिरहाने खड़े रहने के बाद मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना अप्रतिभ होकर वहां से चली गईं। शायद वे समय की कमी सरगर्मी से पूरा करना चाहती थीं। गाड़ी में बैठकर उन्होंने कोचवान से घोड़ों को तेज़ भगाने के लिए कहा।

वे मन ही मन सोच रही थीं, 'ज़ेना ने सब कुछ सुन लिया, यह बहुत बुरा हुआ। जिन शब्दों से मैंने ज़ेना को समझाया था, ऐन वही शब्द मैंने मोज़ग्ल्याकोव के सामने भी इस्तेमाल किए थे। वह स्वाभिमानी लड़की

है, हो सकता है, उसने इसमें अपना अपमान समझा हो। हूं! सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोगों को शक होने से पहले ही सारा मामला तय हो जाए। ओफ, लेकिन मान लो मेरा बेवकूफ पति मेरी नाक काटने की खातिर ही घर पर न हुआ तब क्या होगा!'

इस कल्पना से ही मारया अलैक्जैंड्रोव्ना के क्रोध का पारा चढ़ गया, अफानासी मातविच की शामत आ गई थी। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना अपनी सीट पर बेचैनी से हिल रही थीं। घोड़े पूरी रफ्तार से भाग रहे थे।

१०

गाड़ी बढ़ा आ रही थी। हम पहले ही कह चुके हैं कि सुबह के वक्त जब मारया अलैक्जैंड्रोवना शहर की गलियों में काउन्ट का पीछा कर रही थीं, तो उनके मन में बड़ा शानदार विचार उठा था। हमने पाठकों से वादा किया था कि उचित समय आने पर हम इस विचार का जिक्र करेंगे। लेकिन पाठकों को पहले से ही सब कुछ मालूम हो चुका है। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने सोचा था कि वे काउन्ट को पकड़कर जल्द से जल्द गांव में ले जाएंगी जहां अफानासी मातविच निश्चिन्त होकर जिंदगी काट रहे थे। हम यह छिपाने की कोशिश नहीं करेंगे कि मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के मन में एक अजब-सी चिन्ता छाई थी। सचमुच के शूरवीरों के मन में भी ऐसी बेचैनी छा जाती है, खास तौर पर उस क्षण जब वे अपनी सफलता की मंजिल के निकट पहुंच जाते हैं। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने अपनी सहज वृत्ति से फौरन भांप लिया कि अब मोर्दा-

सोच में रहना उनके लिए खतरनाक होगा। वे मन ही मन दलील दे रही थीं, 'बस मैं एक बार देहात में पहुंच जाऊं, फिर चाहे सारा शहर सिर के बल खड़ा हो जाए, मेरी बला से—'

लेकिन देहात में भी ज्यादा देर रुकने का वक्त नहीं था। इस बीच कुछ भी हो सकता था, हालांकि हमारी वीरांगना के दुश्मनों द्वारा फैलाई गई इस अफवाह में हमें बिलकुल यकीन नहीं कि उन्हें इस वक्त पुलिस के हस्तक्षेप का डर था। संक्षेप में, हम कहेंगे कि वे जान गई थीं कि ज़ेना और काउन्ट की शादी जल्द से जल्द हो जानी चाहिए। गांव का पादरी उनके घर में आकर शादी की रस्म करवा सकता है। शादी परसों और अगर जल्दी ज़रूरत पड़ी तो कल भी हो सकती है। इससे पहले भी सिर्फ दो घंटों का नोटिस देकर शादियां हो चुकी हैं, काउन्ट को आसानी से समझाया जा सकता है कि शालीनता का तकाज़ा है कि बिना धूमधाम और जशन के शादी की रस्म अदा की जाए। शादी का यह तरीका ज्यादा फैशनेबल और सही है। अगर ज़रूरत पड़ी तो सारे मामले को रोमांटिक दृष्टिकोण से पेश किया जा सकता है जिससे काउन्ट के मन के कोमलतम तार झंकृत हो उठें। अगर कोई तरकीब कारगर नहीं हुई तो काउन्ट को शराब पिलाकर मदहोश किया जा सकता है और फिर चाहे जो कुछ हो, ज़ेना काउन्टेस बन जाएगी। मान लो कि पीटर्सबर्ग या मास्को में, जहां काउन्ट के रिश्तेदार हैं, इस किस्से की चर्चा हुई तो—मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने यह कहकर अपने-आपको तसल्ली दी कि अव्वल तो वहां तक खबर पहुंची ही नहीं होगी, दूसरे यह कि ऊंची सोसाइटी में कोई भी काम बिना बदनामी के नहीं हो पाता, खास तौर पर ब्याह-शादी। 'मोंते क्रिस्तो' और 'मेमोयर्ज़ दू दियाबल' की घटनाओं की तरह इस किस्से की भी ऊंची सोसाइटी में चर्चा होगी, और यह एकदम निराली और चमत्कारपूर्ण बात होगी। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना को यह भरोसा भी था कि ज़ेना के सोसाइटी में दाखिल होने की देर है कि अपनी

मां की सहायता से वह सब लोगों का परास्त कर देगी और फैशनेबल समाज की काउन्टेसें और शाहज़ादियां अकेले या मिलकर भी मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की मोर्दासोव-मार्का पिटाई के आगे नहीं टिक सकेंगी, जिसमें मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना माहिर हैं। इन्हीं विचारों से प्रेरणा पाकर मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अफानासी मातविच को लेने देहात जा रही थीं, क्योंकि इन स्कीमों की सफलता के लिए अफानासी मातविच की उपस्थिति नितान्त आवश्यक थी। काउन्ट से अगर कहा जाता कि वे अफानासी मातविच से मिलने गांव चलें तो वे शायद इन्कार भी कर दें, लेकिन अगर अफानासी मातविच स्वयं काउन्ट को चलने के लिए निमंत्रित करेंगे तो बात दूसरी हो जाएगी। और फिर सफेद टाई और कोट पहने जब बुजुर्ग और सम्मानित गृहपति कहेंगे कि वे काउन्ट के आने की खबर सुनकर उनसे मिलने आए हैं, तो इसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा, काउन्ट के अहंकार की भी तुष्टि होगी। इतने संजीदा और आग्रहपूर्ण निमन्त्रण को ठुकराना काउन्ट के लिए मुश्किल होगा। आखिरकार गाड़ी ने सफर का आखिरी मील भी तय कर लिया और कोचवान सोफ्रोन ने लकड़ी की बनी एक-मंज़ली इमारत के लम्बे पोर्च के आगे पहुंचकर घोड़ों को रोका। मकान टूटी-फूटी हालत में था और बहुत पुराना होने के कारण मटमैला-सा हो गया था। उसमें खिड़कियों की लम्बी कतार थी और चारों तरफ पुराने नींबू के पेड़ थे। यही मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना का देहात का मकान था, जिसमें आकर वे गर्मियां गुज़ारती थीं। खिड़कियों में रोशनी नज़र आ रही थी।

'कहां है वह अहमक !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने तूफान की तरह घर में दाखिल होते हुए कहा, 'यह तौलिया यहां किस लिए पड़ा है ? अहा ! वह अपना बदन पोंछ रहा था ! फिर हम्माम में गया था ? और हमेशा की तरह चाय गटक रहा है ? मेरी तरफ इस तरह आंखें फाड़कर क्यों देख रहे हो, बेवकूफ ! इसके बाल क्यों नहीं काटे गए ?

ग्रिश्का ! ग्रिश्का ! ग्रिश्का ! तुमने मालिक के बाल क्यों नहीं काटे, जैसा कि मैंने तुम्हें पिछले हफ्ते कहा था ?'

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने तय किया था कि वह अफानासी मातविच से अधिक शिष्टतापूर्वक पेश आएगी, लेकिन यह देखकर कि अफानासी मातविच अभी नहाकर आया था और मज़े में चाय की चुस्कियां ले रहा था, वे अपने गुस्से पर काबू न पा सकीं। वाह, वे खुद इतनी भगदड़ और परेशानी में हैं और वह निकम्मा अफानासी मातविच, जिसे लोक-व्यवहार का कोई ज्ञान नहीं, मज़े में बैठा है। इस अन्तर को देखकर वह गुस्से से आगबबूला हो उठीं। उधर वह अहमक या हम शिष्ट भाषा में कहें कि जिस व्यक्ति को यह पदवी दी गई थी, समावार के पास बैठा था। उसका मुंह आश्चर्य से खुला रह गया था और आंखें मूर्खतापूर्ण भय से बाहर निकली हुई थीं। वह अपनी पत्नी की तरफ इस तरह आंखें फाड़कर देख रहा था, जैसे उन्हें देखते ही उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई हो। फूहड़ ग्रिश्का दरवाज़े में ऊंघ रहा था और इस सारे दृश्य को आंखें झपकाकर देख रहा था।

ग्रिश्का ने भर्राई आवाज़ में जवाब दिया, 'मैं इनके बाल काटना चाहता था, लेकिन इन्होंने बाल कटवाने से इन्कार कर दिया। मैं कैंची लेकर इनके पास गया। मैंने कहा : मालकिन किसी भी वक्त यहां आ सकती हैं, तब हम दोनों की शामत आएगी, हम क्या करेंगे ? ये कहने लगे : इतवार तक रुक जाओ तब तक बाल कुछ लम्बे हो जाएंगे।'

'क्या कहा ? लम्बे बाल ? तो तुम्हारा ख्याल था कि मेरी अनुपस्थिति में तुम बाल बढ़ा लोगे ! न जाने इसके बाद तुम कौन-सी करतूत पर तुले हो ! और तुम्हारा ख्याल है कि लम्बे बाल तुम्हारे जैसे अहमकों के सिर पर अच्छे लगेंगे ! हे ईश्वर, कैसी मुसीबत है ! यह बदबू कैसी आ रही है ? मैं तुमसे पूछ रही हूं—राक्षस, यह बदबू कैसी है ?' पत्नी ने बेचारे अफानासी मातविच के नज़दीक बढ़ते हुए पूछा, जिसके होश-

हवास एकदम गायब हो गए थे।

'माई—माई—डियर,' भय से त्रस्त पति ने अपनी कुर्सी से उठे बगैर याचना-भरी दृष्टि से अपने ज़ालिम की ओर देखा।

'मैंने कितनी बार तुम्हें समझाने की कोशिश की है कि मैं तुम्हारी डियर नहीं हूं, गधे आदमी ! डियर, वाह रे बौने ! एक संभ्रांत महिला को, जिसकी जगह तुम्हारे जैसे गधे के पास नहीं बल्कि ऊंची सोसाइटी में है, इस नाम से पुकारते तुम्हें शर्म नहीं आती ?'

'लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना, तुम मेरी ब्याहता पत्नी हो न ! यह अर्र—शादीशुदा लोगों का तरीका है !' अफानासी मातविच ने हकलाते हुए कहा और अपने बालों को बचाने के लिए दोनों हाथ ऊपर उठा दिए।

'छिः, तुम्हारी सूरत कितनी गंदी है ! लकड़ी के कुन्दे ! ब्याहता पत्नी ! आजकल ब्याहता पत्नियों की बात भला कौन करता है ? ऐसा बेवकूफी-भरा जवाब मैंने कभी नहीं सुना ! ज़रा सोचो तो, ऊंची सोसाइटी में अगर कोई इस कमीने घृणित शब्द का इस्तेमाल करे ! और तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मुझे याद दिलाओ कि मैं तुम्हारी पत्नी हूं, जब कि मैं हमेशा इस बात को भूलने की कोशिश करती हूं। तुम अपने हाथों से अपना चेहरा किस लिए ढांप रहे हो ? ज़रा इस आदमी के बालों को तो देखो ! पानी चू रहा है ! ये तो तीन घण्टे तक नहीं सूख सकते ! मैं इसे अपने साथ कैसे ले जा सकूंगी ? लोगों के सामने कैसे ले जाऊंगी ? हाय, अब मैं क्या करूं ?'

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना गुस्से में हाथ मलती हुई कमरे में चक्कर काटने लगीं। यह कोई ऐसी बड़ी आफत नहीं थी, लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अपनी अत्याचारी और निरंकुश प्रवृत्ति पर काबू नहीं पा सकती थीं। वे हमेशा अफानासी मातविच पर अपना गुस्सा उंडेलना चाहती थीं, क्योंकि अत्याचार करने की प्रवृत्ति एक ऐसी आदत है जो

मन में कभी तृप्त न होने वाली भूख जगा देती है। इसके अलावा सब जानते हैं कि एक खास श्रेणी की सुसंस्कृत महिलाएं एकान्त में किस तरह व्यवहार करती हैं, मैं इसी तरह की एक मिसाल पाठकों के सामने रखना चाहता था। अफानासी मातविच भयभीत होकर अपनी पत्नी की हर गतिविधि को देख रहा था और उसके पसीने छूट रहे थे।

'ग्रिश्का ! अपने मालिक को फौरन कपड़े पहनाओ ! कोट, पतलून, सफेद टाई, वास्कट—जल्दी करो ! इनका हेयर-ब्रश कहां है ?'

'लेकिन मैं अभी नहाकर आया हूं माई डियर ! अगर मैं शहर गया तो मुझे सर्दी लग जाएगी !'

'नौनसेन्स ?'

'लेकिन मेरे बाल गीले हैं।'

'हम उन्हें जल्द सुखा देंगे ! ग्रिश्का, ब्रश लाकर इनके बालों पर फेरो—जब तक सूख न जाएं ज़ोर से ! और ज़ोर से ! शाबाश, इस तरह !'

मालकिन द्वारा प्रोत्साहन पाकर स्वामिभक्त और उत्साही ग्रिश्का ने मालिक को दोनों कंधों से पकड़ लिया और सोफे पर धकेलकर ज़ोर से ब्रश फेरने लगा। अफानासी मातविच सिहर उठा और उसकी आंखों में आंसू आ गए।

'इधर आओ ! इन्हें उठाओ ग्रिश्का ! पोमेड किधर है ? सिर ऊपर उठाओ, निकम्मे आदमी ! सिर ऊपर उठाओ ! जोंक !'

और मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना अपने हाथों से पति के मोटे उलझे हुए बालों में बेरहमी से पोमेड मलने लगीं—अफानासी मातविच सोच रहा था कि बालों को कटवा देना कहीं बेहतर था। हांफते-फुफकारते हुए अफानासी मातविच ने धैर्यपूर्वक यह ऑप्रेशन बर्दाश्त कर लिया।

'तुम चिमगादड़ की तरह मेरा खून पीते हो गंदे आदमी ! नीचे झुको !' उसकी पत्नी बोली।

'तुम्हारा खून पीता हूं, माई डियर ?' पति पूरी ताकत से सिर झुकाकर बुदबुदाया।

'अहमक ! उपमा भी नहीं समझते ! अब बालों में कंघी फेरो, और तुम इन्हें कपड़े पहनाओ जल्दी !'

हमारी वीरांगना एक आरामकुर्सी पर बैठ गईं और देखने लगीं कि अफानासी मातविच को किस तरह कपड़े पहनाए जा रहे हैं। अब उसे होश आ गया था और जब टाई बांधने की बारी आई तो उसने गांठ किस तरह बांधनी चाहिए, इसपर अपनी राय देने का साहस किया। कोट पहनने के बाद उसका मिज़ाज खुश हो गया और वह बड़े संतोष से शीशे में अपनी सूरत देखने लगा।

'मुझे कहां ले जा रही हो, मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ?' पति ने संयत स्वर में पूछा।

मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

'ज़रा सुनो तो सही ! अरे ओ ममी[1] ! तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मुझसे पूछो, मैं तुम्हें कहां ले जा रही हूं ?'

'लेकिन माई डियर—मैं जानना चाहता हूं।'

'खामोश ! तुमने फिर मुझे माई डियर कहा, खास तौर पर जब हम बाहर जा रहे हैं ! तुम्हें पूरा महीना चाय नहीं मिलेगी।'

भयभीत पति खामोश हो गया।

'ऊंह, तुम्हारे पास एक भी तमगा नहीं है, क्यों ?' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने तिरस्कारपूर्वक पति के काले कोट को देखते हुए कहा।

यह अफानासी मातविच की बर्दाश्त से बाहर की बात थी।

'बड़ा अफसर तमगे देता है माई डियर ! और मैं मुज़ीक[2] नहीं हूं काऊंसिलर हूं !' ओजस्वी क्रोध के आवेश में पति बोला।

'क्या ? क्या ? तो तुम्हें बहस करना भी आ गया है, क्यों ? तुम

---

१. मसाला लगाकर सुरक्षित रखी गई लाश २. रूसी किसान।

मुझीक, तुम ? अरे कुत्ते ! गनीमत है कि मेरे पास तुमसे मगजमच्ची करने का वक्त नहीं है, वरना—खैर, वह बाद में देख लूगी ! ग्रिश्का, इनका हैट लाओ, ओवरकोट लाओ ! और हमारे पीछे इन तीनों कमरों को ठीक कर देना, कोने वाले हरे कमरे को भी। फौरन इसी वक्त झाड़ू लेकर सफाई शुरू कर दो ! शीशों और घड़ियों के पर्दे उतार दो और एक घंटे के भीतर ही सारा घर ठीक कर लो। खुद भी कोट पहन लेना और बाकी नौकरों को दस्ताने दे देना। सुना ग्रिश्का, सुन रहे हो ?'

दोनों गाड़ी में बैठ गए।

अफानासी मातविच इस सारे काण्ड पर चकित था। उधर मारया अलक्जेंड्रोव्ना सोच रही थी कि पति के दिमाग में किस तरह सारी स्थिति डाली जाए, और किस तरह उसे आदेश दिए जाएं। लेकिन पति ने पहले से ही यह बात भांप ली और खामोशी तोड़ते हुए बोला :

'कल रात मैंने एक मौलिक सपना देखा, मारया अलेक्जेंड्रोव्ना !'

'ऊंह, कम्बख्त ममी ! मेरा ख्याल था कि तुम कोई बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कहने जा रहे हो ! तुम और तुम्हारे सपने ! मुझीक जैसे सपनों से मेरी शान्ति में खलल डालने की हिम्मत तुममें कैसे हुई ? मौलिक ! मौलिक का अर्थ जानते हो ? सुनो, मैं तुम्हें आखिरी बार कहे दे रही हूं कि अगर तुमने घर पहुंचकर इस सपने का या किसी ऐसी ही ऊट-पटांग बात का जिक्र किया तो मैं···मैं नहीं जानती कि तुम्हारा क्या करूंगी। अब सुनो···काउन्ट–क आकर मेरे पास ठहरे हैं। काउन्ट–क की याद है ?'

'हां याद है। वे कैसे आ गए ?'

'खामोश ! इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। एक शिष्ट मेजबान की तरह तुम्हें फौरन उन्हें देहात चलने का निमन्त्रण देना होगा। इसीलिए मैं तुम्हें वहां ले जा रही हूं। हम गाड़ी में बैठकर आज ही गांव लौट आएंगे। लेकिन यदि तुमने आज सारी शाम, कल, परसों या किसी भी

दिन एक भी शब्द मुंह से निकालने की जुर्रत की तो मैं तुम्हें पूरे एक साल के लिए बत्तखों की देखभाल के लिए भेज दूंगी। तुम कुछ नहीं बोलोगे—एक भी शब्द नहीं—यही तुम्हारा एकमात्र फर्ज है—समझ गए!'

'और मान लो अगर किसीने मुझसे कोई सवाल किया?'

'तुम तब भी चुप रहना।'

'लेकिन मैं सारे वक्त खामोश नहीं रह सकता, मरया अलैक्जैंड्रोव्ना!'

'अच्छा एक ही शब्द में जवाब देना…'

'मिसाल के लिए 'आहं' या इसी तरह का कोई और शब्द। लोगों को यह दिखाने के लिए कि तुम समझदार आदमी हो और समझ-सोचकर ही बात करते हो।'

'आहं!'

'अब जरा बात समझने की कोशिश करो। मैं तुम्हें इसलिए ले जा रही हूं क्योंकि काउन्ट के आने की खबर सुनकर तुम्हें बड़ी खुशी हुई और तुम जल्दी से उन्हें नमस्कार करने के लिए, और उन्हें देहात में आने का निमन्त्रण देने के लिए मोर्दासोव चले आए। समझ गए?'

'आहं!'

'अब आहं-आहं मत करो बेवकूफ! जवाब दो!'

'अच्छी बात है माई डियर, तुम जैसा कहोगी, वैसा ही करूंगा, लेकिन मैं काउन्ट को निमंत्रण किसलिए दूं?'

'क्या कहा? फिर बहस करने लगे? तुम्हें इस बात से क्या मतलब? यह पूछने की तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी?'

'मैं तो सिर्फ जानना चाहता हूं मारया अलैक्जैंड्रोव्ना—अगर मुझे खामोश रहने का हुक्म है तो मैं काउन्ट को निमन्त्रण कैसे दे सकूंगा?'

'तुम्हारी तरफ से मैं बात करूंगी, तुम सिर्फ झुककर नमस्कार करना।

—सुना, सिर्फ नमस्कार करना, अपना हैट उतारकर हाथ में ले लेना—समझ गए?'

'समझ गया माई डियर—मेरा मतलब है, मारया अलैक्जैंड्रोव्‌ना!'

'काउन्ट बड़े रसिक और तीक्ष्ण बुद्धि वाले जीव हैं। अगर वे कोई बात कहें, चाहे तुमसे न भी कहें तब भी तुम जवाब में सिर्फ प्रसन्न भाव से मुस्कराना—सुन लिया?'

'आहं।'

'फिर आहं-आहं करना शुरू कर दिया! मेरी बात पर आहं कहने की कोई ज़रूरत नहीं। मुझे सीधे-सीधे जवाब दो, तुमने मेरी बात सुनी या नहीं?'

'सुन ली, मारया अलैक्जैंड्रोव्‌ना, सुन ली। भला यह कैसे हो सकता था कि मैं तुम्हारी बात न सुनता? और मैं तो तुम्हारे हुक्म के मुताबिक सिर्फ अभ्यास करने की खातिर आहं कर रहा हूं। लेकिन मुझे यह सोचकर ताज्जुब हो रहा है कि अगर काउन्ट ने कुछ कहा—और मान लो अगर मुझसे कुछ पूछ बैठे तो क्या मैं सिर्फ उनकी तरफ देखकर मुस्कराता ही रहूंगा?'

'कैसे अहमक हो! मैं तुमसे पहले कह चुकी हूं कि तुम कुछ मत कहना। तुम्हारी जगह मैं जवाब दूंगी, तुम सिर्फ देखकर मुस्कराते रहना।'

'लेकिन वे सोचेंगे कि मैं गूंगा हूं।' अफानासी मातविच ने ऐतराज़ किया।

'सोचेंगे तो क्या होगा? जो चाहे सोचें, लेकिन कम से कम इससे तुम्हारी बेवकूफी तो छिपी रहेगी।'

'आहं, अच्छा अगर और लोगों ने कुछ पूछा?'

'कोई कुछ नहीं पूछेगा, वहां और कोई रहेगा ही नहीं और खुदा न खास्ता अगर कोई आ भी गया और किसीने तुमसे पूछा या कुछ कहा तो

फौरन व्यंग्यभरी मुस्कराहट से जवाब देना। जानते हो व्यंग्यभरी मुस्कराहट का क्या अर्थ होता है?'

'तीक्ष्ण बुद्धि—है न!'

'अहमक, मैं तुम्हें तीक्ष्ण बुद्धि का मतलब समझाती हूं। भला तुमसे भी किसीको तीक्ष्ण बुद्धि की उम्मीद हो सकती है! इसका अर्थ है व्यंग्य-भरी मुस्कराहट, समझ गए—तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट।'

'आहं।'

'ओह बेवकूफ आदमी! यह ज़रूर मेरी बेइज्ज़ती करवाएगा।' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना अपने-आपसे फुसफुसाईं, 'यह आदमी मेरा खून पीने पर तुला हुआ है। अब मैं सोचती हूं कि इसे साथ नहीं लाना चाहिए था।'

इस तरह सोचती, कुढ़ती और बिगड़ती हुई मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना गाड़ी की खिड़की से बाहर देख रही थीं और कोचवान को और भी तेज़ी से गाड़ी चलाने का आदेश दे रही थीं। घोड़े तेज़ी से भाग रहे थे, लेकिन मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को रफ्तार धीमी मालूम होती थी। अफानासी मातविच खामोश एक कोने में बैठे हुए मन ही मन अपना सबक याद कर रहा था। आखिरकार गाड़ी शहर की सड़कों में दाखिल हुई और आकर मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के घर के आगे खड़ी हो गई। लेकिन हमारी हीरोइन अभी गाड़ी से उतरी भी नहीं थी जब उन्हें दो घोड़ों वाली एक बन्द स्लेज गाड़ी दिखाई दी। यह वही गाड़ी थी, जिसमें अन्ना निकोलाईव्ना एन्तीपोवा अक्सर बाहर जाती थीं। गाड़ी में दो सीटें थीं और इस वक्त वहां दो महिलाएं बैठी थीं, एक तो अन्ना निकोलाईव्ना खुद थी, दूसरी मतालिया दमित्रीव्ना थी जो हाल ही में उसकी पक्की सहेली और शिष्या बन गई थी। मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना का दिल डूबने लगा, लेकिन अभी वे कुछ कहने भी न पाई थीं कि एक दूसरी बंद स्लेज गाड़ी आ गई। उल्लासपूर्ण आवाज़ें सुनाई दीं।

'मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना! और अफानासी मातविच भी। आप

यहां ? कहां से आ रहे हैं ? कैसी अच्छी बात है। हम लोग तो पूरी शाम गुजारने यहां आए हैं। आपको देखकर कितना ताज्जुब हुआ।'

सारी औरतें पोर्च की सीढ़ियों पर चिड़ियों की तरह चहकती हुई चढ़ गईं। मारया अलैक्जेंड्रोव्ना अपनी आंखों और कानों पर विश्वास नहीं कर सकीं।

'इनका सत्यानाश हो ! इसके पीछे जरूर कोई साजिश है। मुझे इसका पता लगाना चाहिए। तुम मुझे मात नहीं दे सकतीं, कव्वियो ! देखो, मैं क्या करती हूं !'

११

जाहिरा तौर पर मोजग्ल्याकोव मारया अलैक्जेंड्रोव्ना के यहां से सान्त्वना और प्रेरणा लेकर लौटा था। उसे एकान्त की जरूरत थी, इस लिए वह बोरोदुएव के यहां नहीं गया। भीतर उमड़ते हुए ओजपूर्ण और रोमांटिक सपनों की बाढ़ ने उसके मन को अशान्त कर दिया था। वह एक गंभीर दृश्य की कल्पना कर रहा था, उसके क्षमापूर्ण हृदय से आंसू निकल रहे हैं, पीटर्सबर्ग के किसी बाल डांस में उसका चेहरा शोक से पीला पड़ गया है, स्पेन, गुआदलकीविर, प्यार, मरणासन्न काउन्ट ने दोनों प्रमियों के हाथ एक-दूसरे को पकड़ा दिए हैं। फिर जेना जैसी खूबसूरत लड़की से उसकी शादी होगी, जो उसे बेहद चाहेगी और उसकी बहादुरी और सुसंस्कृत व्यक्तित्व को देखकर चकित रह जाएगी। काउन्ट की विधवा जेना से शादी करने के बाद ऊंची सोसाइटी की कोई काउन्टेस भी गुप्त रूप से उसे चाहने लगेगी, फिर उप-गवर्नर का ओहदा, पैसा—

संक्षेप में मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने जिन चटकीले रंगों से उसके भविष्य को चित्रित किया था, उन चित्रों ने मोज़ग्ल्याकोव के आत्मतुष्ट मन को सहलाकर लुभा डाला था और उसके अहंकार को प्रोत्साहन दिया था। लेकिन फिर भी, मैं नहीं जानता यह कैसे हुआ, जब उसका मन इस हर्षोन्माद से ऊब गया तो इस ख्याल ने आकर उसके रंग में भंग डाल दिया कि ये सब भविष्य की बातें हैं उसकी वर्तमान स्थिति तो नितान्त हास्यास्पद है। जब उसे यह ख्याल आया तो उसने देखा कि वह टहलता हुआ बहुत दूर मोर्दासोव की अपरिचित बस्तियों में चला आया है। अंधेरा हो रहा था, गलियों में, जहां दोनों तरफ धरती में धंसे हुए छोटे मकानों की कतारें थीं, कुत्ते भौंक रहे थे। छोटे शहरों में, खास तौर पर उन मुहल्लों में, जहां न चोरी करने की, न चोरी से बचने की कोई चीज़ होती है, ऐसे कुत्तों की भरमार रहती है। बर्फबारी हो रही थी। कभी-कभी कोई दूकानदार, जिसे घर लौटने में देर हो गई थी या पोस्तीन का कोट और ऊंचे बूट पहने कोई औरत पास से गुज़र जाती थी। इन सब बातों से न जाने क्यों पावेल अलैक्ज़ेन्ड्रोविच को चिढ़ हो रही थी—यह खतरनाक लक्षण था, क्योंकि अच्छी हालत में सब चीज़ें आकर्षक और इन्द्रधनुष जैसी रंगीन दिखाई देती हैं। पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच को इस बात की याद आए बगैर न रह सकी कि अभी तक तो मोर्दासोव में उसीकी तूती बोलती थी। जहां भी वह जाता था लोग उसे 'दूल्हा' कहकर बधाई देते थे, जिसे सुनकर उसे बड़ी खुशी होती थी। उसे अपने 'दूल्हा' होने पर अभिमान था, लेकिन अब अचानक वह सब लोगों की आंखों में ठुकराए हुए प्रेमी के रूप में आएगा। सब लोग उसकी हंसी उड़ाएंगे। जो भी हो, वह लोगों को अपनी असली स्थिति के बारे में नहीं समझा सकेगा, न ही उनसे पीटर्सबर्ग के बॉलडांसों की, खंभों की और स्पेन की बातें कर सकेगा। इस तरह सोच, कुढ़न और परेशानी के बीच उसके मन में आखिर एक ऐसा विचार उठा जो धुंधले रूप में बहुत देर से उसके

दिमाग में चक्कर काट रहा था। मान लो सारी बात झूठ [illegible] मान लो अगर मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के दिखाए सब्ज बाग ज्यों के त्यों रह गए। वह इस बात को नहीं भूल सका कि मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना बड़ी चालाक औरत है और चाहे सब लोग उसकी इज्जत करते हैं, फिर भी वह पक्की चुगलखोर है और सुबह से लेकर शाम तक झूठ बोलती रहती है···हो सकता है कि उसने किसी खास कारण से मोजग्ल्याकोव से पिंड छुड़ाने के लिए सारी बातें की हों और फिर सब्ज बाग दिखाने में लगता ही क्या है? उसे ज़ेना का भी ख्याल आया। विदाई के वक्त ज़ेना ने उसे जिस नज़र से देखा था, उसमें कहीं प्यार या आकर्षण का संकेत तक न था। इस बात से उसे याद आया कि भविष्य में चाहे कुछ हो, लेकिन एक घंटे पहले ही उसने अपने कानों से मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के मुंह से अपने लिए 'मूर्ख' शब्द सुना था। इस याद से उसकी विचार-धारा एकदम रुक गई और उसका चेहरा अपमान की यन्त्रणा से लाल हो गया। उसकी आंखों में आंसू आ गए। सबसे बड़ी बात यह हुई कि अगले ही क्षण एक अप्रिय घटना हुई—उसका पैर फिसल गया और वह लकड़ी के तख्तों से बने रास्तों से फिसलकर बर्फ में जा गिरा—इसी वक्त कुत्तों के एक झुंड ने, जो बहुत देर से भौंकते हुए उसका पीछा कर रहे थे, आकर चारों तरफ से उसपर हमला बोल दिया। सबसे छोटा कुत्ता, जो सबसे ज्यादा तेज था, आकर उसके कोट को दांतों से चबाने लगा। कुत्तों को किसी तरह भगाकर, ज़ोर से गालियां बकता हुआ और अपनी किस्मत को कोसता हुआ पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच अपना फटा कोट और आत्मा में असह्य अवसाद की भावना लेकर सड़क के एक कोने में आकर खड़ा हो गया, तभी उसे पता चला कि वह रास्ता भूल गया है। यह सब जानते हैं कि अपरिचित मुहल्ले में, खास तौर पर रात के वक्त अगर कोई रास्ता भूलकर आ जाए तो वह सीधी सड़क पर चलने की बजाय किसी अदृश्य शक्ति से प्रेरित होकर हर गली के

मोड़ पर मुड़ता जाता है। यह तरीका अपनाकर पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच एकदम रास्ता भूल गया। 'जहन्नुम में जाएं ये ऊंचे विचार !' उसने गुस्से में थूक दिया। 'शैतान तुम लोगों से समझे ! भाड़ में जाएं तुम्हारी सुसंस्कृत भावनाएं और स्पेन !' उस समय मोज़ग्ल्याकोव का जो हुलिया था उसे मैं हरगिज़ आकर्षक नहीं कह सकता। आखिरकार थका-मांदा, दो घंटे भटकने के बाद वह सहसा मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना के घर के आगे बने पोर्च में जा पहुंचा। वहां खड़ी गाड़ियों की संख्या देखकर वह चकित रह गया। उसने मन ही मन पूछा, 'क्या इन लोगों के मेहमान आए हैं और कोई दावत हो रही है ? लेकिन दावत किसलिए हो रही है।' एक नौकरसे, जो मोज़ग्ल्याकोव को देखकर बाहर आया था, उसे खबर मिली कि मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना आज गांव गई थीं। उनके साथ अफानासी मातविच भी सफेद टाई लगाकर आए हैं, काउन्ट जाग गए हैं, लेकिन अभी तक नीचे नहीं आए। पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच बिना कुछ कहे, सीधा ऊपर अपने चचा के कमरे में जा पहुंचा। उसकी मानसिक स्थिति उस बिन्दु पर पहुंच गई थी जब एक कमज़ोर आदमी बदला लेने के लिए भयंकर से भयंकर और जघन्य से जघन्य काम करने का फैसला कर लेता है और उसके मन में यह ख्याल तक नहीं आता कि वह जिन्दगी भर उसके लिए पछताएगा।

ऊपर जाकर उसने देखा कि काउन्ट अपने सफरी सामान के आगे एक आरामकुर्सी पर बैठे हैं। उनका सिर बिल्कुल गंजा था, लेकिन उन्होंने अपनी नुकीली दाढ़ी और मूंछें पहन रखी थीं। सफेद बालों वाले एक बूढ़े नौकर के हाथ में काउन्ट की बनावटी बालों वाली टोपी थी। यह नौकर ईवान पैंखोमिच काउन्ट का चहेता नौकर था। काउन्ट की शक्ल अत्यन्त दयनीय दिखाई दे रही थी। क्योंकि अभी तक शराब की खुमारी नहीं उतरी थी। वे कुर्सी पर सिकुड़कर बैठे, मूर्खों की तरह आंखें झपकाकर, रुंआसी नज़रों से इस तरह मोज़ग्ल्याकोव को देख

रहे थे, जैसे उसे पहचानते ही न हों।

'कैसी तबियत है, चचाजान !' मोज़ग्ल्याकोव ने पूछा

'अरे···तुम हो ?' चचा ने कुछ देर खामोश रहकर पूछा। 'कुछ देर के लिए मेरी आंख लग गई थी। हे ईश्वर !' सहसा काउन्ट ज़ोर चिल्लाए, जैसे कोई मुर्दा फिर से ज़िन्दा हो गया हो, 'मेरे सिर पर··· बालों की टोपी नहीं है !'

'चिन्ता न करें चचाजान, मैं···मैं आपको टोपी पहनाने में मदद कर दूंगा।'

'आह, अब तुम मेरा भेद जान गए ! मैंने कहा था कि दरवाज़ा भीतर से बंद हो जाना चाहिए। अच्छा देखो, मेरे दोस्त, तुम्हें अब भी मेरे सामने ईमान की कसम खानी होगी और वादा करना होगा कि तुम इस भेद का फायदा नहीं उठाओगे न ही किसीको यह बताओगे कि मेरे बाल नकली हैं।'

'वाह चचाजान ! मैं ऐसी कमीनी हरकत भला कैसे कर सकता हूं !' मोज़ग्ल्याकोव ने जवाब दिया। वह बूढ़े को खुश करने के लिए उत्सुक था—अपने स्वार्थ के कारण।

'हां, हां ! देखता हूं तुम निहायत नेक आदमी हो। बस, बस, ठीक है ! मैं तुम्हें अपने सारे भेद बताकर चकित कर दूंगा। कहो मेरे अज़ीज़ तुम्हें मेरी मूंछें कैसी लगीं ?'

'शानदार, चचाजान, शानदार ! भला आपकी मूंछें इतने बरसों तक कैसे सलामत रहीं ?'

'धोखा मत खाओ मेरे दोस्त, ये नकली मूंछें हैं।' काउन्ट ने विजेता भाव से पावेल अलैक्ज़ैन्ड्रोविच की तरफ देखते हुए कहा।

'नहीं, क्या सच ? मुझे तो विश्वास नहीं होता ! और आपके गलमुच्छें···शायद आप उन्हें रंगते हैं, यह आपको मानना ही पड़ेगा चचाजान !'

'रंगता हूं ? नहीं वे भी एकदम नकली हैं।'

'नकली ? नहीं चचाजान, आप जो चाहें कहें, लेकिन मुझे आपकी बात पर यकीन नहीं होता ! आप जरूर मेरा मजाक उड़ा रहे हैं !'

'ईमान से कहता हूं दोस्त ! और जानते हो, सब लोग तुम्हारी ही तरह धोखे में आ जाते हैं। यहां तक कि स्तेपानीदा मातवीव्ना को भी यकीन नहीं होता, हालांकि कभी-कभी वह खुद अपने हाथों से मेरे चेहरे पर मूंछें लगाती है। लेकिन मुझे यकीन है, मेरे दोस्त, कि तुम मेरे भेद को अपने तक ही सीमित रखोगे, वचन दो—"

'मैं कसम खाकर कहता हूं चचाजान, कि किसीसे नहीं कहूंगा। मैं फिर पूछता हूं—क्या आप समझते हैं कि मैं ऐसी नीच हरकतें कर सकता हूं ?'

'ओह मेरे दोस्त, आज जब तुम वहां नहीं थे तो मैं बुरी तरह गिर पड़ा था। फियोफिल ने मुझे फिर गाड़ी में से धक्का दे दिया था।'

'फिर ? किस वक्त ?'

'हम आश्रम के नजदीक पहुंच गए थे—'

'मैं जानता हूं—चचाजान, आज सुबह की बात है।'

'नहीं, नहीं, सिर्फ दो घंटे पहलेकी यह बात है। मैं आश्रम की तरफ जा रहा था, उसने मुझे धक्का दे दिया। मैं बेहद डर गया—अभी भी मुझे अच्छी तरह होश नहीं आया।'

'वाह, चचाजान, आप तो सो रहे थे !' मोजग्ल्याकोव ने चकित भाव से कहा।

'हां, हां, सो रहा था···लेकिन बाद में बाहर गया था और शायद —मैं—ओह कैसी अजब बात है !'

'मैं आपको यकीन दिलाता हूं चचाजान, कि आप सपना देख रहे होंगे। आप दोपहर भर सोते रहे।'

'सच ?' काउन्ट ने सोचकर जवाब दिया, 'अरे हां, शायद यह सपना

ही था ! लेकिन जानते हो, मुझे सपने की सारी बातें याद हैं।
मैंने सींगों वाला एक भयंकर बैल देखा, फिर मुझे एक डिस्ट्रिक्ट एटर्नी दिखाई दिया, उसके सिर पर भी सींग थे !'

'शायद वह निकोलाई वैसीलिच एन्तीदोव था, क्यों चचाजान !'

'अरे हां, शायद वही था। इसके बाद मुझे नैपोलियन ब्यूनापार्त दिखाई दिया। जानते हो, मेरे अजीज, सब लोग कहते हैं कि मैं नैपोलिपन ब्यूनापार्त जैसा हूं। लेकिन मेरी आकृति पुराने जमाने के पोपों की तरह शानदार है। तुम्हारा क्या ख्याल है मेरे अजीज, क्या मेरी शक्ल पोप जैसी है ?'

'मेरा ख्याल है कि आपकी शक्ल नैपोलियन से ज्यादा मिलती है, चचाजान !'

'हां, हां, चेहरा तो जरूर मिलता है ! मैं तुमसे सहमत हूं मेरे अजीज ! मैंने सपने में देखा कि ब्यूनापार्त एक द्वीप के भीतर कैद है। वह इतना बातूनी और शरारती आदमी था कि उसे देखकर मुझे बड़ी हंसी आई।'

'नैपोलियन ? चचाजान !' पावेल अलैक्जैन्ड्रोविच ने गौर से अपने चचा की तरफ देखा। उसके मन में एक विचित्र विचार कौंधा था, जिसे वह पूरी तरह समझ नहीं पाया था।

'हां, हां, नैपोलियन। हम दोनों में फिलास्फी पर बहस हुई। जानते हो, मेरे दोस्त, मुझे सचमुच इस बात का अफसोस है कि अंग्रेजों ने उसके साथ इतनी सख्ती की। माना कि अगर अंग्रेज उसे कैद न करते तो वह फिर देशों पर धावा बोल देता। वह बड़ा दुःसाहसी आदमी था ! लेकिन फिर भी मुझे उसपर बहुत तरस आया ! अंग्रेजों की जगह अगर मैं होता तो ऐसा हरगिज न करता। मैं उसे एक उजाड़ द्वीप में रखता।'

'उजाड़ द्वीप में किसलिए रखते ?' मोज़ग्ल्याकोव ने अनमने भाव

से पूछा।

'अच्छा तो बसे हुए द्वीप में रखता, जहां ज्यादा लोग न होते। फिर मैं उसके मनोरंजन के लिए थियेटर, संगीत, बैले का प्रबन्ध करता, सब सरकारी खर्च पर ! मैं उसे घूमने की इजाजत भी देता, लेकिन पहरे में। नहीं तो वह फौरन वहां से भाग जाता ! उसे खास किस्म की पेस्ट्रियां बहुत पसंद थीं। मैं रोज उसके लिए पेस्ट्रियां बनवाता। जानते हो, मैं उससे एक पिता की तरह पेश आता। मुझे यकीन है कि उसे अपने किए पर अफसोस होता।'

मोज़ग्ल्याकोव बेचैनी से नाखून चबाता हुआ अनमने भाव से बूढ़े की बकवास सुन रहा था। काउन्ट की नींद अभी पूरी तरह से नहीं खुली थी। मोज़ग्ल्याकोव बातचीत में शादी का प्रसंग लाने के लिए बेचैन था, इसका कारण उसे खुद भी मालूम नहीं था। उसकी नसों में भयंकर क्रोध जाग उठा था। सहसा बूढ़ा आश्चर्य से चीख पड़ा।

'ओह, मेरे अज़ीज़, मैं तुम्हें एक बात बताना तो भूल ही गया। ज़रा सोचो तो सही, आज मैंने एक लड़की से शादी का प्रस्ताव किया था !'

'शादी का प्रस्ताव किया था चचाजान !' मोज़ग्लयाकोव की तंद्रा टूटी।

'हां, हां, शादी का प्रस्ताव किया था। तुम जा रहे हो पैखोमिच ? तो जाओ! वह कितनी खूबसूरत है! लेकिन मैं मानता हूं मेरे अज़ीज़— मैंने गलती की। मेरी समझ में यह बात अभी आई है। हे ईश्वर !'

'लेकिन चचाजान, यह बताइए कि आपने शादी का प्रस्ताव कब किया ?'

'सच पूछो तो मुझे यह याद ही नहीं—शायद यह भी एक सपना था—ओह कैसी अजब बात है !...'

मोज़ग्ल्याकोव खुशी से कांप उठा। उसके दिमाग में एक और

विचार कौंध उठा। उसने अधीर स्वर में पूछा, 'आपने किसके आगे शादी का प्रस्ताव रखा था, चचाजान ?'

'यहां की गृहस्वामिनी की बेटी से, मेरे अज़ीज़—उस खूबसूरत लड़की से। अरे हां, मुझे उसका नाम तो भूल ही गया, लेकिन देखो मेरे अज़ीज़, मैं शादी हरगिज़ नहीं कर सकता, लेकिन अब क्या किया जाए ?'

'शादी करना आपके लिए घातक सिद्ध होगा। लेकिन मैं आपसे एक और सवाल पूछने की इजाज़त चाहता हूं, चचाजान। क्या आपको पूरी तरह यकीन है कि आपने शादी का प्रस्ताव किया था ?'

'हां, हां, मुझे पूरा यकीन है।'

'और मान लीजिए कि यह भी एक सपना निकले, जैसे आपने सपने में देखा था कि आपको दुबारा गाड़ी में से धकेल दिया गया था ?'

'हे ईश्वर ! मैंने सच सपना ही देखा था ! अब मेरी समझ में नहीं आता कि नीचे जाकर लोगों से किस तरह मिलूं। क्या किसी तरह चुपके से यह मालूम नहीं किया जा सकता कि मैंने शादी का प्रस्ताव रखा था या नहीं ? तुम मेरी स्थिति की कल्पना कर सकते हो।'

'मैं बताऊं, चचाजान,—मेरी राय में तो कुछ भी पता करने की ज़रूरत नहीं है।'

'क्या मतलब ?'

'यकीन है मुझे कि आपने सपना देखा था।'

'मेरा भी यही ख्याल है, मेरे अज़ीज़, क्योंकि मुझे अक्सर इस तरह के सपने दिखाई देते हैं।'

'देखा चचाजान ! आपने सुबह के खाने के वक्त शराब पी थी, फिर डिनर के वक्त भी और···'

'हां, हां, मेरे दोस्त, शायद सब कुछ इसी तरह हुआ था।'

'और चचाजान, फिर आप चाहे कितने ही जोश में रहे हों, लेकिन

जागरित अवस्था में आप ऐसा अविवेकपूर्ण प्रस्ताव हरगिज़ नहीं कर सकते थे। आप बिलकुल विवेकशील व्यक्ति मालूम होते हैं, चचाजान और···'

'हां, हां !'

'ज़रा सोचिए तो सही कि अगर कहीं आपके रिश्तेदारों को, जा आपके हक में नहीं हैं, यह बात पता चल गई तो क्या नतीजा निकलेगा !'

'ओह ! तुम्हारे ख्याल में वे लोग क्या करेंगे ?' काउन्ट भयभीत स्वर में बोले।

'वाह, वे लोग एक स्वर से कहेंगे कि जब आपने यह प्रस्ताव रखा था तब आपका दिमाग सही हालत में नहीं था। वे कहेंगे कि आप पागल हैं और आपको धोखा दिया गया है। वे लोग आपको ज़रूर किसी न किसी पागलखाने में भेज देंगे ?'

मोज़ग्ल्याकोव जानता था कि बूढ़े को किस तरह डराया जा सकता है।

'ओह ! मेरे ईश्वर !' काउन्ट पत्ते की तरह कांपता हुआ बोला, 'क्या सचमुच वे लोग मुझे कैद करवा देंगे ?'

'चचाजान, इसीलिए तो मैं कहता हूं, ज़रा सोचकर देखिए, क्या आप जागरित अवस्था में भला इस तरह का अनुचित प्रस्ताव रख सकते थे ? आप खुद जानते हैं, आपकी भलाई किस बात में है। मैं ईमानदारी से एलान करता हूं कि यह सब सपना था।'

'सपना—यह सपना था !' भयभीत काउन्ट ने ये शब्द दुहराए। 'ओह, तुमने कितनी अच्छी तरह यह बात मुझे समझा दी है, मेरे अज़ीज़ ! तुमने मेरा उद्धार कर दिया, इसके लिए मैं तुम्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं !'

'मुझे खुशी है चचाजान, कि हमारी मुलाकात आज ही हो गई। ज़रा सोचिए तो सही, अगर मैं यहां न होता तो आपका दिमाग एकदम

गड़बड़ा जाता और आप सोचने लगते कि आपकी सगाई सचमुच हो गई है। और आप इसी रूप में उन लोगों के सामने जाते—ज़रा सोचिए वह कितनी खतरनाक बात होती !'

'हां, हां, बहुत खतरनाक !'

'और यह मत भूलिए (लड़की तेईस बरस की हो चुकी है) कि उससे कोई भी शादी नहीं करना चाहता, और अचानक आप जैसा सम्मानित और धनी व्यक्ति आकर अपने को उसका मंगेतर बताए तो वे लोग इस मौके से फायदा उठाने के लिए कसम खाकर कहेंगे कि आप ज़रूर उसके मंगेतर हैं और शायद वे ज़बर्दस्ती आपकी शादी भी कर देंगे—फिर ये आपके जल्द मरने की भी दुआ करेंगे।'

'नहीं, क्या सचमुच ?'

'और ज़रा सोचिए चचाजान—आप जैसा योग्य व्यक्ति···'

'हां, हां, मुझ जैसा योग्य व्यक्ति।'

'आपका शानदार दिमाग, शिष्टाचार !'

'हां, हां मेरा दिमाग—हां !'

'और फिर आप एक काउन्ट हैं। आप किसी भी कारण से अगर सचमुच शादी करना चाहें, तो क्या आपको इससे अच्छी दुल्हिन नहीं मिल सकती ? ज़रा सोचिए तो आपके रिश्तेदार क्या कहेंगे ?'

'मेरे अज़ीज़, बस वे तो मेरा सत्यानाश कर देंगे ! उनकी बद-तमीज़ियों और धोखेबाजी से मैं पहले ही बहुत तंग आ चुका हूं। जानते हो, मुझे शक है कि वे मुझे किसी पागलखाने में भेजना चाहते थे। अब मैं तुमसे पूछता हूं, मेरे अज़ीज़, भला इसमें भी कोई तुक है ? पागलखाने में मेरा क्या काम है ?'

'कोई नहीं चचाजान ! इसीलिए जब आप नीचे जाएंगे, तो मैं आपके साथ रहूंगा। नीचे मेहमान बैठे हैं।'

'मेहमान ? हे ईश्वर !'

'फिक्र न कीजिए चचाजान, मैं आपके साथ रहूंगा।'

'मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं, मेरे अज़ीज ! तुम तो सचमुच मेरे मुक्ति-दूत हो ! लेकिन मैं सोचता हूं कि अगर यहां से चला जाऊं तो बेहतर होगा।'

'कल सुबह सात बजे का वक्त ठीक रहेगा। और आज आप सब लोगों से रुखसत ले लें और कह दें कि आप जा रहे हैं।'

'मैं कल ज़रूर चला जाऊंगा—फादर मिसाइल के पास—लेकिन मान लो, अगर उन लोगों ने कोशिश करके मेरी शादी कर दी, तब क्या होगा मेरे अज़ीज़ !'

'डरिए मत चचाजान, मैं आपके साथ रहूंगा और वे लोग आपसे चाहे जो कहें, चाहे किसी भी बात की तरफ संकेत करें—बस आप इतना ही कहिएगा कि सब कुछ सपना था—जो कि सचमुच था भी···'

'हां, हां—सपना। लेकिन मेरे दोस्त, जानते हो यह बड़ा मज़ेदार सपना था। वह बड़ी खूबसूरत है, ऐसी रेखाएं···'

'अच्छा गुडबाई, चचाजान, मैं नीचे जा रहा हूं आप···'

'क्या ? तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो ?' काउन्ट घबराकर बोले।

'नहीं चचाजान, हम दोनों नीचे जाएंगे, लेकिन अलग-अलग। पहले मैं जाऊंगा, बाद में आप। यही सबसे अच्छा रहेगा।'

'अच्छी बात है, और इस वक्त मेरे दिमाग में एक ऐसा विचार आ रहा है, जिसे मैं फौरन लिखना चाहता हूं।'

'ठीक है चचाजान, आप अपना विचार लिखने के बाद नीचे आइएगा, लेकिन ज्यादा देर मत कीजिएगा। कल सुबह···'

'कल सुबह मैं होली फादर के यहां जाऊंगा। ज़रूर होली फादर के यहां जाऊंगा। चार्मिंग ! चार्मिंग[1] ! लेकिन तुम जानते हो, मेरे दोस्त, वह बेहद खूबसूरत है—उसकी रेखाएं···और अगर मुझे लगा कि मुझे

---

१. सुन्दर, अति सुन्दर

सचमुच शादी करनी ही पड़ेगी तो…'

'ईश्वर ऐसा न करे !'

'हां, हां, ईश्वर ऐसा न करे। अच्छा गुडबाई, मेरे अज़ीज़, मैं अभी नीचे आता हूं—मैं फौरन कुछ लिखूंगा। इसी सिलसिले में याद आ गया, मैं बहुत दिनों से तुमसे एक बात पूछना चाहता था—क्या तुमने कैसेनोवा के संस्मरण[1] पढ़े हैं ?'

'हां चचाजान, आप किसलिए मुझसे यह पूछ रहे हैं ?'

'ओह, कुछ नहीं। मैं भूल गया कि मैं क्या कहना चाहता था !'

'बाद में याद आ जाएगा, चचाजान, गुडबाई !'

''गुडबाई, मेरे दोस्त, गुडबाई। लेकिन यह सपना बड़ा मज़ेदार था, बड़ा मज़ेदार !'

१२

'हम लोगों ने सोचा, चलकर तुमसे मिल आएं—प्रास्कोव्या इल्यीनीश्ना भी आ रही है। लुईज़ा कार्लोव्ना ने कहा था कि वह भी आएगी,' अन्ना निकोलाईव्ना ने ड्राइंगरूम में घुसते समय उत्सुक नेत्रों से चारों तरफ देखा।

वह छोटे कद की खूबसूरत औरत थी। उसने बड़े भड़कीले, लेकिन कीमती कपड़े पहन रखे थे। उसे अपनी खूबसूरती का अच्छी तरह ज्ञान था। उसे यकीन था कि काउन्ट और ज़ना किसी कोने में छिपे थे।

'और कैटेरीना पेत्रोव्ना आ रही है, फेलीस्ता मिखाईलोव्ना ने

१. यूरोप का प्रसिद्ध कामुक व्यक्ति

कहा था कि वह भी आएगा,' विशालकाय नतालिया दमित्रीव्ना बोली, जिसके शरीर की 'रेखाओं' से काउन्ट इतने प्रभावित हुए थे, हालांकि वह देखने में एकदम फौज का ग्रेनेडियर मालूम देती थी। उसने सिर पर बहुत छोटा गुलाबी रंग का हैट पहन रखा था, जो सिर के पीछे खिसक रहा था। वह पिछले तीन हफ्तों से अन्ना निकोलाईव्ना की पक्की सहेली बन गई थी, जिसकी कृपादृष्टि के लिए वह बहुत समय से लालायित थी। जहां तक शरीर का सवाल है नतालिया दमित्रीव्ना अन्ना निकोलाईव्ना को एक ही बार में समूचा निगल सकती थी और उसकी हड्डियां तक चबा सकती थी।

'आप लोगों को अपने यहां, वह भी शाम के वक्त देखकर मुझे कितनी खुशी हुई, इसका जिक्र मैं नहीं कर रही, लेकिन यह बताइए कि बहुत दिनों से आपने यहां पधारने की कृपा नहीं की, आज यह चमत्कार कैसे संभव हुसा!' मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ने अपने क्षणिक आश्चर्य से जैसे जागते हुए कहा।

'हे ईश्वर, तुम कैसी बातें करती हो मारया अलैक्जैंड्रोव्ना?' नतालिया दमित्रीव्ना ने आवाज़ में शहद जैसी मिठास लाते हुए कहा। लेकिन उसकी बनावटी, पतली आवाज़ और झूठी मुस्कराहट उसके विकट शरीर के साथ बिलकुल मेल नहीं खा रही थी।

'मेरी प्यारी दोस्त, अब हमें ड्रामे की तैयारी करने में ज्यादा देरी नहीं करनी चाहिए,' अन्ना निकोलाईव्ना चहचहाई। 'आज ही प्योत्र मिखाईलोविच ने कालिस्त स्तेनीस्लाविच से कहा था कि उन्हें हम लोगों से सख्त निराशा हुई है क्योंकि हमने ड्रामों की कोई तैयारी नहीं की, और सिवा लड़ाई-झगड़े के हम लोगों को कुछ नहीं आता। इसीलिए आज शाम को हम सब इकट्ठी हुईं और सोचा कि चलो मारया अलैक्जैंड्रोव्ना के यहां चलकर सारी बातें पक्की कर लें! नतालिया दमित्रीव्ना ने औरों को भी खबर भिजवा दी है। सब यहीं आ रहे हैं, यहीं पर सारी

बातें तय हो जाएंगी, बड़ा अच्छा रहेगा। हम यह हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेंगे कि लोग कहें कि हम लोगों को सिवा लड़ाई-झगड़े के कुछ नहीं आता, क्यों मेरी प्यारी!' उसने शरारत से मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को चूमते हुए कहा।

'अरे वाह, ज़िनेदा अफानासीव्ना, तुम तो दिन-ब-दिन खूबसूरत होती जाती हो!' अन्ना निकोलाईव्ना ज़ेना को चूमने के लिए बढ़ी।

'इसके अलावा बेचारी करे भी क्या?' नतालिया दमित्रीव्ना ने अपनी बड़ी-बड़ी हथेलियों को मलते हुए मीठी आवाज़ में कहा।

'शैतान इनसे समझे! मैं तो ड्रामे की बात भूल ही गई थी। इन औरतों ने बहाना निकाल ही लिया, कव्वियां कहीं की!' मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने गुस्से से जल-भुनकर मन ही मन कहा।

'ज़ेना पहले से भी ज्यादा खूबसूरत हो गई है। अब प्रिय काउन्ट भी तो तुम्हारे यहां हैं न।' अन्ना निकोलाईव्ना ने टिप्पणी जोड़ी, 'तुम जानती हो कि दुखानोवो के भूतपूर्व मालिक एक थिएटर भी चलाते थे। हम लोगों ने इस बारे में पूछताछ की है और हमें मालूम हुआ है कि वहां पुरानी सीनरी, पर्दे और पोशाकें भी रखी हैं। काउन्ट आज मेरे यहां आए थे, लेकिन उन्हें देखकर मुझे इतनी हैरानी हुई कि मैं इस सिलसिले में उनसे बात करना ही भूल गई। अब तुम थिएटर के बारे में काउन्ट से बातचीत करने में हमारी मदद करना, फिर काउन्ट सारी पुरानी चीज़ें हमें भिजवा देंगे। यहां भला कौन सीनरी पेंट कर सकता है? और सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम चाहते हैं कि काउन्ट हमारे थिएटर में भी दिलचस्पी लें। उन्हें चंदा ज़रूर देना चाहिए—गरीबों की सहायता के लिए ही यह सब हो रहा है। शायद काउन्ट हमारे ड्रामे में पार्ट भी कर सकें। वे बड़े अच्छे आदमी हैं। क्यों हैं न? कैसी शानदार बात रहेगी!'

'वे ज़रूर पार्ट लेंगे। उनसे कोई भी रोल करवाया जा सकता है,' नतालिया दमित्रीव्ना ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

अन्ना निकोलाईव्ना ने सच कहा था। महिलाओं का तांता लग गया था। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के पास उचित शब्दों में उनका स्वागत करने तक का समय नहीं था, जोकि शिष्टाचार और तिकड़मबाज़ी के लिए बेहद जरूरी था। मैं उन सारी महिलाओं का वर्णन करने की कोशिश नहीं करूंगा, मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि वे इस तरह व्यवहार कर रही थीं, जैसे उन्हें सब कुछ मालम हो। सबके चेहरों पर उम्मीद और अधीरता छाई थी। कुछ महिलाएं इस दृ इरादे के साथ आई थीं कि उन्हें कोई कलंकपूर्ण दृश्य ज़रूर देखने को मिलेगा, अगर उनकी यह इच्छा पूरी न होती तो वे बेहद नाराज़ होकर वहां से लौटतीं। बाहर से सब शिष्टता से पेश आ रही थीं, लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने अपने-आपको हमले के लिए तैयार कर लिया। काउन्ट के बारे में बड़े ही मासूम संकेतों और तानों से भरे हुए सवालों की बौछार शुरू हो गई। मेहमानों के लिए चाय लाई गई और सारी महिलाएं कमरे में बिखर गईं। एक ग्रुप ने प्यानो पर अधिकार जमा लिया। ज़ेना से बार-बार प्यानो बजाने और गाना सुनाने का आग्रह किया गया लेकिन ज़ेना ने शुष्क स्वर में, यह कहकर कि उसकी तबियत ठीक नहीं है, इन्कार कर दिया। उसके चेहरे का पीलापन इस बात का प्रमाण था। फौरन उसकी तबियत के बारे में हमदर्दी भरी पूछताछ की जाने लगी और यहां भी उल्टे-सीधे सवाल और संकेत किए जाने लगे। ज़ेना से मोज़ग्ल्याकोव के बारे में भी पूछा गया। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना दुगने उत्साह से कमरे के हर कोने पर नज़र रखे हुए थीं और हर मेहमान की बात सुन रही थीं। हालांकि कमरे में दस के करीब महिलाएं थीं फिर भी वे मात नहीं खा रही थीं। उन्हें ज़ेना के लिए डर लग रहा था और उन्हें ताज्जुब था

कि ज़ेना उठकर वहां से चली क्यों नहीं गई, जसा कि उसने ऐसे मौकों पर हमेशा किया था। अफानासी मातविच भी आकर्षण का केन्द्र बन गया था। हमेशा महिलाएं मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना को चोट पहुंचाने के लिए उनके पति का मज़ाक उड़ाया करती थीं। अब वे मंदबुद्धि और जड़मति अफानासी मातविच से कुछ न कुछ उगलवाने की नीयत से उस बेचारे पर घेरा डाले बैठी थीं। मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना इस सारी गति-विधि को ध्यानपूर्वक देख रही थीं। इसके अलावा जिस परेशान और बनावटी आवाज़ में अफानासी मातविच सारे सवालों के जवाब में 'आहं' कह रहा था, उससे मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना गुस्से से पागल हो उठी थीं।

'देखो मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना ! अफानासी मातविच तो हम लोगों से बात भी नहीं करते।' एक दुःसाहसी, पैनी नज़र वाली महिला, जो न किसीसे डरती थी, न किसी बात से घबराती थी, बोली, 'इन्हें कहो कि महिलाओं के साथ शिष्टता से पेश आएं।'

'न जाने आज इन्हें क्या हो गया है ! यहां तक कि मेरे साथ भी ये एक शब्द तक नहीं बोले। ये कतई मिलनसार नहीं हैं। कहिए आप फेलिस्ता मिखाईलोव्ना की बात का जवाब क्यों नहीं देते, हठीले महाशय ?···तुमने इनसे क्या सवाल किया था ?'

'लेकिन—लेकिन तुमने मुझे खुद ही तो कहा था, माई डियर,' अफानासी मातविच चकित और घबराई आवाज़ में बोला। वह अंगीठी के पास खड़ा चाय पी रहा था। उसका एक हाथ वास्कट की जेब में था और वह तस्वीर के अन्दाज़ में खड़ा था। महिलाओं के सवालों से वह इतना घबरा गया कि उसका चेहरा एक युवती की तरह शर्म से लाल हो गया। उसकी अस्पष्ट क्षमा-याचना से क्रुद्ध होकर उसकी पत्नी ने इस तरह उसकी तरफ देखा कि वह डर के मारे बेहोश होते-होते बचा। सकपकाकर, महिलाओं का आदर फिर से पाने के लिए और अपनी गलती ठीक करने के इरादे से उसने चाय का एक और घूंट पी लिया,

लेकिन चाय गर्म थी, उसने बहुत बड़ा घूंट भर लिया था, उसका सारा मुंह जल गया, प्याला उसके हाथ से ज़मीन पर गिर पड़ा, उसे ज़ोर की खांसी आ गई और उसे कुछ देर के लिए कमरे से बाहर जाना पड़ा। सब लोग सकपका गए। सारी स्थिति साफ हो गई थी। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना समझ गईं कि उनके मेहमानों को सारे भेद का पता चल गया है और वे मन में भीषण इरादे लेकर वहां आई हैं। स्थिति खतरनाक हो गई थी। मुमकिन है कि ये औरतें मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के सामने ही बूढ़े काउन्ट के मन में घबराहट पैदा कर दें, या काउन्ट को दूर ले जाएं और साज़िश करके उन्हें अपनी तरफ मिला लें। ये औरतें कुछ भी कर सकती हैं। लेकिन अभी तो मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की किस्मत में एक और कठिन परीक्षा थी।—दरवाज़ा खुला और मोज़ग्ल्याकोव भीतर दाखिल हुआ। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना का ख्याल था कि वह बोरोदुयेव के यहां गया है और शाम के वक्त हरगिज़ नहीं आएगा। उसे देखकर वे ऐसी चौंकीं जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो।

मोज़ग्ल्याकोव दरवाज़े में खड़ा घबराकर चारों तरफ देख रहा था। उसके चेहरे से उत्तेजना झलक रही थी, जिसपर वह संयम नहीं रख पा रहा था।

'हे ईश्वर ! यह तो पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच है !' बहुत-सी आवाज़ें आईं।

नतालिया दमित्रीव्ना चीखकर बोली, 'वाह ! यह तो पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच है ! मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना, तुमने क्यों कहा कि यह बोरोदुयेव के यहां गया है ! पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच, हमें तो बताया गया था कि तुम बोरोदुयेव के यहां छिपे बैठे हो !'

'छिपा बैठा हूं ?' मोज़ग्ल्याकोव तीखी मुस्कान के साथ बोला, 'बात कहने का कैसा अजब ढंग है ! माफ करना नतालिया दमित्रीव्ना, मैं किसीसे नहीं छिपा बैठा, न ही मेरे पास छिपाने के लिए कोई बात

है !' उसने मारया अलैक्जैंड्रोव्ना की तरफ एक अर्थपूर्ण दृष्टि डालते हुए कहा।

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना थर्रा उठीं और मोज़ग्ल्याकोव को गौर से देखकर मन ही मन सोचने लगीं, 'क्या ? क्या यह कीड़ा भी मेरे खिलाफ हो जाएगा। यह तो सबसे बुरी बात होगी।'

'क्या यह सच है पावेल अलैक्जैंड्रोविच कि तुम्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है ?' गुस्ताख फेलिस्ता मिखाईलोव्ना तिरस्कारपूर्वक मोज़ग्ल्याकोव की आंखों में झांककर बोली।

'बर्खास्त कर दिया गया है ? क्या मतलब ? मैं एक दूसरी नौकरी पर पीटर्सबर्ग जा रहा हूं,' मोज़ग्ल्याकोव ने शुष्क स्वर में कहा।

'तब तो मेरी बधाई स्वीकार करो। जब हम लोगों ने सुना कि तुम मोर्दासोव में नौकरी तलाश कर रहे हो तो हम सब लोगों को बहुत डर लगा, यहां की नौकरियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, पावेल अलैक्जैंड्रोविच, यहां आदमी को किसी वक्त भी हटाया जा सकता है,' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

'सिवा डिस्ट्रिक्ट स्कूल के टीचरों के—वहां तो अब भी नौकरी मिल सकती है,' नतालिया दमित्रीव्ना ने फब्ती कसी।

संकेत इतना फूहड़ और बेहूदा था कि अन्ना निकोलाईव्ना को भी बुरा लगा और उसने अपनी सहेली को डांटने के लिए उसे ठोकर मारी।

'वाह, तुम्हारा ख्याल है कि पावेल अलैक्जैंड्रोविच किसी टीचर की जगह पर जाएंगे,' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

पावेल अलैक्जैंड्रोविच को कोई जवाब न सूझा, और वह अफानासी मातविच से टकरा गया जो मोज़ग्ल्याकोव से हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाए खड़ा था, लेकिन मोज़ग्ल्याकोव ने एक फूहड़ झटके से हाथ मिलाने से इन्कार कर दिया और व्यंग्यपूर्वक कमर झुकाकर नमस्कार किया। फिर वह तुनककर सीधा ज़ेना के पास पहुंचा और उसकी आंखों

में आंखें डालकर फुसफुसाया।

'यह सब तुम्हारी करतूत है! ठहरो! मैं आज शाम को ही तुम्हें दिखा दूंगा कि मैं बेवकूफ हूं या नहीं।'

'देरी करने से क्या फायदा? हकीकत तो जाहिर ही है!' जेना ने ग्लानिपूर्वक अपने भूतपूर्व प्रेमी को आंकते हुए मुंहतोड़ जवाब दिया।

मोज़ग्ल्याकोव ज़ेना की ऊंची आवाज़ से चौंककर दूर खिसक गया।

'क्या तुम बोरोदुयेव के यहा से आ रहे हो?' आखिरकार मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना बोल उठीं।

'नहीं, मैं अपने चचा के पास से आ रहा हूं।'

'चचा? तुम्हारे कहने का मतलब है कि तुम अभी काउन्ट के पास थे!'

'हे ईश्वर! तो काउन्ट जाग गए हैं! हमें तो बताया गया कि वे सो रहे हैं,'नतालिया दमित्रीव्ना ने मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना की ओर एक विनाशकारी दृष्टि डाली।

'काउन्टकी चिन्ता न कीजिए, नतालिया दमित्रीव्ना, वे जाग गए हैं और ईश्वर की कृपा से होश-हवास में हैं। आपके यहां उन्हें बहुत शराब पिलाई गई, यहां आकर रही-सही कसर भी पूरी हो गई। नतीजा यह हुआ कि वे बदहवास हो गए, वैसे भी उन्हें होश कम ही रहता है। लेकिन ईश्वर का लाख-लाख शुक्रिया है कि अब उनका मन स्थिर है। हम दोनों में बातचीत हुई थी। वे अभी नीचे आ रहे हैं, मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना, आपकी खातिरदारी का शुक्रिया अदा करने और आपसे विदा लेने के लिए। कल दिन निकलते ही हम आश्रम में चले जाएंगे, उसके बाद मैं खुद उनको दुखानोवो पहुंचाने जाऊंगा ताकि आज की तरह वे फिर न गिर पड़ें। वहां पहुंचकर मैं उन्हें स्तेपानीदा मातवीव्ना के हाथों में सौंप आऊंगा, जो तब तक ज़रूर मास्को से लौट आएंगी और जो फिर कभी काउन्ट को अकेले सफर नहीं करने देंगी—इसकी पूरी ज़िम्मेदारी मुझपर

होगी।'

यह कहकर मोज़ग्ल्याकोव ने दुष्टतापूर्वक मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की तरफ देखा। उन्हें जैसे काठ मार गया था। मुझे बड़े अफसोस से यह बात स्वीकार करनी पड़ती है कि मेरी हीरोइन शायद ज़िन्दगी में पहली बार भयभीत हो गई थी।

'अच्छा तो ये लोग कल तड़के ही यहां से चले जाएंगे ? यह कैसे हुआ ?' नतालिया दमित्रीव्ना ने मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना की तरफ मुखातिब होकर पूछा।

'यह कैसे हुआ ? और हमने तो सुना था कि•••कैसी अजब बात है ?' सब महिलाएं भोलेपन से पूछ रही थीं।

लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना में उन लोगों के सवालों का जवाब देने की हिम्मत नहीं थी। सहसा सबका ध्यान एक रहस्यमय और विचित्र शोर की तरफ आकर्षित हो गया। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के ड्राइंगरूम के साथ वाले कमरे में किसीकी बारीक आवाज़ सुनाई दी। अचानक आंधी की तरह सोफिया पेत्रोव्ना कार्पूखीना कमरे में दाखिल हुई। वह मोर्दासोव की सबसे अधिक सनकी और विलक्षण महिला थी, इतनी सनकी कि मोर्दासोव की सब महिलाओं ने तय कर लिया था कि वे उससे मिलना-जुलना बन्द कर देंगी। यहां यह कहना भी उचित होगा कि शाम को ठीक सात बजे वह मिठाई खाया करती थी—उसका कहना था कि उसके पेट के लिए यह ज़रूरी है, इसके बाद वह एकदम उन्माद की अवस्था में पहुंच जाती थी। आज भी वह मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के यहां बिल्कुल इसी हालत में आ धमकी थी।

आते ही वह ऊंची आवाज़ में चिल्लाई, अच्छा तो मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना, तुम मुझसे इस तरह का सलूक करती हो ! डरो नहीं, मैं सिर्फ एक मिनट के लिए यहां आई हूं। मैं बैठूंगी तक नहीं। मैं जान-बूझकर यह देखने के लिए आई थी कि मैंने जो खबर सुनी है, वह सच है या नहीं।

अच्छा तो तुम्हारे यहां बालडान्स, दावतें, सगाइयां होती रहें और सोफिया पेत्रोव्ना घर बैठी मोज़े बुनती रहे ? तुम सारे शहर को निमंत्रण देती हो—सिवा मेरे ! अभी कुछ दिन पहले मैं तुम्हारी सहेली और फरिश्ता थी, जब मैं तुम्हें बताने आई थी कि काउन्ट नतालिया दमित्रीव्ना के यहां पहुंच गए हैं और अब वही नतालिया दमित्रीव्ना, जिसे तुमने अभी कुछ देर पहले जी भर के गालियां दी थीं, और जिसने तुम्हें गालियां दी थीं, तुम्हारे ड्राइंगरूम में बैठी है। मुझे तुम्हारा दस कोपेक वाला चाकलेट नहीं चाहिए ! चिन्ता न करो नतालिया दमित्रीव्ना ! मैं घर बैठकर भी चाकलेट खा सकती हूं और तुमसे कहीं ज़्यादा बार ! उंह !'

'यह तो साफ ज़ाहिर है !' नतालिया दमित्रीव्ना ने फब्ती कसी।

'अरे, सोफिया पेत्रोव्ना तुम्हें क्या हो गया है ! कुछ तो अक्ल की बात करो ! मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने गुस्से से लाल होकर कहा।

'मेरी फिक्र न करो, मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ! मैं सब कुछ जानती हूं ! मैंने सब कुछ सुन लिया है !' सोफिया पेत्रोव्ना अपनी कर्कश आवाज़ में बोली, सारी महिलाएं उसके गिर्द जमा हो गईं, जैसे इस अप्रत्याशित झगड़े का लुत्फ उठाने आई हों। 'मैंने सब कुछ सुन लिया है ! तुम्हारी नस्तास्या भागती हुई मेरे पास आई थी और मुझे सारी बातें बता गई। तुमने बेचारे काउन्ट को हथियाकर उसे खूब शराब पिलाई और उससे अपनी बेटी के आगे शादी का प्रस्ताव रखवाया—तुम्हारी बेटी के आगे, जिससे इस शहर में कोई भी शादी नहीं करना चाहता ! हां, और तुम्हरा ख्याल है कि तुम खुद भी बड़ी बन जाओगी—लेस की पोशाक में बनी-ठनी काउन्टेस बन जाओगी ! क्या कहने हैं तुम्हारे ! कोई हर्ज नहीं, मैं खुद भी कर्नल की बीवी हूं। तुम मुझे अपनी बेटी की सगाई में बुलाओ या न बुलाओ, मुझे क्या परवाह है ? मैंने तुमसे कहीं अच्छे लोग देखे हैं। मैंने काउन्टेस ज़लीखवात्स्काया के यहां खाना खाया

है ! खुद ओबर—कमिसार कुरोश्किन मुझसे शादी करना चाहते थे ! तुम्हारी और तुम्हारे निमंत्रण की ऐसी-तैसी !'

मारया अलैक्जैंड्रोव्ना गुस्से में आपे से बाहर होकर बोलीं, 'देखो सोफिया पेत्रोव्ना, मैं तुम्हें बता दूं कि शरीफ घरों में इस तरह नहीं घुसा जाता, खास तौर पर जिस हालत में तुम हो, अगर तुमने अपना भाषण बन्द न किया और यहां से न चली गईं तो मैं फौरन कोई न कोई कदम उठाऊंगी।'

'मैं जानती हूं—तुम अपने मनहूस नौकरों से कहकर मुझे निकलवा दोगी ! इतनी तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं। मुझे बाहर जाने का रास्ता मालूम है। गुडबाई, चाहे जिसकी शादी करो। और नतालिया दमित्रीव्ना, खबरदार जो मुझपर हंसीं ? मुझे तुम्हारे चाकलेट की कोई परवाह नहीं। मुझे यहां आने का निमंत्रण चाहे न मिला हो, लेकिन कम से कम मैंने काउन्ट के आगे यूक्रेनियन डान्स तो नहीं दिखाया। और तुम किस बात पर हंस रही हो, अन्ना निकोलाईव्ना ? सुशीलोव की टांग टूट गई है—लोग उसे अभी उठाकर घर ले गए हैं—उंह ! और फेलिस्ता मिखाईलोव्ना, अगर तुमने अपनी नंगी टांगों वाली मैत्रयोश्का से कहकर अपनी गाय को मेरी खिड़की से परे न हटाया तो मैं तुम्हारी मैत्रयोश्का की टांग तोड़ डालूंगी। गुडबाई मारया अलैक्जैंड्रोव्ना ! गुडलक ! उंह !'

सब लोग हंस पड़े, सोफिया पेत्रोव्ना वहां से चली गई। मारया अलैक्जैंड्रोव्ना एकदम अप्रतिभ हो गई थीं।

'मेरा ख्याल है, उसने शराब पी रखी थी,' नतालिया दमित्रीव्ना मधुर आवाज में बोली।

'लेकिन इतनी गुस्ताखी ! इतनी गुस्ताखी !'

'कैसी घृणित स्त्री है !'

'लेकिन उसने हम लोगों को खूब हंसाया !'

'वह कैसी भयंकर बातें कह रही थी !'

'लेकिन उसने किसी सगाई का ज़िक्र किया था ! न जाने उसका मतलब क्या था !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना व्यंग्यपूर्वक बोली।

आखिरकार मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना बरस पड़ीं, 'कैसी भयंकर बात है ! इसी तरह के शैतान लोग झूठी अफवाहें फैलाते हैं ! फेलिस्ता मिखाईलोव्ना, मुझे इस बात पर हैरानी नहीं कि ऐसी औरतें हमारे बीच में हैं, बल्कि हैरानी इस बात पर है कि ऐसी औरतों को घरों में बुलाया जाता है, उनकी बातें सुनी जाती हैं, उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है और उनकी बातों पर विश्वास किया जाता है !'

'काउन्ट ! काउन्ट !' सहसा सब औरतें बोल उठीं।

'हे ईश्वर ! ये तो प्यारे प्रिंस आ गए !'

'चलो अब सारी पोल खुल जाएगी ! ईश्वर का शुक्र है !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना अपनी पड़ोसिन के कान में फुसफुसाईं।

१३

काउन्ट हर्षातिरेक से मुस्कराते हुए कमरे में दाखिल हुए। पन्द्रह मिनट पहले मोज़ग्ल्याकोव ने उनके खोखले हृदय में जो डर बैठाया था वह सब महिलाओं को देखते ही काफूर हो गया और काउन्ट का दिल चूसे हुए बेर की तरह पिघल गया। महिलाओं ने आनन्दभरी चीखों से काउन्ट का स्वागत किया। हम यह ज़रूर कहेंगे कि मोर्दासोव की महिलाएं बूढ़े काउन्ट से बहुत लाड़ करती थीं और असाधारण आत्मीयता दिखाती थीं। काउन्ट को देखने मात्र से ही उनका अतीव मनोरंजन हो

जाता था। आज सुबह ही फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने घोषित किया था (निश्चय ही मज़ाक में !) कि वह सहर्ष काउन्ट की गोद में बैठने को तैयार होगी, अगर इससे काउन्ट को सुख मिले—'क्योंकि काउन्ट बत्तख-सा प्यारा है, एकदम शानदार आदमी !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने अपनी स्थिति का समाधान पाने के लिए अपनी नज़रों से काउन्ट के चेहरे को टटोला। साफ ज़ाहिर था कि मोज़ग्ल्याकोव ने कोई भयंकर शरारत की थी, और सारी स्कीमों को तबाह कर दिया था। लेकिन काउन्ट का चेहरा हमेशा की तरह ही था, उसपर कोई विशेष भाव नहीं प्रकट हो रहा था।

'हे ईश्वर ! लीजिए, काउन्ट आ गए ! हमारा ख्याल था कि आप कभी नहीं आएंगे !' बहुत-सी महिलाएं एकसाथ बोलीं।

'हम यही सोच रही थीं काउन्ट, यही सोच रही थीं !' बाकी महिलाएं भी चिल्लाईं।

'मैं बहुत खुश हूं,' काउन्ट तुतलाए और उस मेज़ पर बैठ गए जहां समावार उबल रहा था। फौरन सब महिलाओं ने उन्हें घेर लिया। सिर्फ अन्ना निकोलाईव्ना और नतालिया दमित्रीव्ना ही मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना के पास बैठी रहीं। अफानासी मातविच आदरभाव से मुस्करा रहे थे। मोज़ग्ल्याकोव भी ज़ेना की तरफ अवज्ञापूर्ण दृष्टि से देखकर मुस्करा रहा था। ज़ेना ने उसकी तरफ कतई ध्यान नहीं दिया और अंगीठी के नज़दीक जाकर अपने पिता के पास एक कुर्सी पर बैठ गई।

'ओह काउन्ट, क्या यह सच है कि आप हम लोगों को छोड़कर जा रहे हैं ?' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना चीखती हुई आवाज़ में बोली।

'हां, हां, श्रीमतियो ! मैं जा रहा हूं, मैं फौरन विदेश चला जाऊंगा।'

'विदेश जा रहे हैं काउन्ट ? यह ख्याल आपके दिमाग में किसने

डाला ?' सब एकसाथ चिल्लाईं ।

'हां विदेश—' काउन्ट ने संयत स्वर में दुहराकर कहा, 'मैं विदेश नये विचारों के लिए जाना चाहता हूं।'

'नये विचारों के लिए ? कौन-से नये विचार ?' महिलाओं ने एक-दूसरे की तरफ देखते हुए पूछा ।

'हां, नये विचारों के लिए,' काउन्ट ने गम्भीर आस्थापूर्वक कहा, 'हर आदमी आजकल नये विचारों की तलाश में सफर करता है। मैं भी नये विचार हासिल करना चाहता हूं ।'

'आप कहीं फ्रीमेसनों[1] की संस्था के मेम्बर तो नहीं बनने जा रहे, चचाजान !' मोज़ग्ल्याकोव ने महिलाओं पर अपनी वाक्पटुता का रौब जमाने के लिए और यह दिखाने के लिए कि वह काउन्ट को कितने करीब से जानता है; कहा ।

'हां, हां, मेरे बेटे, तुम्हें गलतफहमी नहीं हुई।' अचानक काउन्ट ने अप्रत्याशित उत्तर दिया। 'किसी ज़माने में मैं सचमुच विदेश जाकर फ्रीमेसन बना था। मेरे बड़े उदात्त विचार थे। मैंने आधुनिक शिक्षा के प्रचार के लिए बहुत कुछ करने का निश्चय कर लिया था और फ्रैंकफर्त पहुंचकर मैंने अपने नौकर सिदोर को, जिसे मैं अपने साथ विदेश ले गया था, मुक्त करने का निश्चय कर लिया था, लेकिन मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि वह खुद ही मुझे छोड़कर भाग गया। अजब आदमी था न ! ऐंह ! फिर अचानक वह पैरिस में मुझे मिला—एकदम छैला बना हुआ था; मूंछें भी थीं—एक मदमोज़ेल को साथ लिए घूम रहा था। उसने मुझे देखकर सर हिलाया और नमस्कार किया। उसके साथ जो मदमोज़ेल थी वह इतनी ज़िन्दादिल और बला की हसीन थी कि देखकर—'

'अच्छा तो फिर चचाजान, चूंकि आप विदेश जा रहे हैं, तो क्या

१. गुप्त रीति से काम करने वाली एक संस्था

आप अपने सब दास किसानों को मुक्त कर जाएंगे ?' मोज़ग्ल्याकोव दिल खोलकर हंसने लगा।

'तुमने मेरे इरादों को ठीक भांप लिया है मेरे अज़ीज़, मैं उन सबको मुक्त करना चाहता हूं।' काउन्ट ने विनीत स्वर में उत्तर दिया।

'लेकिन काउन्ट, तब तो वे सबके सब आपको छोड़कर भाग जाएंगे, फिर आपको आपकी रकम कौन देगा ?' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

'ज़रूर—वे सबके सब भाग जाएंगे,' अन्ना निकोलाईव्ना ने चिन्तित स्वर में कहा।

'हे ईश्वर ! क्या आपके कहने का मतलब है कि सचमुच वे सारे के सारे भाग जाएंगे ?' काउन्ट ने चकित भाव से पूछा।

'हां, वे फौरन आपको अकेला छोड़कर भाग जाएंगे।' नतालिया दमित्रीव्ना ने काउन्ट को विश्वास दिलाया।

'हे ईश्वर ! तब तो मैं उन्हें हरगिज़ मुक्त नहीं करूंगा। दरअसल मेरा यह इरादा नहीं था।'

'यह ठीक है, चचाजान !' मोज़ग्ल्याकोव ने काउन्ट को प्रोत्साहन दिया।

अभी तक मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना खामोशी से सारी बातें सुन रही थीं। उन्हें लगा कि काउन्ट उन्हें भूल गए हैं और यह एकदम अस्वाभाविक बात है।

मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने ऊंची शालीन आवाज़ में कहा, 'अगर आप इजाज़त दें तो मैं आपका परिचय अपने पति अफानासी मातविच से कराऊं। यह सुनकर कि आप मेरे यहां ठहरे हैं, ये गांव से आ गए।'

अफानासी मातविच मुस्कराकर खड़ा हो गया, उसे लगा जैसे उसकी खास तौर पर तारीफ की गई हो।

'बड़ी खुशी हुई !' काउन्ट बोले, 'अफानासी मातविच, अरे हां, मुझे

याद है, अफानासी मातविच—हां, हां, जो गांव में रहता है। चार्मिंग, चार्मिंग ! बड़ी खुशी हुई। क्या यह वही आदमी नहीं है जिसके बारे में आज सुबह हम लोगों ने एक शेर सुना था, क्यों मेरे अज़ीज़ !' काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव को संबोधित करते हुए कहा, 'क्या शब्द थे ? तुम्हें याद नहीं ? तुमने तो उसकी तुक भी जोड़ ली थी। हां, हां, 'पति घर आता है और बीवी—अरे हां, वह भी कोई मज़ेदार बात करती है।'

'यह शेर तो उस नाटक में था जो हम लोगों ने पिछले साल खेला था।' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने कहा।

'अरे हां, वही था। मैं सब कुछ भूल जाता हूं। चार्मिंग, चार्मिंग ! अच्छा, तो वह आदमी तुम्हीं हो ! तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। कहिए कैसे मिज़ाज हैं।' काउन्ट ने अपनी आरामकुर्सी से उठे बगैर ही अफानासी मातविच से मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। अफानासी मातविच मुस्करा रहा था।

'आहं !'

'ये बिल्कुल खैरियत से हैं, काउन्ट', मारया अलक्ज़ेंड्रोव्ना ने जल्दी से जवाब दिया।

'अरे हां, यह तो मैं देख ही रहा हूं कि ये खैरियत से हैं। और तुम सारा वक्त गांव में ही गुज़ारते हो ? अच्छा मुझे खुशी हुई। इतने लाल गाल और हर वक्त हंसना—'

अफानासी मातविच ने मुस्कराकर आदरपूर्वक सिर झुकाया, यहां तक कि फर्श पर अपने जूते भी रगड़े, लेकिन काउन्ट के अन्तिम वाक्य से न जाने क्यों उसका संयम टूट गया और वह बेवकूफों की तरह ज़ोर से ठहाका मारकर हंस पड़ा। सब लोगों को हंसी आ गई। महिलाएं खुशी से चीख उठीं। ज़ेना का चेहरा लाल हो गया और उसने आग्नेय दृष्टि से मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना की तरफ देखा। मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना मारे गुस्से के आपे से बाहर हो गईं और विषय बदलते हुए, शहद जैसी

मीठी आवाज़ में बोलीं, 'आपको कैसी नींद आई काउन्ट !' साथ ही गुस्से भरी एक दृष्टि से उन्होंने अफानासी मातविच को समझा दिया कि वह फौरन अपनी जगह पर चला जाए।

'ओह, मैं खूब सोया और मैंने एक बड़ा प्यारा सपना देखा !' काउन्ट ने जवाब दिया।

'सपना ! मुझे लोगों के सपने सुनना बड़ा अच्छा लगता है !' फ़लिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

'मुझे भी, मुझे तो इसका बेहद शौक है।' नतालिया दमित्रीव्ना ने कहा।

'बड़ा प्यारा सपना था,' काउन्ट ने एक द्रवित मुस्कान के साथ कहा, 'लेकिन यह सपना एक रहस्य है।'

'क्या कहा काउन्ट ! आपके कहने का मतलब है कि इसे बताया नहीं जा सकता ? तब तो सचमुच बड़ा शानदार सपना रहा होगा।' अन्ना निकोलाईव्ना ने टिप्पणी की।

'यह तो बहुत बड़ा रहस्य है,' काउन्ट ने दुबारा कहा। उन्हें महिलाओं की उत्सुकता को गुदगुदाने में बड़ा आनन्द आ रहा था।

'कितना दिलचस्प सपना रहा होगा।' महिलाएं चिल्लाईं।

'मैं शर्त बद सकती हूं कि सपने में काउन्ट ने किसी खूबसूरत लड़की के आगे घुटने टेककर उससे शादी का प्रस्ताव किया था ! आपको यह मानना ही पड़ेगा, डियरेस्ट काउन्ट !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना चिल्लाई।

'मान लीजिए काउन्ट ! मान लीजिए !' चारों तरफ से आवाज़ आई।

काउन्ट हर्षोन्माद की अवस्था में इन सारी बातों को विजेता के भाव से सुनते रहे। महिलाओं के इस संकेत से उनके अहंकार को बेहद तुष्टि मिली, बस चटखारे लेने की कसर बाकी रह गई थी।

आखिरकार काउन्ट ने कह ही डाला, 'हालांकि मैंने कहा था कि मेरा सपना एक रहस्य है, लेकिन मुझे यह मानना ही पड़ेगा कि मुझे यह देखकर ताज्जुब हुआ है मदाम, कि आपका अनुमान सही है।'

'मैंने भांप लिया न !' फेलिस्ता मिलाईलोव्ना खुशी से चिल्लाई, 'अच्छा काउन्ट, आपको अब यह भी बताना पड़ेगा कि वह खूबसूरत लड़की कौन थी।'

'ज़रूर बताना पड़ेगा ! ज़रूर।'

'क्या वह यहां रहती है ?'

'बताइए भी, प्यारे काउन्ट !'

'डियर, डार्लिंग काउन्ट ! बताइए ! चाहे इससे आपकी मौत ही क्यों न हो जाए !' चारों तरफ से आवाज़ें आने लगीं।

'श्रीमतियो, श्रीमतियो···अगर आप जानना ही चाहती हैं तो मैं आपको सिर्फ इतना ही बता सकता हूं कि ऐसी खूबसूरत और शरीफ लड़की मैंने ज़िन्दगी में कभी नहीं देखी,' काउन्ट ने बुदबुदाकर कहा। वे एकदम द्रवित हो गए थे।

'सबसे खूबसूरत ! और वह यहां रहती है ? भला वह लड़की कौन हो सकती है !' महिलाओं ने भेदभरी नज़रों से एक-दूसरे की तरफ देखा और कटाक्ष किए।

'जो हम लोगों में खूबसूरती की मलिका समझी जाती है, वही होगी।' नतालिया दमित्रीव्ना ने अपने लाल हाथों को रगड़ते हुए बिल्ली जैसी आंखों से ज़ेना की तरफ देखा। उसका अनुकरण करते हुए सब महिलाओं की नज़रें ज़ेना की तरफ मुड़ गईं।

'अच्छा, तो काउन्ट अगर आपको ऐसे सपने आते हैं तो आप सचमुच शादी क्यों नहीं कर लेते ?' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने एक अर्थपूर्ण दृष्टि चारों तरफ फेंकते हुए पूछा।

'हम आपकी शादी बड़ी घूमधाम से करेंगे !' एक दूसरी महिला

बोली।

'प्यारे काउन्ट ! शादी करवा लीजिए न !' तीसरी चिल्लाई।

'शादी कर लीजिए ! शादी कर लीजिए ! भला आप शादी क्यों नहीं करते !' चारों तरफ से आवाज़ें आईं।

'हां, हां, भला मैं शादी क्यों न करूं?' इस शोर से घबराकर काउन्ट ने यही बात दुहरा दी।

'चचाजान !' मोज़ग्ल्याकोव बोला।

'हां, हां, मेरे अज़ीज़, मैं समझ गया। श्रीमतियो, मैं आपको बताना चाहता था, श्रीमतियो, कि मैं अब शादी करने की स्थिति में नहीं रहा, यहां मेरी खूब खातिरदारी हुई है और शाम बड़े आनन्द से कटी है। कल सुबह मैं फादर मिसाईल से मिलने उनके आश्रम में जा रहा हूं और वहां से सीधा विदेश चला जाऊंगा—यूरोप के सांस्कृतिक विकास का नज़दीक से अध्ययन करने के लिए।'

ज़ेना का रंग पीला पड़ गया और वह आकुल भाव से अपनी मां की तरफ देखने लगी। लेकिन मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना मन ही मन पक्का फैसला कर चुकी थीं। अभी तक तो वे स्थिति का जायज़ा ले रही थीं, हालांकि वे जान गई थीं कि मामला एकदम बिगड़ गया है और दुश्मनों ने उन्हें पूरी तरह परास्त कर दिया है। आखिरकार वे सब कुछ भांप गईं और एक ही बार से उन्होंने सौ सिरों वाले हाइड्रो[1] को खत्म करने का फैसला कर लिया। वे बड़ी शान से अपनी कुर्सी से उठीं और एक अहंकार भरी नज़र से अपने बौने शत्रुओं की शक्ति को तोलते हुए मेज़ के पास जा पहुंचीं। उनकी आंखों में प्रेरणा की चमक थी, वे तय कर चुकी थीं कि वे इन तमाम नीच, अफवाहें फैलने वाली औरतों का मुंह बंद कर देंगी। बदमाश मोज़ग्ल्याकोव को भुनगे की तरह कुचलकर रख देंगी और एक ही भरपूर वार में मूर्ख काउन्ट पर अपना खोया हुआ

१. ग्रीक पौराणिक कथाओं में वर्णित भयंकर दानव

प्रभाव फिर से जमा लगी। इसके लिए असाधारण साहस की आवश्यकता थी, लेकिन मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना जोखिम से डरने वाली औरतों में से नहीं थीं।

'श्रीमतियो !' गंभीर और शालीन स्वर में वे बोलीं, (उन्हें गंभीर अवसरों का बड़ा चाव था) 'श्रीमतियो, मैं आपकी बातचीत, हंसी, और वाक्चातुरी को बहुत देर से सुनती रही हूं और सोच रही हूं कि अब मुझे भी कुछ कहना चाहिए। जैसा कि आप जानती हैं, हम यहां संयोगवश इकट्ठे हुए हैं (और आप सबको यहां देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है)। मैं कभी भी शालीनता के नियमों का उल्लंघन करके आपको अपने परिवार का महत्त्वपूर्ण रहस्य समय से पहले न बताती। मैं खास तौर पर अपने मेहमान से माफी चाहती हूं। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वे भी प्रच्छन्न संकेतों द्वारा मुझे यह दिखाने की कोशिश कर रहे थे कि हमारे परिवार के इस रहस्य की घोषणा से न सिर्फ उन्हें खुशी होगी बल्कि वे चाहते हैं कि मैं ऐसी घोषणा कर दूं···मैं ठीक कह रही हूं काउन्ट ?'

'हां, हां, तुम ठीक कह रही हो···और मुझे बहुत-बहुत खुशी है,' काउन्ट ने, जिसे कतई पता नहीं था कि किस बारे में बात की जा रही है, जवाब दिया।

मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना सांस लेने के लिए रुक गई और सब एकत्रित महिलाओं की तरफ देखने लगीं। सब महिलाएं उत्सुक भाव से उनकी बात सुन रही थीं। मोज़ग्ल्याकोव कांप उठा। ज़ेना का चेहरा सुर्ख हो गया और वह अपनी कुर्सी से आधी खड़ी हो गई। अफानासी मातविच किसी असाधारण घटना की उम्मीद में अपनी नाक पोंछने लगा।

'हां श्रीमतियो, आपको अपने परिवार का रहस्य बताते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। मेरी बेटी की खूबसूरती और नेकी से आकर्षित होकर आज दोपहर को काउन्ट ने मेरी बेटी के आगे शादी का प्रस्ताव रखकर उसपर मेहरबानी की है। काउन्ट !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना

ने आंसुओं और उत्तेजना से भरी आवाज़ में कहा। 'प्यारे काउन्ट, इस लापरवाही के लिए आप मुझसे नाराज़ मत होइएगा। इस असाधारण आनन्द ने ही मुझे इस अमूल्य रहस्य को बताने पर मजबूर किया है— भला कौन मां इस बात के लिए मुझे दोष दे सकती है?'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना की इस अप्रत्याशित भावुकता का क्या असर पड़ा, इसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। सब लोग जैसे आश्चर्य से पत्थर हो गए। वे मक्कार औरतें, जिन्हें इस बात का पूरा भरोसा था कि वे मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के रहस्य का समय से पहले भंडाफोड़ करके उन्हें आतंकित कर देंगी, जो सोचती थीं कि सिर्फ संकेतों से ही वे मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना की छाती पर मूंग दलेंगी, इस दुःसाहस-पूर्ण स्पष्टवादिता पर भौंचक्की रह गईं। ऐसी निर्भीक स्पष्टवादिता के मूल में कोई न कोई विश्वास तो होगा ही! 'तो काउन्ट सचमुच अपनी मर्ज़ी से ही ज़ेना से शादी करने जा रहे हैं। इसका मतलब है कि काउन्ट को शराब पिलाकर धोखा नहीं दिया गया। इसका मतलब है कि काउन्ट को चुपके से चोरों की तरह शादी करने के लिए मजबूर नहीं किया गया। इसका मतलब है कि मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना को किसीका डर नहीं है। इसका मतलब है कि इस शादी में गड़बड़ नहीं डाली जा सकती, क्योंकि काउन्ट पर ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं चल सकती।' सब महिलाएं खुशी से चीख उठीं। सबसे पहले नतालिया दमित्रीव्ना ने उठकर मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना को गले से लगाया, इसके बाद अन्ना निकोलाईव्ना और फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने उसका अनुकरण किया। बाकी महिलाएं, जिनमें से कुछ के चेहरे गुस्से से पीले पड़ गए थे, अपनी कुर्सियों पर से उछलकर चारों तरफ खड़ी हो गईं। उन्होंने घबराई हुई ज़ेना को बधाइयां देनी शुरू कर दीं। यहां तक कि वे अफानासी मातविच के ऊपर भी टूट पड़ीं। मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने बड़े नाटकीय अन्दाज़ में अपनी बांहें फैलाकर ज़ोर से अपनी बेटी को गले से लगा लिया।

सिर्फ काउन्ट चकित दृष्टि से यह सारा दृश्य देख रहे थे। लेकिन उन्हें इस दृश्य से प्रसन्नता हुई थी और वे मुस्करा रहे थे। जब मां-बेटी गले मिलीं तो काउन्ट ने अपना रूमाल निकालकर अपनी असली आंख पोंछी जिसमें एक आंसू आ गया था। कहना न होगा कि सब महिलाएं काउन्ट को मुबारक देने के लिए इकट्ठी हो गईं।

'मुबारक हो काउन्ट, मुबारक!' सब तरफ से आवाज़ आई।

'अच्छा तो आप शादी कर रहे हैं!'

'तो आप सचमुच शादी कर रहे हैं?'

'प्यारे काउन्ट! आप शादी कर रहे हैं?'

'हां, हां,' काउन्ट ने मुबारकबादों और महिलाओं के उत्साह से प्रसन्न होकर कहा, 'और मुझे मानना पड़ेगा कि सबसे ज़्यादा खुशी मुझे आपकी हमदर्दी को देखकर हुई है, जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। चार्मिंग! चार्मिंग! आप लोगों ने मेरी आंखों में आंसू ला दिए हैं…'

'मुझे चूमिए, काउन्ट!' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना सबसे ऊंची आवाज़ में बोली।

'और मैं स्वीकार करता हूं कि सबसे ज़्यादा हैरानी मुझे यह देखकर हुई कि हमारी आदरणीय मेज़बान मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने अपनी असाधारण तीक्ष्ण बुद्धि से मेरे सपने का अर्थ जान लिया है। आप लोग सोचेंगे कि सपना मैंने नहीं बल्कि मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने देखा था! गज़ब की तीक्ष्ण बुद्धि है! गज़ब की तीक्ष्ण बुद्धि है!'

'ओह काउन्ट, आप तो फिर अपने सपने पर लौट आए!'

'अच्छा तो काउन्ट! इस बात को स्वीकार कीजिए! स्वीकार कीजिए!' सब महिलाओं ने नज़दीक सरककर कहा।

'हां काउन्ट, इस भेद को छिपाने से कोई फायदा नहीं! बल्कि इस भेद को ज़ाहिर करने का वक्त आ गया है!' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने कठोर निश्चय के स्वर में कहा, 'मैं आपके सूक्ष्म रूपक का अर्थ और

जिस शानदार और कोमल ढंग से आपने मुझे यह भेद सबके सामने बताने का संकेत किया था, उसको समझ गई थी। हां श्रीमतियो ! यह सच है। काउन्ट ने आज सपने में नहीं, बल्कि सचमुच मेरी बेटी के आगे घुटने टेककर बाकायदा शादी का प्रस्ताव रखा था !'

'ऐसा लगता है कि जैसे यह बात सचमुच हुई हो, और परिस्थितियां भी यही थीं,' काउन्ट ने समर्थन किया और फिर अत्यन्त शिष्ट ढंग से ज़ेना की ओर, जो अभी तक चकित थी, मुड़कर कहा, 'मदमोज़ेल ! मैं कसम खाकर कहता हूं कि अगर और लोग आपका नाम न लेते तो मुझे कभी भी आपका नाम ज़बान पर लाने का साहस न होता। वह एक सुखद सपना था, बड़ा ही सुखद सपना था। मुझे दुगनी खुशी है कि मैं आपको ये सारी बातें सुना सका। चार्मिंग ! चार्मिंग !'

'आखिर माजरा क्या है ? काउन्ट अभी भी अपने सपने की बात करते जा रहे हैं !' अन्ना निकोलाईव्ना मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के कान में फुसफुसाई। घबराहट के मारे मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना का चेहरा पीला पड़ गया था।

अफसोस ! कि इन चेतावनियों के बगैर भी मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के दिल में बहुत समय पहले से संदेह और चिन्ताएं मौजूद थीं।

'आखिर इस बात का क्या मतलब हो सकता है !' महिलाएं एक दूसरे की तरफ देखकर फुसफुसाईं।

मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने एक रुग्ण, खुश्क मुस्कान के साथ कहा, 'सचमुच काउन्ट, आपका व्यवहार देखकर मुझे बेहद ताज्जुब हुआ है। भला यह सपने का अजब किस्सा कहां से आ गया ? सच पूछिए तो मैं अभी तक यही सोच रही थी कि आप मज़ाक कर रहे हैं, लेकिन—अगर यह सचमुच मज़ाक है तो बड़ा ही असंगत है—मैं कहना चाहती हूं कि आपके भलक्कड़पन के कारण ही ऐसा हुआ है। फिर भी···'

'शायद यह सारा किस्सा सिवा भुलक्कड़पन के कुछ नहीं था।'

नतालिया दमित्रीव्ना ने फुफकारकर कहा।

'हां, हां—भुलक्कड़पन ही था,' काउन्ट ने समर्थन किया। उन्हें अभी तक नहीं पता था कि ऐसी स्थिति में उन्हें क्या कहना चाहिए। 'इस बात से मुझे एक छोटी-सी घटना याद आ गई। एक बार मुझे पीटर्सबर्ग में किसीके जनाज़े में शामिल होना पड़ा। वे काफी बड़े लोग थे। वहां जाकर मैं फिर सब कुछ भूल गया। मेरा ख्याल था कि मुझे किसी जन्म-दिन में बुलाया गया है। एक हफ्ता पहले किसीके यहां जन्म-दिन मनाया गया था। मैं वहां फूलों का गुलदस्ता लेकर पहुंचा, लेकिन घर के भीतर जाकर मैंने देखा कि एक शरीफ, इज्ज़तदार आदमी की लाश मेज़ पर रखी है! मैं एकदम हैरान रह गया। मेरी समझ में न आया कि फूलों के गुलदस्ते का क्या करूं!'

मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने चिढ़कर काउन्ट को बीच ही में टोक दिया, 'लेकिन यह चुटकुले सुनाने का वक्त नहीं है काउन्ट। मेरी बेटी को दूल्हों के पीछे दौड़ने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अभी कुछ देर पहले आपने यहीं, प्यानो के पास, मेरी बेटी से शादी का प्रस्ताव किया था। मैंने आपसे इसके लिए याचना नहीं की थी, सच पूछिए तो आपका प्रस्ताव सुनकर मुझे एक धक्का-सा लगा था···उस वक्त मेरे मन में एक विचार उठा था, लेकिन मैंने सोचा आप सोकर उठ जाएंगे तभी आपसे इस बारे में बात करूंगी। लेकिन मैं एक मां हूं। यह मेरी बेटी है······ आपने अभी एक सपने का ज़िक्र किया था। मेरा ख्याल था कि आप एक रूपक द्वारा अपनी सगाई की घोषणा करना चाहते हैं। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आपको ज़रूर किसीने पट्टी पढ़ाई है, किसने पढ़ाई है, यह भी मैं जानती हूं—लेकिन अपनी सफाई दीजिए काउन्ट, फौरन अपने इस व्यवहार की सफाई दीजिए। आप एक शरीफ खानदान के साथ इस तरह खिलवाड़ नहीं कर सकते।'

'हां, हां, कोई भी आदमी एक शरीफ खानदान के साथ इस तरह

खिलवाड़ नहीं कर सकता !' काउन्ट ने यंत्रवत् दुहराया, हालांकि अब उनके चेहरे पर घबराहट के लक्षण नज़र आ रहे थे।

'लेकिन यह मेरे सवाल का सही जवाब नहीं है, काउन्ट। मैं कहती हूं, मुझे साफ-साफ जवाब दीजिए। फौरन और इसी वक्त। सब लोगों के सामने मानिए कि आपने कुछ देर पहले मेरी बेटी से शादी का प्रस्ताव किया था।'

'हां, हां, मैं यह मानने को तैयार हूं, लेकिन यह तो मैं पहले ही कह चुका हूं और फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने मेरे सपने को बिल्कुल ठीक भांप लिया था।'

'यह सपना नहीं था ! यह सपना नहीं था !' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना गुस्से में चीख पड़ीं, 'यह सपना नहीं था, सच्ची बात थी, सुना आपने काउन्ट ! यह सच्ची बात थी।'

'सच्ची बात !' काउन्ट हैरानी से अपनी कुर्सी छोड़कर उठ खड़े हुए। 'देखा मेरे दोस्त ! तुम्हारी भविष्यवाणी बिल्कुल सच निकली !' काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव की ओर मुड़कर कहा, 'लेकिन आदरणीय मारया अलैक्जेंड्रोव्ना, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि तुम्हें गलतफहमी हो गई। मुझे अच्छी तरह पता है कि यह सिर्फ सपना था।'

'हे ईश्वर !' मारया अलैक्जेंड्रोव्ना बोली। 'निराश मत होओ मारया अलैक्जेंड्रोव्ना ! शायद काउन्ट भूल गए हैं······उन्हें यह बात याद आ जाएगी,' नतालिया दमित्रीव्ना ने कहा।

मारया अलैक्जेंड्रोव्ना गुस्से में बोलीं, 'ताज्जुब है नतालिया दमित्रीव्ना, भला ऐसी बात भी कोई भूल सकता है ? वाह काउन्ट ! क्या आप हमारी हंसी उड़ा रहे हैं। क्या आप ड्यूमा के उपन्यासों में चित्रित रीजेंसी काल के फर्लेकोर या लोसां जैसे ओछे पात्रों की तरह आचरण करने पर तुले हैं ? मैं आपसे कह दूं कि आप इस चाल में सफल नहीं होने पाएंगे। आपकी उम्र को देखते हुए यह रोल आपको नहीं

जंचता। मेरी बेटी कोई फ्रेंच वाईकाउन्टेस नहीं है। कुछ देर पहले, इस कमरे में, ठीक इसी जगह पर ज़ेना ने आपको गाना सुनाया था, आप इतने प्रभावित हुए थे कि घुटनों के बल बैठकर उससे शादी का प्रस्ताव किया था। आपका ख्याल है कि मैं सपना देख रही हूं? मैं सो तो नहीं रही! बोलिए काउन्ट—मैं जाग रही हूं या सो रही हूं?'

'हां, हां······मेरा मतलब है—नहीं!' घबराए हुए काउन्ट ने कहा, 'मेरा मतलब है कि इस वक्त मालम होता है कि मैं जाग रहा हूं। लेकिन उस वक्त मैं सो रहा था और मैंने सपना देखा था······यह सब सपने में हुआ था।'

'ईश्वर के लिए ज़रा मुझे समझाइए कि आपका मतलब क्या है? यह सपना नहीं था—यह सपना था, यह सपना था—यह सपना नहीं था! वाह कैसी हिमाकत है! आप कहीं प्रलाप तो नहीं कर रहे काउन्ट?'

'हां, आखिर···लेकिन अब लगता है कि मेरा दिमाग एकदम गड़-बड़ हो गया है,' काउन्ट ने घबराई नज़रों से चारों तरफ देखा।

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने विक्षिप्त आग्रह के स्वर में कहा, 'भला यह सपना कैसे हो सकता जब कि आपके किसी और को बताने से पहले मैंने इतने विस्तार से सारी घटना बयान की है!'

'आह, लेकिन शायद काउन्ट ने यह सपना किसीको बताया हो!' नतालिया दमित्रीव्ना ने बीच में ही टिप्पणी की।

'हां, हां, शायद मैंने किसीको बताया,' काउन्ट ने बदहवासी की हालत में जवाब दिया।

'यह तो बिल्कुल नाटक हो गया!' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना ने अपने साथ बैठी महिला के कान में फुसफुसाकर कहा।

'हे मेरे ईश्वर! ऐसी परिस्थितियों में तो कोई संत भी अपना धैर्य खो सकता है!' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने बेचैनी से अपने हाथ मलते

हुए कहा, 'ज़ेना ने आपको गाना सुनाया था, गाना सुनाया था! क्या वह भी सपना था?'

'हां, हां, मेरा ख्याल है कि सचमुच उसने मुझे गाना सुनाया था,' काउन्ट ने सोचा और सहसा किसी स्मृति से उनका चेहरा खिल उठा।

काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव की तरफ मुड़ते हुए कहा, 'मेरे अज़ीज़! मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि सचमुच मैंने एक गाना सुना था, जिसमें किलों का और किसी गायक का ज़िक्र था। अरे हां—मुझे सारी बात याद आ गई—उस गाने को सुनकर मुझे रोना तक आ गया था—तो तुमने देख लिया, मैं यकीन से नहीं कह सकता कि यह निरा सपना था—शायद यह सपना बिल्कुल नहीं था!'

मोज़ग्ल्याकोव ने अपनी आवाज़ को भरसक शान्त बनाने की कोशिश की, हालांकि उसकी आवाज़ से घबराहट साफ झलक रही थी, 'मैं कहना चाहता हूं कि मेरी राय में यह सारा मामला बड़ी आसानी से सुलझ सकता है। मेरा ख्याल है कि आपने सचमुच गाना सुनाया था। ज़िनेदा अफनासीव्ना बहुत सुन्दर गाती हैं। खाने के बाद आपको इस कमरे में लाया गया था और ज़िनेदा अफनासीव्ना ने आपको गाना सुनाया। मैं खुद तो यहां मौजूद नहीं था, लेकिन शायद बीते दिनों की याद आने से आपका दिल भर आया था। शायद आपको वाईकाउन्टेस की याद आ गई होगी, जिनके साथ आप गीत गाया करते थे, और जिनके बारे में आपने हम लोगों को आज सुबह बताया था। अच्छा तो उसके बाद, आप सोने के लिए चले गए और इन सुखद प्रभावों के कारण आपने सपना देखा कि आपको किसीसे प्यार हो गया और आपने उससे शादी का प्रस्ताव किया है।'

मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ऐसी गुस्ताखी से एकदम स्तब्ध रह गईं।

काउन्ट ने हर्षोन्माद से कहा, 'हां, बिल्कुल यही बात थी। मेरे अज़ीज़! सुखद प्रभावों के कारण ही ऐसा हुआ। मुझे अच्छी तरह याद

है कि सपने में किसीने मुझे गाना सुनाया था, और मेरे मन में शादी करने की इच्छा पैदा हुई थी। वाईकाउन्टेस भी उस सपने में दिखाई दी थीं। तुमने कितनी होशियारी से सारी समस्या को सुलझाया है, मेरे अज़ीज़ ! अच्छा तो अब मुझे बिल्कुल यकीन हो गया कि यह एक सपना था। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ! मैं यकीन दिलाता हूं कि तुम्हें गलतफहमी हो गई है ! यह सपना था वरना मैं कभी भी तुम्हारी नेक भावनाओं से खिलवाड़ न करता !'

'आह ! अब मैं समझ गई कि यह किसकी करतूत है !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने गुस्से से पागल होकर मोज़ग्ल्याकोव से कहा, 'यह तुम्हारी ही करतूत है, नीच आदमी ! तुमने इस बेचारे नामर्द के दिमाग में उलझन पैदा कर दी है, क्योंकि तुम्हें खुद ठुकरा दिया गया था। लेकिन तुम्हें इस अपमान का बदला चुकाना पड़ेगा, घृणित कीड़े ! चुकाना पड़ेगा ! चुकाना पड़ेगा ! चुकाना पड़ेगा !

मोज़ग्लयाकोव का चेहरा केंकड़े की तरह लाल हो गया। वह ज़ोर से चिल्लाया, 'मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना! समझ में नहीं आता कि तुम्हारे शब्दों के बारे में क्या कहूं·—भद्र वर्ग की कोई भी महिला अपने-आपको—कम से कम, मैं अपने रिश्तेदार की रक्षा ज़रूर करूंगा। आप अच्छी तरह जानती हैं कि आपने इन्हें फुसलाकर···'

'हां, हां, फुसलाया था !' काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव के पीछे छिपने की कोशिश करते हुए कहा।

'अफानासी मातविच !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना अस्वाभाविक आवाज़ में चीख पड़ीं, 'तुम सुन नहीं रहे, हम लोगों की किस तरह बेइज़्ज़ती की जा रही है ! क्या तुमने अपने-आपको इस ज़िम्मेदारी से मुक्त कर लिया है ? क्या तुम एक परिवार के पिता नहीं हो ? क्या तुम लकड़ी के बदसूरत कुन्दे के सिवा कुछ नहीं हो ? इस तरह मूर्खों की तरह आंखें मत झपकाओ ! तुम्हारी जगह अगर कोई और पति होता तो वह

ऐसी बेइज्ज़ती को खून से कभी का पोंछ चुका होता···'

'बीवी !' अफानासी मातविच ने दिखावटी अन्दाज़ में कहा। उसकी भी ज़रूरत पड़ी, इस बात पर उसे गर्व था, 'बीवी ! शायद तुम्हींने यह सपना देखा होगा और जागने के बाद तुम्हारे दिमाग में सब बातें गड़बड़ हो गईं, जो हमेशा हो जाती हैं !'

लेकिन अफानासी मातविच अपना यह पैनी सूझ वाला अनुमान खत्म नहीं कर पाया था। अभी तक सभी महिलाओं ने संयम से काम लिया था और बड़ी शिष्टता का अभिनय कर रही थीं। लेकिन अब सारा कमरा एक ज़ोर के ठहाके से गूंज उठा। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना सारा शिष्टाचार भूलकर, निश्चय ही अपने पति की आंखें फोड़ने के इरादे से उसपर झपटीं, लेकिन उन्हें ज़बरदस्ती रोक लिया गया। नतालिया दमित्रीव्ना ने स्थिति से फायदा उठाकर ज़हर की एक और बूंद घोल दी।

'ओह मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना, शायद सचमुच ऐसा ही हुआ हो और तुम बेकार अपने को परेशान कर रही हो !' नतालिया दमित्रीव्ना की आवाज़ में शहद की सी मिठास थी।

'क्या हुआ था ?' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना बात का मतलब ठीक से नहीं समझ पाई थीं।

'ओह मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ! ऐसा अक्सर हो जाता है !'

'क्या हो जाता है ? तुम मुझे क्यों छेड़ रही हो ? साफ-साफ क्यों नहीं कहतीं ?'

'शायद यह तुम्हारा सपना ही हो ?'

'सपना ? मैंने सपना देखा था ? और तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मेरे सामने इस बात को कहो ?'

'शायद यह सचमुच सपना ही था !' फेलिस्ता मिखाईलोव्ना बोली।

'हां, हां, यही बात थी,' काउन्ट बड़बड़ाया।

'और यह आदमी भी यही कह रहा है! हे मेरे ईश्वर!' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने विक्षिप्त भाव से अपनी बांहें फेंकते हुए कहा।

'इस बात पर बुरा न मनाओ मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना! याद रखो, ईश्वर सपने भेजता है। अगर ईश्वर की यही मर्ज़ी है तो उसकी मर्ज़ी के खिलाफ जाने में कोई फायदा नहीं। गुस्सा करने का कोई कारण नहीं।'

'हां, हां, गुस्सा करने की कोई बात नहीं।' काउन्ट बोला।

'तुम्हारा ख्याल है कि मैं पागल हो गई हूं!' गुस्से के मारे मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना के गले से शब्द नहीं निकल रहे थे। सचमुच यह स्थिति इन्सान की सहनशक्ति से बाहर थी। मरया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने जल्दी से एक कुर्सी तलाश की और बेहोश होकर धम्म से कुर्सी पर गिर गईं। इसपर बड़ा शोरगुल मचा।

'अपनी नाक रखने के लिए जान-बूझकर यह बेहोशी बुलाई गई है,' नतालिया दमित्रीव्ना ने अन्ना निकोलाईव्ना से फुसफुसाकर कहा।

लेकिन इसी वक्त जब लोगों का क्षोभ और दृश्य का तनाव चरम-सीमा तक पहुंच गया था, ज़ेना उठकर आगे आई। अभी तक उसने सारी कार्रवाई में काई भाग नहीं लिया था। उसके आगे आते ही सारी स्थिति ने दूसरा ही रंग ले लिया।

१४

कुल मिलाकर ज़िनेदा अफनासीव्ना का व्यक्तित्व बेहद रोमांटिक था। चाहे इसका कारण, जैसा कि मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने कहा था,

'अपने उस टीचर के साथ बैठकर उस बेवकूफ शेक्सपियर की रचनाओं को पढ़ना था,' यह तो मैं नहीं कह सकता लेकिन इससे पहले ज़ेना मोर्दा-सोव में कभी भी इतने असाधारण रोमांटिक और साहसपूर्ण रूप में नहीं प्रकट हुई थी, जैसा कि उसने अब दिखाया था।

ज़ेना की आंखों में दृढ़ निश्चय की झलक थी, लेकिन उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह आवेश से कांप रही थी। क्रोध की इस मुद्रा में उसका सौन्दर्य अलौकिक हो उठा था। वह आगे बढ़ी। उसने एक लंबी अवज्ञा भरी दृष्टि चारों तरफ फेंकी। फौरन कमरे में खामोशी छा गई। ज़ेना अपनी मां के पास पहुंची, उसका स्पर्श पाते ही मां की बेहोशी फौरन दूर हो गई और मां ने आंखें खोल दीं।

ज़ेना ने कहा, 'मां, और पाखंड करने से क्या फायदा है? झूठ बोलकर अपनी इज्जत पर और दाग क्यों लगा रही हो? सारा मामला इतना गंदा हो चुका है कि इतनी गंदगी को छिपाने के लिए और जलालत बर्दाश्त करने में कोई फायदा नहीं।'

'ज़ेना! ज़ेना! तुम्हें क्या हो गया है? जरा सोचो तो सही, तुम क्या कह रही हो?' त्रस्त मारया अलेक्ज़ेंड्रोव्ना अपनी कुर्सी से उछल-कर बैठ गईं।

'मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया मां, कि मैं इतनी जलालत बर्दाश्त नहीं कर सकूंगी। क्या हमारा और अधिक पतन होना चाहिए? हमें अपने-आपको और ज्यादा कलुषित करना चाहिए? लेकिन मैं सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती हूं मां, क्योंकि सबसे ज्यादा कसूर इसमें मेरा है। मैंने ही घृणित···साजिश को आगे बढ़ने दिया। तुम एक मां हो। तुम मुझे चाहती हो। तुमने अपने ढंग से, अपने विचारों के अनुसार मुझे सुखी बनाने की कोशिश की। तुम्हारे व्यवहार को तो माफ किया जा सकता है, लेकिन मेरा—मेरे आचरण को कभी माफ नहीं किया जा सकता।'

'ज़ेना, कहीं तुम सब कुछ बक तो नहीं दोगी ? हे मेरे ईश्वर ! मुझे पहले से ही आशंका थी कि यह छुरा हमेशा मेरे सीने से लगा रहेगा।'

'हां, मां, मैं सब कुछ बता दूंगी ! मेरी, तुम्हारी, हम सब लोगों की बेइज़्ज़ती हुई है ।'

'तुम बात को तूल दे रही हो, ज़ेना ! तुम आपे में नहीं हो ! तुम नहीं जानतीं कि तुम क्या कह रही हो ! कुछ कहने से क्या फायदा ! बेइज़्ज़ती हमारी नहीं हुई—मैं अभी इसी क्षण साबित कर दूंगी कि बेइज़्ज़ती हमारी नहीं हुई—'

'नहीं मां !' ज़ेना की आवाज़ क्रोध से कांप रही थी, 'मैं इन लोगों के सामने हरगिज़ खामोश नहीं रह सकती, जिनकी राय से मुझे नफरत है और जो यहां हमारी हंसी उड़ाने आई हैं। मैं उनके हाथों अपनी बेइज़्ज़ती नहीं करा सकती ! इनमें से किसी एक को भी मुझपर कीचड़ उछालने का अधिकार नहीं है। ये सबकी सब इसी क्षण, तुम्हारी या मेरी नीचता से भी सौ गुना बड़ी नीचता कर सकती हैं। फिर क्या इनमें इतना साहस है कि हमारी अच्छाई-बुराई परख सकें ? क्या उन्हें इतनी तमीज़ है ?'

'वाह, क्या तरीका है ! ज़रा सुनो तो इस लड़की की बातें ! तुम्हें कैसी लगीं ! यह हमारी बेइज़्ज़ती कर रही है !' चारों तरफ से आवाज़ें आईं।

'उसे नहीं मालूम कि वह क्या कह रही है,' नतालिया दमित्रीव्ना बोली।

हम यहां प्रसंगवश कह दें कि नतालिया दमित्रीव्ना का कहना बिल्कुल सही था। अगर ज़ेना उन महिलाओं को इस काबिल नहीं समझती थी कि वे उसकी अच्छाई-बुराई परख सकें तो फिर वह उनके सामने यह घोषणा क्यों कर रही थी ? यह सारी बातें क्यों स्वीकार कर

रही थीं ? ज़िनेदा अफनासीव्ना ने बहुत जल्दबाज़ी दिखाई थी। बाद में मोर्दासोव के सबसे आला दिमागों ने यही राय दी थी। सारा मामला ठीक हो सकता था, सारी कठिनाइयां सुलझ सकती थीं। यह सच है कि उस दिन शाम को अपनी जल्दबाज़ी और गुस्ताखी से मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने अपने-आपको नुकसान पहुंचाया था। उन्हें चाहिए था कि उस नामर्द बूढ़े की बातों पर हंस देतीं और उसे घर से निकाल देतीं। लेकिन ज़ेना ने, जो मोर्दासोव की सहज बुद्धि और विवेक के विरुद्ध आचरण कर रही थी, जाकर काउन्ट से कहा—

'काउन्ट !' बूढ़ा इस वक्त ज़ेना के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हुआ कि आदर-भाव से खड़ा हो गया।

'मुझे माफ कर दीजिए काउन्ट ! हम लोग माफी चाहते हैं। हम लोगों ने आपको बहकाया, फुसलाया—'

'चुप रहो ! अभागी लड़की !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना क्रोध से बोलीं।

'मदाम ! मदाम ! मेरी प्यारी बच्ची—' स्तब्ध काउन्ट बड़बड़ाया।

लेकिन ज़ेना का अहंकारी, मनमाना और रोमांटिक स्वभाव उसे परम्परागत शालीनता की सीमा से बहुत दूर ले गया। वह अपनी मां को बिल्कुल भूल गई जो बेटी की बातें सुनकर मानसिक यंत्रणा से तड़प रही थीं।

'हां, काउन्ट हम दोनों ने आपको बहकाया था—मां ने आपको मुझसे शादी करने के लिए मजबूर किया था इसलिए, और मैंने इसलिए क्योंकि मैं इस बात के लिए राज़ी हो गई थी। मैं आपके आगे गाना गाने और ढोंग रचने के लिए तैयार हो गई थी। आप कमज़ोर और अरक्षित थे, आपकी आंखों में धूल झोंकी गई, जैसा कि पावेल अलैक्ज़ैंड्रोव्ना ने कहा है, आपकी दौलत और आपके ओहदे की खातिर यह सब किया गया। यह भयंकर कमीनापन था, जिसके लिए मुझे सख्त अफसोस है।

लेकिन मैं कसम खाकर कहती हूं काउन्ट कि मैंने किसी कमीने इरादे से इस कमीनेपन पर उतरने का फैसला नहीं किया था। मैं चाहती थी—लेकिन जाने दीजिए इस बात को! ऐसे मामले में अपने लिए औचित्य ढूंढ़ना दुगना कमीनापन होगा। लेकिन मैं आपको यकीन दिलाती हूं, काउन्ट कि अगर मैं आपसे कुछ भी लेती तो उसके बदले में अपने-आपको आपके हाथों का खिलौना, नौकर, नाच करने वाली सेविका बना देती—मैंने यह करने की कसम खाई थी और मैं अपना वचन जरूर पूरा करती—'

इसी वक्त उसका गला रुंध गया। सब महिलाएं स्तब्ध होकर, आंखें फाड़-फाड़कर सुन रही थीं। ज़ेना के अप्रत्याशित और अनर्गल व्यवहार से सबको ताज्जुब हुआ था। सिर्फ काउन्ट की आंखों में आंसू आ गए थे, हालांकि ज़ेना की बातों में से सिर्फ आधी बातें ही उनके पल्ले पड़ी थीं।

'मैं तुमसे ज़रूर शादी करूंगा, मेरी बच्ची, चूंकि तुम शादी के लिए इतनी उत्सुक हो,' काउन्ट बड़बड़ाया, 'और मेरे लिए यह बड़े गर्व की बात होगी। लेकिन मेरे ख्याल में यह सब सपना था। सचमुच मैं यही सोचता हूं। लेकिन मुझे सपने में क्या दिखाई दिया इससे कौन-सा फर्क पड़ता है? इससे परेशान मत होओ। मेरी समझ में तो कोई बात नहीं आ रही। मेरे प्यारे', काउन्ट ने मोज़ग्ल्याकोव की तरफ मुड़कर कहा, 'मेहरबानी करके मुझे समझाओ कि यह सब क्या है?'

ज़ेना ने भी मोज़ग्ल्याकोव की तरफ मुड़कर कहा, 'और तुम पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच, किसी ज़माने में मैंने तुम्हें अपने भावी पति के रूप में देखने का निश्चय किया था, तुमने अब मुझसे क्रूर बदला लिया है, भला तुम मुझे पीड़ा देने और मेरी बेइज़्ज़ती करने के लिए इन सब लोगों के साथ कैसे मिल गए? तुम तो कहते थे कि तुम्हें मुझसे प्यार है! लेकिन तुम्हें उपदेश देने वाली भला मैं कौन होती हूं? तुमसे ज्यादा कसूर मेरा

है ! मैंने तुम्हारी बेइज्ज़ती की, मैंने तुम्हें वादों से बांधे रखा और मैंने तुमसे जो भी कहा, वह सब झूठ और धोखे का जाल था। मुझे तुमसे कभी प्यार नहीं था और मैंने तुमसे शादी करने का फैसला सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मैं किसी तरह इस मनहूस शहर से, यहां की सड़ांध से निकलकर दूर जाना चाहती थी···लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूं कि अगर मैं तुमसे शादी करती तो ज़रूर एक नेक और वफादार बीवी की तरह रहती। तुमने मेरे साथ क्रूर बदला लिया है और अगर इससे तुम्हारे अहंकार को तुष्टि मिलती है—'

'ज़िनेदा अफनासीव्‌ना !' मोज़ग्ल्याकोव बोला।

'अगर अभी भी तुम्हारे दिल में मेरे लिए नफरत है—'

'ज़िनेदा अफनासीव्‌ना !'

ज़ेना ने अपने आंसुओं को थामकर कहा, 'अगर तुमने कभी भी मुझसे प्यार किया था—'

'ज़िनेदा अफनासीव्‌ना !'

'ज़ेना ! ज़ेना ! मेरी बेटी !' मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्‌ना शोकातुर होकर चिल्लाई।

'मैं बदमाश हूं, ज़िनेदा अफनासीव्‌ना, इससे ज्यादा कुछ नहीं।' मोज़ग्ल्याकोव ने कहा। श्रोताओं की उत्तेजना बढ़ गई थी। क्षोभ और आश्चर्य की आवाज़ें सुनाई दीं लेकिन मोज़ग्ल्याकोव इस तरह खड़ा था जैसे उसे काठ मार गया हो। उसका दिमाग खाली हो गया था, आवाज़ बंद हो गई थी।

कमज़ोर और ओछे लोग, जो हमेशा दूसरों के आगे झुकने के आदी होते हैं, जब आवेश में आकर किसी बात के खिलाफ प्रतिवाद करते हैं या संक्षेप में कहा जाए कि दृढ़ता और एकाग्रता दिखाते हैं तो हमेशा एक बाधा आकर उनके सामने खड़ी हो जाती है। उनकी दृढ़ता और एकाग्रता की एक सीमा होती है। शुरू में उनका प्रतिवाद बेहद ज़ोरदार

होता है। यह शक्ति विक्षिप्ति की सीमा तक भी पहुंच सकती है। ऐसे लोग अपनी आंख मूंदकर अपने-आपको बाधाओं के बीच धकेल देते हैं और अपने ऊपर इतना बोझ उठा लेते हैं जो उनके लिए बहुत भारी होता है। लेकिन एक विशेष बिन्दु पर पहुंचने के बाद, ऐसे क्रुद्ध लोग अपने ही क्रोध से भयभीत होकर घबरा जाते हैं और अपने को संभालने की कोशिश करते हैं। उसके मन में सवाल उठता है, 'यह मैंने क्या किया !' इसके बाद वे भावुक हो उठते हैं, सफाई पेश करते हैं, और घुटने टेककर माफी मांगते हैं। और इस बात के लिए याचना करते हैं कि पहले की सी स्थिति फिर लौट आए। और बिल्कुल यही बात मोज़ग्ल्याकोव के साथ भी हुई। आवेश के पहले दौरे के बाद, जिसमें वह ऐसी तबाही मचा चुका था और जिसके लिए अब वह अपने सिवा किसीको दोष नहीं दे सकता था, अपना पूरा गुस्सा दिखाने और अहंकार-तुष्टि के बाद, जिसके लिए उसे आत्मग्लानि का अनुभव हो रहा था, उसने सहसा अपने को थामा। ज़ेना के अप्रत्याशित रहस्योद्‍घाटन से उसका हृदय पश्चात्ताप से चूर-चूर हो रहा था। ज़ेना के आखिरी शब्दों ने तो उसे बिल्कुल ही खत्म कर दिया। एक क्षण में ही मोज़ग्ल्याकोव एक सीमा से उछलकर दूसरी सीमा पर जा पहुंचा।

'मैं गधा हूं ज़िनेदा अफनासीव्ना !' उसे भयंकर पश्चात्ताप हो रहा था, 'गधा ? वह तो कुछ भी नहीं। मैं गधे से भी गया-गुज़रा हूं। लेकिन तुम्हें दिखा दूंगा ज़िनेदा अफनासीव्ना, लेकिन मैं तुम्हें दिखा दूंगा, मैं दिखा दूंगा कि एक गधा कितना नेक और शरीफ हो सकता है ! चचाजान, मैंने आपको धोखा दिया है ! धोखा देने वाला मैं था ! आप सोए नहीं थे। आपने सचमुच शादी का प्रस्ताव किया था, और चूंकि मुझे ठुकराया जा चुका था, इसलिए बदला लेने के लिए मैंने आपको यकीन दिलाया कि यह सब निरा सपना था—मैं बदमाश जो ठहरा !'

'मालूम होता है, आज असाधारण रहस्योद्घाटन सुनने को मिलेंगे,' नतालिया दमित्रीव्ना अन्ना निकोलाईव्ना के कान में बोली।

'अपने को शान्त करो मेरे अज़ीज़ ! तुम्हारे चीखने-चिल्लाने से मुझे डर लगता है। मैं यकीन दिलाता हूं कि तुम्हें गलतफहमी हो गई है।—अगर शादी करना ज़रूरी हो तो मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार हूं, लेकिन तुमने खुद ही मुझसे कहा था कि यह सिर्फ सपना था—'

'ओह, अब मैं आपको किस तरह समझाऊं ! कोई बताए कि इन्हें किस तरह यकीन दिलाऊं ? चचाजान, चचाजान, ! यह बड़ा महत्त्वपूर्ण घरेलू मामला है। ज़रा सोचिए। गौर कीजिए।''

'अच्छी बात है मेरे दोस्त ! मैं दुबारा इस बारे में सोचूंगा ! ज़रा मुझे सारी घटनाओं को क्रमानुसार याद करने दो ! सबसे पहले मैंने सपने में अपने कोचवान फ्योफिल को देखा था—'

'ओह चचाजान ! इस वक्त फ्योफिल को छोड़िए !'

'हां, हां, फ्योफिल को छोड़िए! फिर मैंने नेपोलियन को देखा, उसके बाद लगा कि हम लोग चाय पी रहे हैं, फिर कोई औरत आई और सारी चीनी खा गई !'

'लेकिन चचाजान ! मेरे सामने नतालिया दमित्रीव्ना की यह बात तो मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ने आपको बताई थी। मैंने अपने कानों से यह बात सुनी थी। मैं छिपकर एक दरार में से आपको देख रहा था।' मोज़ग्ल्याकोव ने बिना सोचे-समझे कि वह क्या कह रहा है—यह बात कह डाली।

'क्या कहा ? तुमने काउन्ट से कहा था कि मैंने तुम्हारे कटोरे में से चीनी चुराई थी ? तो मैं तुम्हारे यहां चीनी चुराने आती हूं, क्यों ?'

'मेरी नज़रों से दूर चले जाओ !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना विक्षिप्त होकर चिल्लाईं।

'यह सब नहीं चलेगा, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना ! खबरदार जो ऐसी

बात मुंह से निकाली। तो मैंने तुम्हारी चीनी चुराई थी। क्यों? मैंने बहुत पहले सुन रखा है कि तुम मेरे बारे में गंदी अफवाहें फैला रही हो। सोफिया पेत्रोव्ना ने मुझे सारी बातें बता दी हैं—अच्छा तो मैं तुम्हारी चीनी चुराती हूं, क्यों?'

'श्रीमतियो! यह तो सिर्फ एक सपना था। सपने में आदमी कुछ भी देख सकता है।' काउन्ट बोले।

'मनहूस टब कहीं की!' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना दबी ज़बान से बोलीं।

'तो मैं टब हूं, क्यों?' नतालिया दमित्रीव्ना ज़ोर से चिल्लाई, 'और तुम क्या हो? मुझे बहुत दिनों से मालूम है कि तुम मुझे टब कहती हो। कम से कम मेरा पति तो ढंग का आदमी है, तुम्हारा पति तो मूर्ख—'

'हां, हां, टब! मुझे याद है,' अनायास ही काउन्ट बड़बड़ा उठे। उन्हें मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना के साथ हुई अपनी बातचीत याद आ गई।

'क्या कहा? और आप भी एक खानदानी औरत को गाली देते हैं? एक खानदानी औरत को गाली देने की हिम्मत आपको कैसे हुई काउन्ट? अगर मैं टब हूं तो आप एक टांग वाले अपाहिज हैं!'

'मैं—एक टांग वाला—'

'हां, हां, अपाहिज और साथ ही बिना दांत के पोपले भी।'

'और काने भी!' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना चिल्लाईं।

'आपने पसलियों की जगह कारसेट लगा रखी है।' नतालिया दमित्रीव्ना बोली।

'आपका चेहरा स्प्रिंगों के सहारे खड़ा है!'

'आपके सारे बाल नकली हैं।'

'इस बूढ़े बेवकूफ की मूछें भी नकली हैं,' मारया अलैक्जैन्ड्रोव्ना ने टिप्पणी की।

'कम से कम मेरी नाक को तो बख्श दो, मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना !' काउन्ट ने कहा। इतने अप्रत्याशित रहस्योद्घाटनों से उनके पैरों तले ज़मीन खिसक गई थी। 'मेरी नाक तो असली है। मेरे दोस्त, ज़रूर तुम्हींने मुझे धोखा दिया है—तुम्हींने इन लोगों को बताया है कि मेरे बाल नकली हैं—'

'ओह् चचाजान !'

'नहीं मेरे दोस्त, अब मैं और ज़्यादा नहीं ठहर सकता ! कैसी सोसाइटी है ! मुझे यहां से ले चलो। हे ईश्वर, तुम मुझे कहां ले आए हो !'

'नामर्द ! बदमाश !' मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना चिल्लाईं।

'हे ईश्वर !' बदकिस्मत काउन्ट बोले, 'मैं यहां किसलिए आया था, यह तो मुझे याद नहीं लेकिन अभी याद आ जाएगा। मुझे यहां से ले चलो भाई, ले चलो, वरना ये लोग मेरे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे…इसके अलावा मुझे एक नया विचार लिखना है—'

'मेरे साथ आइए चचाजान, अभी भी वक्त है। मैं फौरन आपको होटल में ले चलूंगा और खुद भी वहीं आ जाऊंगा।'

'हां, हां, होटल में चलो। अलविदा मेरी प्यारी बच्ची—सिर्फ तुम—तुम ही नेक हो। तुम एक शरीफ लड़की हो ! आओ मेरे अज़ीज़ ! हे मेरे ईश्वर !'

लेकिन काउन्ट के जाने के बाद के अप्रिय दृश्य के अन्तिम अंक का मैं यहां वर्णन नहीं करूंगा। सारी महिलाएं गाली-गलौज और चीख-चिल्लाहट के साथ वहां से विदा हुईं। और मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना अपने वैभव के खंडहरों के बीच अकेली रह गईं। अफसोस ! शक्ति, वैभव, इज़्ज़त सब एक ही शाम में धूल में मिल गए। मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना को महसूस हुआ कि वे कभी भी अपनी पहली ऊंचाइयों तक नहीं पहुंच सकेंगी। कई बरसों से मोर्दासोव के सारे समाज पर लगातार जो अत्या-

चार वे करती आई थीं, वे हमेशा के लिए मटियामेट हो गए थे। अब उनके पास क्या रहा था? फिलासफी बघारना? लेकिन उन्होंने फिलासफी नहीं बघारी। रात भर वे प्रलाप करती रहीं। 'ज़ेना की बेइज़्ज़ती हुई, चुगली का कोई ठिकाना नहीं। एकसाथ इतना मुसीबतें!'

एक वफादार इतिहासकार होने के नाते मैं यह जिक्र ज़रूर करूंगा कि उपसंहार में सबसे ज्यादा तकलीफ अफानासी मातविच को हुई और वह किसी कोठरी में घुसकर सुबह तक कांपता रहा। लेकिन जब सुबह हुई तब भी उसके मन को सान्त्वना न मिली। मुसीबतें कभी भी अकेली नहीं आतीं।

१५

जब किस्मत किसीको तबाही के लिए चुनती है तो किस्मत की ठोकरें कभी खत्म नहीं होतीं। बहुत दिनों से लोग यह बात देखते आए हैं। कल की बेइज़्ज़ती और शर्म के बाद ही मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोवना की मुसीबतें खत्म नहीं हो गईं। नहीं, किस्मत ने उनके लिए इससे भी और वेहतर चीज़ें रख छोड़ी थीं।

सुबह के दस बजे से पहले ही सारे शहर में एक अजब और अविश्वनीय अफवाह फैल गई, जिसका स्वागत बड़े ही ईर्ष्यापूर्ण और दुष्टता भरे आनन्द के साथ किया गया, जिस तरह हम अपने पड़ोसियों की किसी बड़ी बदनामी का स्वागत करते हैं। सब कह रहे थे, 'इतनी बेहयाई और अनैतिकता! इतना पतन! शराफत को एकदम ताक पर उठाकर रख दिया, और इस हद तक चली गई,' इत्यादि, इत्यादि। बात यह

हुई थी कि सुबह, छह बजे के बाद एक पीले और दयनीय चेहरे वाली एक दुखिया औरत आंसू बहाती हुई मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना के यहां आई। उसने नौकरानी से कहा कि वह अपनी छोटी मालकिन को फौरन जगा दे, सिर्फ छोटी मालकिन को ही ताकि मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना को खबर न लगे। ज़ेना उदास और पीला चेहरा लिए फौरन भागी हुई उस बुढ़िया के पास आई। बुढ़िया उसके कदमों पर गिरकर आंसू बहाने लगी और उसने ज़ेना से कहा कि वह फौरन उसके साथ उसके बीमार बेटे वास्या को देखने चले, जिसकी हालत बहुत खराब हो गई थी और रात भर खराब रही थी, इतनी खराब कि वह शायद ही आज का दिन काट सके। बुढ़िया ने सिसक-सिसककर ज़ेना को बताया था कि खुद वास्या ने उसे बुला भेजा है और उसे सारे पवित्र फरिश्तों की, अपने प्यार की कसम खिलाते हुए कहा कि अगर जेना उससे अंतिम विदाई लेने न आई तो वह मन में शोक लिए इस दुनिया से चला जाएगा। ज़ेना ने फौरन उसके पास जाने का फैसला कर लिया, हालांकि ऐसा करने से उस खत की, जो पकड़ा गया था, और ज़ेना के बेहूदे बर्ताव की और उन सारी अफवाहों की पुष्टि हो जाएगी जो उसके बारे में दुर्भावना-पूर्वक फैलाई गई थीं। अपनी मां से एक शब्द भी कहे बगैर ज़ेना ने अपने कंधों पर एक लबादा डाला और वह उस बुढ़िया के साथ, शहर की सड़कों के रास्ते मोर्दासोव की एक अत्यन्त गरीब बस्ती में चली गई। दूर एक गली में, एक टेढ़ा-मेढ़ा टूटा-फूटा मकान था, जिसमें खिड़कियों की जगह छेद थे और जिसमें चारों तरफ बर्फ जमी हुई थी। यह मकान ज़मीन में धंसता हुआ मालूम हो रहा था।

इस दरबे में एक नीची छत वाली, छोटी उदास-सी कोठरी थी, जिसमें आधी से ज्यादा जगह एक बड़ी अंगीठी ने घेर रखी थी। बिना रंग किए गए लकड़ी के तख्त पर, जिसपर सीधा गद्दा बिछा था, एक नौजवान लेटा था। उसका शरीर एक तार-तार हुए ओवरकोट से ढका

था। उसका चेहरा पीला और विकृत था। उसकी आंखें जैसे बुखार में चमक रही थीं। उसकी बांहें लकड़ियों की तरह सूखी और पतली थीं। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी और गले में घर्राहट हो रही थी। उसे देखने से लगता था कि कभी वह खूबसूरत रहा होगा लेकिन बीमारी ने उसके खूबसूरत चेहरे की सुसंस्कृत आकृति को विकृत कर दिया था। तपेदिक के मरीज़ों के चेहरों की तरह या यूं कहें कि सभी मरणासन्न व्यक्तियों के चेहरों की तरह उसका चेहरा भी देखने वाले के मन में भय और दया जागरित करता था। उसकी बूढ़ी मां, जो पूरे एक बरस से आखिरी क्षण तक अपने वास्या के स्वस्थ होने की उम्मीद लगाए बैठी थी, समझ गई कि अब वास्या की ज़िन्दगी जल्द ही खत्म होने वाली है। इस वक्त वह अपने बेटे के सिरहाने शोकातुर भाव से अपने दोनों हाथ बांधे विस्फारित आंखों से अपने बेटे को देख रही थी, उसकी आंखों में आंसू नहीं थे, उसे यह जानते हुए भी यकीन नहीं हो रहा था कि कुछ ही दिनों में उसका लाड़ला वास्या बर्फ से ढकी ज़मीन के नीचे मनहूस कब्रिस्तान में दफना दिया जाएगा। लेकिन उस वक्त वास्या अपनी मां की तरफ नहीं देख रहा था। उसका क्षीण और पीड़ित चेहरा आनन्द से चमक उठा। उसने अपने सिरहाने खड़ी ज़ेना को देखा, पिछले डेढ़ बरस से सोते, जागते, बीमारी की लम्बी दुःखदायी रातों में वह जिसके सपने देखता आरहा था। वह समझ गया कि ज़ेना ने उसे माफ कर दिया है और वह उसके जीवन की अन्तिम घड़ी में दैवी फरिश्ता बनकर खड़ी है। ज़ेना ने उसके हाथों को दबाया, उसपर झुककर रोने लगी, उसे देखकर मुस्कराई। वह अपनी दिव्य आंखों से उसकी तरफ देखने लगी। मरणासन्न व्यक्ति के हृदय में सारा अतीत फिर से जाग उठा, वह अतीत जो कभी लौटकर नहीं आने वाला था। उसके हृदय में जीवन की ज्योति फिर से जल उठी, शायद उसे छोड़ने से पहले ज़िन्दगी उस अभागे को महसूस करा देना चाहती थी कि ज़िन्दगी से जुदा होना

कितना कठिन होगा !

उसने कहा, 'ज़ेना ! प्यारी ज़ेना ! मेरी खातिर मत रोओ, शोक मत मनाओ, दुःखी मत होओ ! मुझे याद मत दिलाओ कि मैं जल्द ही मरने वाला हूं। मैं जिस तरह तुम्हारी तरफ इस वक्त देख रहा हूं, उसी तरह देखता रहूंगा। मुझे महसूस होगा कि हमारी आत्माएं फिर एक हो गई हैं, और तुमने मुझे माफ कर दिया है। मैं पहले की तरह तुम्हारे हाथ चूमूंगा और शायद बिना यह महसूस किए कि मैं मर रहा हूं, इस दुनिया से चला जाऊंगा। तुम कितनी दुबली हो गई हो ज़ेना ! मेरी देवी, अब तुम कितनी दयालु नजरों से मेरी तरफ देख रही हो ! तुम्हें याद है तुम किस तरह हंसा करती थीं ? तुम्हें याद है···ओह ज़ेना, मैं तुमसे माफी नहीं मांग रहा। जो कुछ हुआ है मैं उसे याद नहीं करना चाहता, क्योंकि ज़ेना प्यारी, तुमने चाहे मुझे माफ कर भी दिया हो, लेकिन मैं अपने को माफ नहीं कर सकता। मैंने लम्बी रातें काटी हैं ज़ेना, बिना नींद के, भयंकर रातें। इसी बिस्तर पर लेटकर; मैं सोचता रहा हूं, बहुत-सी बातों के बारे में बहुत देर तक सोचता रहा हूं, मैं बहुत दिनों से फैसला कर चुका था कि मेरे लिए मर जाना ही बेहतर है, कहीं बेहतर ! मैं जीने के काबिल नहीं हूं, ज़ेना प्यारी !'

ज़ेना रो पड़ी और खामोशी से वास्या के हाथ दबाने लगी, जैसे उसे इस तरह की बातें बन्द करने को कह रही हो।

'तुम रोती क्यों हो मेरी देवी !' रोगी ने कहा, 'क्योंकि मैं मर रह हूं—सिर्फ इसलिए ? लेकिन बाकी सब कुछ तो कभी का मर चुका है और दफनाया जा चुका है। तुम मुझसे ज्यादा अक्लमन्द हो, तुम्हारा दिल भी ज्यादा पवित्र है और तुम बहुत दिनों से जान गई होगी कि मैं एक बुरा आदमी था, फिर भी क्या तुम मुझसे प्यार करती रहोगी ? यह सोचकर कि तुमने मुझे मेरे असली रूप में देख लिया—मुझे कितनी कीमत चुकानी पड़ी। मेरे अहंकार को—या यह एक नेक स्वाभिमान

था—चोट पहुंची···मैं तुम्हें कभी नहीं बता सकता। ओह मेरी प्यारी, मेरी सारी जिन्दगी एक सपना रही है। मैंने हमेशा स्वप्न देखे हैं, मैं जिन्दा नहीं रहा और मुझे अपने ऊपर अभिमान था, साधारण लोगों से मुझे नफरत थी, मैं अपने को औरों से बेहतर क्यों समझता था, यह मैं नहीं जानता। हृदय की पवित्रता और भावनाओं की पवित्रता के कारण? लेकिन वे सब तो सपनों की बातें थीं, ज़ेना, जब हम एक साथ शेक्सपियर पढ़ते थे। जब असली ज़िन्दगी की बारी आई तो मैंने साबित कर दिया कि मेरी पवित्रता और नेकी की असली कीमत···'

'बस करो! बस करो! दरअसल बात ऐसी नहीं थी। तुम्हें इस बात को महसूस नहीं करना चाहिए।'

'तुम मुझे रोकती क्यों हो ज़ेना? मैं जानता हूं कि तुमने मुझे माफ कर दिया है, शायद तुमने मुझे बहुत पहले ही माफ कर दिया था। लेकिन तुमने मेरा असली रूप देखने के बाद ज़रूर मेरे बारे में कोई राय कायम की होगी, इसी बात से मेरे दिल में पीड़ा हो रही है। मैं तुम्हारे प्यार के काबिल नहीं हूं, ज़ेना! तुम असली ज़िन्दगी में ईमानदार और सहृदय थीं। तुमने अपनी मां के पास जाकर साफ-साफ कह दिया था कि तुम मेरे सिवा किसी और से शादी नहीं करोगी, और तुमने अपनी बात निभाई भी, क्योंकि तुम्हारे लिए शब्द और व्यवहार अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं। लेकिन मैं, मैं? जब व्यवहार की बात आई—तुम जानती हो ज़ेना, मैं यह तक नहीं समझ सका कि मुझसे शादी करके तुम्हें कितनी बड़ी कुर्बानी करनी पड़ेगी। उस वक्त मैं यह तक न समझ सका कि मुझसे शादी करके शायद तुम्हें भूखों मरना पड़ेगा। यह बात मेरे दिमाग में ही नहीं आई! मैंने सिर्फ इतना ही सोचा कि तुम मुझ जैसे महान् कवि से शादी करोगी। (जिसकी महानता भविष्य के गर्भ में छिपी है) और तुमने शादी को स्थगित करने के लिए जो कारण दिए उन्हें मैं बिल्कुल न समझ सका। मैंने तुम्हें पीड़ा पहुंचाई, तुमपर अत्याचार

किए, तुम्हें डांटा-फटकारा, तुमसे नफरत की और आखिर में इस हद तक चला गया कि मैंने वह खत लेकर तुम्हें बदनाम भी किया। उस वक्त मैं बदमाश भी नहीं था बल्कि एक निकम्मा, घटिया आदमी था। तुमने मुझसे कितनी नफरत की होगी ! ओह, अच्छा हुआ कि मैं मर रहा हूं ! अच्छा हुआ कि तुमने मुझसे शादी नहीं की ! मैं तुम्हारी कुर्बानी को कभी न समझ पाता, मैं तुम्हें पीड़ा देता, अपनी गरीबी की वजह से तुम्हें सताता ! इसी तरह बरसों गुजर जाते और—कौन जानता है शायद मैं तुम्हें अपने रास्ते का रोड़ा समझकर तुमसे नफरत करने लगता ! जो हुआ बेहतर हुआ, कम से कम अब मेरा दिल कड़वे आंसुओं से धुल गया है। ओह ज़ेना ! मुझे ज़रा-सा प्यार करो ! जिस तरह तुम कभी करती थीं ! सिर्फ इस आखिरी घड़ी के लिए। मैं जानता हूं कि मैं तुम्हारे प्यार के काबिल नहीं हूं, लेकिन···लेकिन···ओह मेरी देवी !'

ज़ेना इस बीच सिसकती रही और वास्या को रोकने की कोशिश करती रही, लेकिन वास्या ने इस ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया, वह सब कुछ कह डालने के लिए बेचैन था, वह बोलता गया, हालांकि उसको बोलने में कष्ट हो रहा था, उसकी सांस फूल रही थी, और उसकी आवाज़ भर्राई और घुटी-सी थी।

'अगर तुम मुझसे कभी न मिलते, कभी प्यार न करते तो तुम अभी भी ज़िन्दा रहते। ओह, हमारी मुलाकात क्यों हुई ? क्यों हुई ?' ज़ेना सिसकती हुई बोली।

'नहीं मेरी प्यारी, मेरी मौत के लिए अपने को दोष मत दो।' रोगी ने कहा, 'सारा दोष सिर्फ मेरा ही रहा है ! मुझमें कितना अहंकार था ! रोमांटिकता ! क्या तुम्हें मेरी सारी कहानी बताई गई है, ज़ेना ? तुम जानती हो कि दो साल पहले यहां एक कैदी आया था, हत्या और बदमाशी के अपराध में उसपर मुकद्दमा चल रहा था। जब उसकी फांसी

का वक्त आया तो उसने अपने-आपको बेहद डरपोक साबित किया। उसे मालूम था कि बीमार आदमी को फांसी नहीं दी जाती, उसने कहीं से वोद्का मंगवाई और उसमें थोड़ा-सा तम्बाकू घोलकर पी गया। इतनी देर तक उसकी खांसी में से खून निकलता रहा कि उसके फेफड़े खराब हो गए। उसे अस्पताल में भेज दिया गया और कुछ ही महीने बाद सांघातिक क्षय से उसकी मौत हो गई। ओह मेरी प्यारी, उस दिन मुझे उस कैदी की याद आई—खत की घटना के बाद—और मैंने आत्म-हत्या करने का निश्चय कर लिया। लेकिन तुम्हारा क्या ख्याल है, मैंने तपेदिक को क्यों चुना ? मैंने अपने गले में फांसी क्यों नहीं लगा ली ? डूब क्यों नहीं गया ? क्या मुझे इतनी जल्दी मरने से डर लगता था ? शायद यह बात भी रही हो, लेकिन मैं यह सोचे बगैर नहीं रह सकता, ज़ेना, कि यहां भी मैं मधुर रोमांटिक बेवकूफी से अपने को नहीं बचा सका। उस वक्त भी मैं यह रोमांटिक कल्पना किए बगैर न रह सका—मैं बिस्तर पर लेटा हूं, तपेदिक से मैं मर रहा हूं, तुम दुःखी और शोकातुर हो, मैं सोचता हूं कि तुम्हारी वजह से ही मुझे तपेदिक हुआ है। तुम मुझसे माफी मांगने आओगी···तुम मेरे आगे घुटनों के बल गिर पड़ोगी ···मैं तुम्हें माफ कर दूंगा और तुम्हारी बांहों में मर जाऊंगा। कैसी बेवकूफ थी ज़ेना ! थी न ?'

'ये सारी बातें भूल जाओ।' ज़ेना ने कहा, 'इस बात की चर्चा मत करो ! दरअसल तुम ऐसे नहीं हो। आओ, किसी और विषय पर बातें करें—उन दिनों की जो हम दोनों ने एकसाथ गुज़ारे थे।'

'मेरा दिल उदास है, मेरी प्यारी, इसीलिए मैं इन बातों को याद कर रहा हूं। मैंने डेढ़ बरस से तुम्हें नहीं देखा ! मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं अपनी सारी आत्मा तुम्हारे आगे खोलकर रख सकता हूं। इस बीच सारा वक्त मैं बिल्कुल अकेला रहा हूं और मेरे ख्याल में एक क्षण भी ऐसा नहीं गुज़रा जब मैंने तुम्हें याद न किया हो। मेरी खूबसूरत

देवी ! काश, तुम्हें मालूम होता जेना, कि मैं कोई ऐसा काम करने के लिए बेचैन था, जिससे मैं इस काबिल हो जाऊं कि मेरे बारे में तुम्हारी राय बदल सके। आखिरी वक्त तक मुझे कभी यकीन नहीं हुआ कि मैं मर जाऊंगा। आखिर मैं पहली बार तो बीमार नहीं पड़ा। बहुत लंबे अरसे तक मैं कमज़ोर फेफड़े लिए घूमता रहा और मेरे दिमाग में कैसी फिज़ूल बातें आती रहीं ! मिसाल के लिए मैंने कल्पना की कि मैं अचानक एक महान् कवि बन गया हूं और मेरी एक कविता ओतेशेस्तवेनीय ज़ैपीस्की में छपी है, ऐसी कविता जैसी पहले कभी नहीं लिखी गई। मैंने सोचा कि उस कविता में अपनी सारी भावनाएं उंड़ेल दूंगा, अपनी सारी आत्मा डाल दूंगा ताकि तुम जहां भी रहोगी मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा, अपनी कविताओं द्वारा हमेशा तुम्हें अपनी याद दिलाता रहूंगा। मेरा सबसे प्यारा सपना यह था कि किसी दिन तुम सारी बातों पर फिर से सोचोगी और कहोगी, 'नहीं, यह आदमी इतना बुरा नहीं है, जितना मैं उसे समझती थी। कैसी बेवकूफी थी जेना, थी न ?'

'नहीं, नहीं, वास्या, नहीं !' जेना ने कहा। वह वास्या के सीने पर गिर पड़ी और उसने वास्या के दोनों हाथ चूम लिए।

'और मुझे सारा वक्त कितनी ईर्ष्या होती थी; मेरा ख्याल है अगर मुझे खबर मिलती कि तुम्हारी शादी हो गई है तो मैं मर जाता। मैं तुम्हारी सारी खबरों का पता लगाने की कोशिश करता था। मैंने तुमपर पहरा रख छोड़ा था, जासूसी करता था, जासूसी···मैं इसे वहां भेजता रहता था (उसने अपनी मां की तरफ इशारा किया)। तुम मोज़ग्ल्याकोव से प्यार तो नहीं करती थीं, जेना ? ओह मेरी प्यारी ! मेरे मरने के बाद क्या कभी तुम मुझे याद करोगी ? मैं जानता हूं कि तुम करोगी, लेकिन वक्त के साथ ही तुम्हारा दिल भी ठंडा पड़ता जाएगा, तुम्हारी आत्मा में शीत समा जाएगा और तुम्हारा दिल ठंडा पड़ जाएगा, तुम मुझे भूल जाओगी जेना प्यारी !'

'नहीं, नहीं, कभी नहीं ! और मैं कभी शादी नहीं करूंगी। तुम मेरे पहले···मेरे सब कुछ—'

'सब चीजें मर जाती हैं ज़ेना, यहां तक कि स्मृतियां भी···और हमारे उदात्त से उदात्त विचार भी मर जाते हैं। उनका स्थान विवेक ले लेता है। शिकायत क्यों करो ज़ेना ! ज़िन्दगी का आनन्द लो ज़ेना ! तुम्हारी लंबी उम्र हो, तुम सुखी रहो ! अगर तुम्हें प्यार करना ही हो तो किसी और से प्यार करना। कोई भी मरे हुए आदमी से प्यार नहीं कर सकता। लेकिन कभी-कभी मेरी याद ज़रूर कर लिया करना। जो गलत था उसे भूल जाओ, गलतियों को माफ कर दो। हमारे प्यार में अच्छाई भी थी। क्या नहीं थी, ज़ेना ? ओह वे सुनहरी, कभी न लौटने वाले दिन—सुनो मेरी प्यारी, मैंने हमेशा सूर्यास्त की बेला से प्यार किया है। इसी वक्त कभी-कभी तुम मुझे याद कर लिया करना। ओह, नहीं, नहीं। दुनिया में आखिर किसीकी मौत क्यों हो ? ओह, अपनी ज़िन्दगी वापस पाकर मुझे कितनी खुशी होगी ? याद रखना, मेरी प्यारी, उन दिनों को याद रखना ! उन दिनों वसन्त था, सूरज में चमक थी, फूल खिले थे, चारों तरफ आनन्द का उत्सव था। और अब ! देखो ! ओह, देखो !'

उस अभागे ने अपने सूखे हाथ से खिड़की के धुंधले शीशे की तरफ इशारा किया, जिसपर बर्फ जमी थी। फिर उसने ज़ेना के हाथ पकड़-कर अपनी आंखों से लगा लिए और वह बुरी तरह सिसकने लगा। उसकी सिसकियों ने उसके दुःखी हृदय को करीब-करीब तोड़ डाला।

वास्या दिन-भर विलाप करता रहा और रोता रहा। ज़ेना ने उसे भरसक सान्त्वना देने की कोशिश की, लेकिन खुद उसकी तबियत भी बहुत खराब हो रही थी। उसने वास्या से कहा कि वह उसे कभी नहीं भूलेगी, और जितना प्यार उसने वास्या से किया है, उतना किसीसे नहीं किया। वास्या को उसकी बात पर यकीन हो गया, वह मुस्कराया।

उसने ज़ेना के हाथ चूमे, लेकिन अतीत की स्मृतियां उसके मन को पहले से और भी ज़्यादा कचोटने लगीं। इसी तरह पूरा दिन गुज़र गया। इस बीच भयभीत मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने बार-बार ज़ेना को कहलवा भेजा कि वह घर लौट आए और दुनिया की नज़रों में अपनी रही-सही इज़्ज़त भी मिट्टी में न मिलाए। फिर जब बिल्कुल अंधेरा हो गया, तो मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने, जो आतंक से पागल हो रही थीं, खुद ही जाकर ज़ेना को बुलाने का निश्चय किया। ज़ेना को साथ वाले कमरे में बुलाकर वे घुटनों के बल गिरकर मिन्नत करने लगीं, 'इस आखिरी और सबसे ज़्यादा चुभने वाले छुरे को मेरे दिल से निकाल दो।' ज़ेना जब मां से मिलने आई तो उसका माथा जल रहा था और वह अपने को बीमार महसूस कर रही थी। उसने मां की बातों को सुना लेकिन उसकी समझ में एक भी शब्द न आया। आखिरकार मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना निराश होकर वहां से चली गईं, क्योंकि ज़ेना ने मरणासन्न रोगी के घर में रात बिताने का फ़ैसला किया था। रात-भर वह उसके सिरहाने बैठी रही, लेकिन रोगी की हालत लगातार बिगड़ती गई। दिन निकला, लेकिन रोगी के ज़िन्दा रहने की कोई उम्मीद न रही। बूढ़ी मां शोक से पागल हो रही थी और बेटे को दवाई दे रही थी, जिसे पीने से वह इन्कार कर देता था। मृत्यु की यंत्रणा बहुत लंबी हो गई। उसकी ज़बान बन्द हो गई। सिर्फ उसके सीने में से भर्राई, असंबद्ध आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, आखिरी क्षण तक वह ज़ेना की तरफ देखता रहा, ज़ेना की नज़रों को तलाश करता रहा, लेकिन जब उसकी आंखों की रोशनी धुंधली पड़ गई तो फिर उसने अपनी कांपती उंगलियों से ज़ेना की उंगलियों को टटोला, अपनी उंगलियों में जकड़ लिया। उधर जाड़ों का छोटा दिन जल्दी से बीत रहा था। और आखिरकार जब धूप की आखिरी किरन उस छोटी कोठरी की बर्फ से जमी खिड़की से टकराई तो पीड़ित आदमी की आत्मा उसके शरीर से चली गई। बूढ़ी मां ने जब अपनी आंखों से अपने लाड़ले

वास्या की लाश पड़ी देखी तो वह दोनों हाथ उठाकर चिल्लाई और मृतक के सीने पर गिर पड़ी।

'तुम्हींने उसे बर्बाद किया! सांपिन!...' मां विक्षिप्त अवस्था में ज़ेना को देखकर चिल्लाई, 'दुष्टा, शैतान, जादूगरनी!'

लेकिन ज़ेना को कुछ सुनाई नहीं दिया। वह लाश के सिरहाने विक्षिप्त हालत में खड़ी थी। आखिर वह लाश पर झुकी, क्रास का चिह्न बनाया, वास्या को चूमा और बदहवासी की हालत में कमरे से बाहर निकल आई। उसकी आंखें जल रही थीं, सिर चकरा रहा था—उसके पीड़ा-भरे संवेदनों ने, बिना नींद के बिताई दो रातों की थकान ने उसकी विवेक-शक्ति खत्म कर दी थी। उसके मन में एक धुंधली-सी अनुभूति हो रही थी कि उसका सारा अतीत उसके दिल में से छीन लिया गया है और एक नई नीरस और आतंकपूर्ण जिन्दगी उसके सामने खड़ी है। लेकिन अभी वह दस कदम भी मुश्किल से चली होगी कि अचानक मोज़ग्ल्याकोव उसके रास्ते में आ खड़ा हुआ, जैसे आकाश से टपका हो। मालूम होता था कि वह यहां ज़ेना की इन्तजार में खड़ा था।

'ज़िनेदा अफनासीव्ना,' उसने धीमे, भीरु स्वर में कहा और चारों तरफ देखा, क्योंकि अभी तक दिन पूरी तरह छिपा नहीं था। 'ज़िनेदा अफनासीव्ना, मैं गधा हूं, बेशक! और मैं अब गधा नहीं भी हूं, क्योंकि तुम देखती हो कि चाहे कुछ भी हो मैंने सहृदयता दिखाई है, फिर भी मुझे अफसोस है कि मैंने गधापन किया। मेरा दिमाग गड़बड़ा रहा है ज़िनेदा अफनासीव्ना, लेकिन इस गड़बड़ के बहुत-से कारण हैं, मुझे माफ कर दो!'

ज़ेना ने उसकी तरफ शून्य दृष्टि उठाई, जैसे उसे देखा ही न हो और खामोशी से अपने रास्ते पर चलती रही। चूंकि लकड़ी के ऊंचे फुटपाथ पर इतनी जगह नहीं थी कि दो जने चल सकें और ज़ेना ने उसके लिए रास्ता नहीं छोड़ा था, इसलिए पावेल अलेक्ज़ेंड्रोवच उछल-

कर सड़क पर आ गया और नीचे, ज़ेना के साथ-साथ भागने लगा। वह लगातार ज़ेना के चेहरे की तरफ झांक रहा था।

'ज़िनेदा अफनासीव्ना, मैं इस मामले पर सोचता रहा हूं और अगर तुम चाहो तो मैं नये सिरे से शादी का प्रस्ताव करने के लिए तैयार हूं। यहां तक कि मैं पुरानी सारी बातें भूलने के लिए भी तैयार हूं। ज़िनेदा अफनासीव्ना, सारा अपमान भूलने के लिए और तुम्हें माफ करने के लिए तैयार हूं, लेकिन सिर्फ एक शर्त पर—जब तक हम यहां हैं यह भेद गुप्त रहना चाहिए। तुम जल्द से जल्द यहां से चली जाओगी और मैं चुपके से तुम्हारे पीछे आ जाऊंगा। हम दूर किसी जगह जाकर शादी कर लेंगे, जहां हमें देखने वाला कोई न हो। फिर सीधे पीटर्सबर्ग चले जाएंगे, अगर ज़रूरत पड़ी तो रास्ते में रुकते हुए चलेंगे, अपने साथ सिर्फ एक छोटा-सा सफरी बैग ले चलेंगे···क्यों? तुम राज़ी हो ज़िनेदा अफनासीव्ना? मुझे जल्दी से बताओ! मैं इन्तज़ार नहीं कर सकता—लोग हम दोनों को एक साथ देख लेंगे।'

ज़ेना ने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ उसकी तरफ देखा, और ऐसी नज़रों से देखा कि वह सब कुछ समझ गया। उसने अपना हैट उतारकर सिर झुकाया और अगला मोड़ आने पर गायब हो गया।

उसे ताज्जुब हुआ, 'आखिर माजरा क्या है! परसों तो वह इतने भावावेश में बातें कर रही थी और सारा दोष अपने ऊपर ले रही थी। सच है, कोई दो दिन एक जैसे नहीं होते।'

इस बीच मोर्दासोव में अनेक नई घटनाएं घटती गईं। एक दुःखांत घटना भी घटी। काउन्ट, जिन्हें मोज़ग्ल्याकोव होटल में छोड़कर आया था उसी रात बीमार पड़ गए और उनकी बीमारी खतरनाक साबित हुई। अगले दिन सुबह मोर्दासोव के लोगों को यह खबर मालूम हुई। कालिस्त स्तेनिस्लाविच काउन्ट के सिरहाने से हिला तक नहीं। शाम

के वक्त मोर्दासोव के सारे डाक्टरों ने मिलकर मरीज़ की हालत पर विचार किया। इस गोष्ठी के निमंत्रण-पत्र लैटिन में लिखे गए थे। लेकिन लैटिन के बावजूद काउन्ट का मन बहक रहा था और वे प्रलाप कर रहे थे। वे कालिस्त स्तेनिस्लाविच से कोई गीत सुनाने के लिए मिन्नत कर रहे थे और नकली बालों की टोपियों के बारे में बक-झक कर रहे थे। डाक्टरों ने कहा कि मोर्दासोव के अतिथि-सत्कार से काउन्ट की आंतों में सूजन हो गई है, जो उनके दिमाग तक पहुंच गई है (सूजन अभी तक दिमाग के रास्ते में ही थी)। किसी नैतिक आघात के परिणामों की ओर भी इशारा किया गया। अंत में लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि बहुत अरसे से काउन्ट मौत के नज़दीक बढ़ते आ रहे थे, इसलिए उनकी मौत लाज़मी ही थी। वह अनुमान गलत नहीं निकला, क्योंकि तीसरे दिन शाम को ही काउन्ट की होटल में मृत्यु हो गई। इस खबर से मोर्दासोव के लोगों पर जैसे वज्रपात हुआ। मामला इतना गंभीर हो जाएगा, यह किसीको उम्मीद नहीं थी। लोगों की भीड़ होटल में जमा हो गई, जहां काउन्ट की लाश रखी थी, अभी तक उसे सजाया नहीं गया था। लोगों ने बहसें कीं, प्रवचन दिए, सिर हिलाए और अंत में बड़े कठोर स्वर में उन्होंने अभागे काउन्ट के हत्यारों की भर्त्सना भी की। उनका संकेत मारया अलैक्जैंड्रोव्ना और उसकी बेटी की तरफ था। सब महसूस कर रहे थे कि यह मामला बड़ा रहस्यमय था। उसके बड़े अप्रिय अर्थ लगाए जा सकते थे। इस मामले की चर्चा बहुत दूर-दूर तक फैल सकती थी। लोगों की बातों और भविष्य-वाणियों का कोई अंत न था। मोज़ग्ल्याकोव सारा वक्त परेशानी में इधर से उधर चक्कर काटता रहा और आडम्बर दिखाता रहा। उसका सिर चकराने लगा। इसी हालत में वह ज़ेना से मिलने गया था। उसकी स्थिति भी कम नाज़ुक नहीं थी। वही तो काउन्ट को इस शहर में लाया था, उन्हें होटल में ले गया था। अब उसकी समझ में नहीं आ

रहा था कि लाश का क्या करे, लाश को कहां दफनाए, किन-किन लोगों को खबर करे, लाश को दुखोनोवो भेजे या नहीं। चाहे जो हो वह अपने को काउन्ट का भतीजा समझता था। उसे डर था कि कहीं उसपर बूढ़े की मौत का अपराध न लगाया जाए। उसने कांपते हुए मन से सोचा, 'क्या पता इस मामले की चर्चा पीटर्सबर्ग के समाज में भी पहुंचे।' मोर्दासोव में सलाह देने वाला भी कोई नहीं था! सब लोग सहसा भयभीत हो गए, लाश छोड़कर चले गए, और मोज़ग्ल्याकोव उदास और अकेला रह गया। लेकिन जल्द ही सारी स्थिति एकदम बदल गई। अगले दिन सुबह एक आदमी मोर्दासोव में आया। पलक झपकते ही लोगों में इस नये आगन्तुक की चर्चा होने लगी, लेकिन भेद भरे ढंग से, फुसफुसाकर। लोग खिड़कियों और छेदों में से उसे झांककर देखते रहे, जब वह बड़ी सड़क पर से गुज़रकर गवर्नर के यहां पहुंचा। खुद गवर्नर भी घबरा गया था, उसकी समझ में नहीं आता था कि आगन्तुक से किस ढंग से बात करे।

यह आगंतुक प्रिंस शेपीतीलोव था जिसकी चर्चा सबने सुनी थी। वह काउन्ट का रिश्तेदार था, वह अभी तक जवान था, ज्यादा से ज्यादा उसकी उम्र पैंतीस बरस की होगी। उसकी वर्दी पर कर्नल के ओहदे के चिह्न थे, जिन्हें देखते ही मोर्दासोव के सारे अफसरों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। मिसाल के लिए पुलिस के चीफ के होश-हवास गुम हो गये—मैं तो आलंकारिक भाषा का प्रयोग कर रहा हूं, क्योंकि वैसे देखा जाए तो वह सही-सलामत था। उसका सिर भी सलामत था, हालांकि अब वह इस सिर को बहुत ऊंचा नहीं उठा सकता था! फौरन लोगों को यह खबर मिल गई कि शेपीतीलोव पीटर्सबर्ग से आया है। रास्ते में वह दुखानोवो भी गया था। अपने चचा को वहां न पाकर वह मोर्दासोव आया था, जहां आकर उसे बूढ़े काउन्ट की मौत की खबर मिली थी। उसे बेहद ताज्जुब हुआ था, मौत के कारणों की अफवाहें भी उसके कानों

तक पहुंची थीं। काउन्ट की मृत्यु के बारे में बताते हुए गवर्नर भी घबरा गया। मोर्दासोव के हर आदमी के चेहरे पर आतंक छा गया था जैसे सबने कोई नीचतापूर्ण काम कर डाला हो। इसके अलावा आगंतुक के चेहरे पर कठोरता और नाराज़गी का भाव था—यह कल्पना करना कठिन था कि कोई जायदाद मिलने पर भी इतना नाराज़ कैसे हो सकता है। आगन्तुक ने फौरन, खुद अपने स्वर्गीय चचा के मामलों की छान-बीन करनी शुरू कर दी। मोज़ग्ल्याकोव ने अब देखा कि काउन्ट का असली भतीजा आ गया है तो वह फौरन बड़ी शर्मनाक शीघ्रता के साथ वहां से गायब हो गया और फिर उसकी शक्ल भी नहीं दिखाई दी। यह तय हुआ कि लाश को फौरन मठ में ले जाना चाहिए जहां अन्तिम प्रार्थनाएं पढ़ी जाएंगी। आगंतुक ने बड़े मुंहफट, कठोर, भावशून्य लेकिन शिष्ट और शालीन ढंग से हुक्म दिए। अगले दिन शहर के सारे लोग जनाज़े के लिए मठ में इकट्ठे हुए। महिलाओं में एक बेहूदा अफवाह फैली कि मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना गिर्जे में आकर ताबूत के आगे घुटने टेककर माफी मांगेंगी, क्योंकि कानून में ऐसा लिखा है। यह सब निरी बकवास थी क्योंकि मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना तो गिर्जे तक भी नहीं गई। हम यह बताना भूल गए कि जब ज़ेना घर लौटी तो उसकी मां ने उसी रात गांव में जाने का फैसला कर लिया, क्योंकि उनका ख्याल था कि शहर में उनका रहना नामुमकिन है। अपने घर के एकान्त में जिज्ञासा का ज्वर लिए वे शहर की इन अफवाहों को सुनती रहीं और आगंतुक के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने जासूस भेजे। मठ से दुखानोवो जाने वाली सड़क मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना के देहात के घर से एक मील से भी कम थी, इसलिए वे आराम से दुखानोवो लौटने वाले लम्बे जलूस को देख सकती थीं। एक ऊंची अर्थी पर ताबूत रखा था, उसके बाद गाड़ियों की लम्बी कतारें थीं, जो जनाज़े को शहर के मोड़ तक पहुंचाने जा रही थीं। बहुत देर तक सफेद वर्फ से ढंके खेतों की

पृष्ठभूमि में काला, उदास ताबूत नज़र आता रहा और धीमी, शालीन रफ्तार से आगे बढ़ता गया, लेकिन मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना इस दृश्य को बर्दाश्त न कर सकीं और जल्द ही खिड़की से हट गईं।

अगले ही हफ्ते वे अफानासी मातविच और अपनी बेटी को लेकर मास्को चली गईं, और एक महीने बाद मोर्दासोव के लोगों को खबर मिली कि मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना का शहर और देहात का मकान बिकाऊ हैं। इस तरह मोर्दासोव हमेशा के लिए अपनी सबसे शालीन और शिष्ट महिला से वंचित हो गया। इस खबर में भी बदनामी का पुट था जैसा कि अक्सर खबरों में रहता है। मिसाल के लिए ज़ोर-शोर से यह कहा गया कि जायदाद के साथ ही अफानासी मातविच को भी फेंका जा रहा है। एक बरस बीत गया, दो बरस बीत गए और मोर्दासोव के लोग मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना को करीब-करीब भूल गए। अफसोस ! हमेशा से दुनिया का यही दस्तूर रहा है ? खबर मिली कि मारया अलैक्ज़ेंड्रोव्ना ने किसी दूसरे छोटे शहर में जायदाद खरीद ली है और वे वहीं चली गई हैं। वहां जाकर उन्होंने ज़रूर ही सबपर अपना रौब जमा लिया होगा, ज़ेना अभी तक कुंआरी होगी और अफानासी मातविच···लेकिन ऐसी अफवाहों को दुहराने से क्या फायदा। वे कतई विश्वसनीय नहीं होतीं।

तीन बरस पहले मैंने मोर्दासोव के इतिहास के पहले भाग को खत्म किया था। मुझे अपनी पाण्डुलिपि खोलकर अब अपनी कहानी में एक ब्यौरा और जोड़ना पड़ेगा, इसपर भला किसको विश्वास हो सकता था। लेकिन मैं अपनी कहानी का ज़िक्र कर रहा था। सबसे पहले मैं पावेल अलैक्ज़ेंड्रोविच मोज़ग्ल्याकोव की बात लिखूंगा। मोर्दासोव से दुम दबाकर भागने के बाद वह सीधा पीटर्सबर्ग चला गया, जहां खुश-किस्मती से उसे वह नौकरी मिल गई जिसका वादा उसे बहुत दिनों से दिया गया था। जल्द हीं वह मोर्दासोव की दु:खान्त घटनाओं को भूल

गया और वेसीलेवस्की द्वीप और गालेर्नाया बन्दरगाह की सोसाइटी के भंवर में कूद पड़ा। वह भोग-विलास में लिप्त रहने लगा; ज़माने के रिवाज के मुताबिक औरतों से प्रेम-निवेदन, प्यार और शादी के प्रस्ताव करने लगा। अन्त में दूसरी बार प्यार में ठुकराए जाने का धक्का जब वह न बर्दाश्त कर सका तो उसने अपने स्वाभाविक ओछेपन और निकम्मेपन से प्रेरित होकर अपनी नियुक्ति ऐसे मिशन पर करवा ली जो हमारे विशाल देश के सबसे दूर कोने में जा रहा था। वह मिशन निरीक्षण के लिए या किसी और काम से वहां जा रहा था, यह मैं नहीं जानता। अनगिनत जंगलों, ऊसर ज़मीनों को सही-सलामत पार करता हुआ बहुत काफी भटकने के बाद वह मिशन उस दूर प्रदेश के बड़े शहर में जा पहुंचा और वहां के गवर्नर जनरल के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए उसके यहां गया। गवर्नर जनरल एक लम्बा, दुबला, कठोर व्यक्ति था जो लड़ाई के मैदान में ज़ख्मी हो चुका था, जिसकी वर्दी पर दो सितारे और एक सफेद क्रास चमक रहे थे। गवर्नर ने मिशन के सदस्यों का बड़ी धूमधाम से स्वागत किया और उसी दिन शाम को अपने यहां एक दावत में निमन्त्रित किया, क्योंकि उस दिन उसकी पत्नी का जन्मदिन था। पावेल अलैक्ज़ेंड्रोविच बहुत खुश हुआ। वह पीटर्सबर्ग के सिले कपड़े पहनकर आया था और उसे उम्मीद थी कि वह अपने व्यक्तित्व से सबको प्रभावित कर लेगा। वह बड़ी बेतकल्लुफी से बॉल-रूम में दाखिल हुआ, लेकिन हाल में बहुत-से फौजी अफसर बैठे थे, जिनकी वर्दियों पर गूंथे हुए डोरों के चिह्न थे। नागरिक अफसरों की वर्दियों पर सितारे चमक रहे थे। मोज़ग्ल्याकोव ने सबसे पहले गवर्नर की पत्नी को झुककर सलाम किया, जिसकी खूबसूरती की शोहरत वह पहले से सुन चुका था। वह बड़े तपाक से आगे बढ़ा, लेकिन अगले ही क्षण वह आश्चर्य से स्तब्ध रह गया। उसके सामने ज़ेना डांस की एक भड़कीली पोशाक, और हीरों के ज़ेवर पहने गर्व और बेरुखी से खड़ी

थी। उसने पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच को नहीं पहचाना। उसने लापरवाही से मोज़ग्ल्याकोव की तरफ एक निगाह डाली और फिर फौरन अगले मेहमान की तरफ मुड़ गई। मोज़ग्ल्याकोव चकित होकर एक तरफ हट गया और भीड़ में एक भीरु युवक अफसर से जा टकराया, जो अपने-आपको गवर्नर जनरल के डान्स में पाकर आकंतिक हुआ जा रहा था। पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच ने उस अफसर से सवाल पूछने शुरू किए और उसे बहुत-सी दिलचस्प बातें मालूम हुईं। उसे पता चला कि दो बरस पहले गवर्नर जनरल मास्को गया था, वहां उसने एक बेहद अमीर और आला खानदान की युवती से शादी की थी। गवर्नर जनरल की पत्नी अनुपम सुन्दरी है, लेकिन वह बड़ी अहंकारी है और सिवा जनरलों के किसी और के साथ डान्स नहीं करती, इस डान्स में कम से कम नौ जनरल आएंगे, जिनमें से कुछ बाहर से इस शहर में आए हुए हैं और कुछ सिर्फ काउन्सलर ऑफ स्टेट हैं। गवर्नर जनरल की पत्नी की मां भी उसके साथ ही रहती है। मां बहुत ऊंची सोसाइटी की महिला हैं और बड़ी चालाक हैं, लेकिन वे अपनी बेटी की इच्छा के खिलाफ कुछ नहीं कर सकतीं। खुद गवर्नर जनरल भी अपनी पत्नी की पूजा करते हैं। मोज़ग्ल्याकोव ने अफानासी मातविच के बारे में संकेत किया, लेकिन उस 'सुदूर प्रदेश' में किसीको अफानासी मातविच के बारे में कुछ भी पता न था। अपना मन स्थिर करने के बाद मोज़ग्ल्याकोव कमरों में चक्कर काटने लगा, जहां जल्द ही उसकी नज़र मारया अलैक्ज़ैन्ड्रोव्ना पर पड़ी जो सिर से लेकर पांव तक बनी-ठनी, हाथ में एक कीमती पंखा लिए बैठी थीं और बड़ी ज़िन्दादिली से किसी सम्मानित व्यक्ति से बातें कर रही थीं, जो ज़ाहिरा तौर पर कोई अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति था। उनके चारों तरफ बहुत-सी महिलाएं बैठी थीं जिनके प्रति मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना का व्यवहार अत्यन्त स्नेहपूर्ण दिखाई दे रहा था। मोज़ग्ल्याकोव ने साहस बांधकर अपना परिचय दिया। मारया

अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना अदृश्य रूप से चौंक उठीं, लेकिन फौरन उसी क्षण संभल गईं। उन्होंने बड़ी शिष्टता से पावेल अलैक्ज़ेन्ड्रोविच को पहचानने की कृपा की, पीटर्सबर्ग के कुछ परिचितों के बारे में पूछताछ की और पावेल अलैक्ज़ेन्ड्रोविच से पूछा कि वह इस साल विदेश क्यों नहीं गया। मोर्दासोव के बारे में मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना ने एक शब्द भी नहीं कहा, जैसे मोर्दासोव का कभी संसार में अस्तित्व ही न रहा हो। आखिर पीटर्सबर्ग के किसी मशहूर व्यक्ति का ज़िक्र करने और उसकी सेहत का हालचाल पूछने के बाद, हालांकि मोज़ग्ल्याकोव ने उस व्यक्ति का नाम कभी नहीं सुना था, मारया अलैक्ज़ेन्ड्रोव्ना सुवासित सफेद बालों वाले एक बड़े अफसर की तरफ मुड़ गईं, जो उनकी तरफ आ रहा था और अगले ही क्षण पावेल अलैक्ज़ेन्ड्रोविच को एकदम भूल गईं जो उनकी कुर्सी के पास खड़ा था।

एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ अपना हैट हाथ में लेकर मोज़ग्ल्याकोव बालरूम में लौट आया। वह अपने को अगर अपमानित नहीं तो चोट खाया हुआ महसूस कर रहा था, इसलिए उसने डान्स न करने का फैसला कर लिया। शाम भर वह उदास और खोया-खोया-सा रहा, उसके चेहरे पर मेफिस्तोफील[1] की सी मुस्कान छाई रही। चित्रवत् अन्दाज़ में एक खंभे के सहारे एक ही जगह खड़ा (उस बॉलरूम में सचमुच खंभे लगे हुए थे, जैसे चित्र को संपूर्णता देने के लिए जान-बूझकर वहां खड़े किए गए हों) वह घंटों तक लगातार सारे डान्सों के बीच, ज़ेना को देखता रहा। लेकिन अफसोस, उसकी सारी चतुराई, चित्रवत् पोज़, निराश अंदाज, इत्यादि सब बेकार गए! ज़ेना ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। आखिर क्षुब्ध होकर, उसके पांव इतनी देर खड़े रहने के कारण दुख रहे थे, भूख से परेशान होकर—क्योंकि उसका दुःखी प्रेमी का रोल उसे खाने तक रुकने की इजाज़त नहीं दे रहा था—वह

---

१. गेटे के काव्य, फ़ास्ट का एक पात्र

अपने क्वार्टर में लौट आया। उस वक्त वह थकान से चूर हो गया। उसे महसूस हो रहा था, जैसे किसीने उसकी खूब पिटाई की हो।

उस रात वह बड़ी देर तक सो न सका, बल्कि बैठकर अपने अतीत की सारी घटनाओं को मन में दुहराता रहा। अगले दिन सुबह एक ओहदा खाली हुआ और मोज़ग्ल्याकोव ने सहर्ष अपने-आपको उस ओहदे के लिए पेश किया। वह शहर छोड़ने के बाद उसका मन एकदम ताज़ा हो गया। अनन्त मैदान पर बर्फ झिलमिलाते हुए सफद कफन की तरह फैली थी। दूर क्षितिज में, बर्फीले रेगिस्तान के किनारे जंगलों की काली रेखा थी।

जोशीले घोड़े सरपट चाल, अपनी टापों से बर्फ को बिखेरते हुए दौड़ रहे थे। स्लेज की घंटियां बज रही थीं। पावेल अलैक्ज़ैंड्रोविच किसी गहरी सोच में डूब गया, फिर दिवास्वप्न देखने लगा। अन्त में उसे आराम की नींद आ गई। तीसरे पड़ाव पर पहुंचकर उसकी नींद खुली। उसने अपने-आपको ताज़ा और स्वस्थ महसूस किया। और उसके विचारों का केन्द्र भी बदल गया था।

दॉस्तॉयव्स्की :
अन्तरात्मा का महान कथाकार

फ्योदोर दॉस्तॉयव्स्की १९वीं शताब्दी के सबसे महान उपन्यासकारों में से हैं और विश्व साहित्य के कर्णधारों में गिने जाते हैं। उनका जीवन चरम अभावों में कष्ट सहते हुए और संघर्ष करते हुए बीता, वे कानून और दंडविधान तक के शिकार हुए। परन्तु वे इतने निर्भीक और साहसी थे कि भीषण परिस्थितियों में भी अपने आदर्शों पर डटे रहे, अपनी मान्यताओं के सम्बन्ध में उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। उनकी रचनाओं में भूख, दीनता, लालसा और अभावों का, मानव की विषमताओं और विवशताओं का सूक्ष्म अंकन हुआ है।

उनका जन्म १८२१ में मास्को में हुआ और बचपन भी वहीं बीता। वे अभी स्कूल ही में पढ़ रहे थे कि उनके पिता की उनके अपने ही खेतिहर श्रमिकों ने बड़ी निर्दयता से हत्या कर दी। इस घटना का उनके कोमल मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। बचपन से ही उनका साहित्य से बड़ा लगाव था। पर फिर भी वे पीटर्सबर्ग के मिलिटरी इंजीनियरिंग कालेज में दाखिल हुए और वहां की शिक्षा उन्होंने बड़े सम्मान के साथ पूरी की। बाद में, जैसा कि नियम था, दो वर्ष उन्होंने सेना में भी बिताए।

१८४६ में उनका पहला लघु उपन्यास 'पूअर फोक' (कंगाल) प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने यतीमों और अभागों के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति का परिचय दिया। यह उपन्यास काफी लोकप्रिय हुआ। दॉस्तॉयव्स्की का सम्पर्क इस बीच स्वप्नदर्शी किस्म के कुछ राजनीतिक

षड्यन्त्रकारियों से हो गया था। फलस्वरूप, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और मौत की सज़ा सुनाई गई। बाद में, बिलकुल आखिरी घड़ी में वह सज़ा पांच वर्ष के कठोर कारावास और निर्वासन में बदल दी गई। ये वर्ष उन्हें साइबेरिया में बिताने पड़े और वहां से आने पर कुछ काल, सज़ा के तौर पर ही, सेना में काम करना पड़ा। १८५९ में ही जाकर कहीं उन्हें पूरी तरह क्षमा किया गया। साइबेरिया के अपने अनुभवों के आधार पर बाद में उन्होंने 'द मेनर ऑव स्टीपंचिकोवो' और 'द हाउस ऑव द डेड' की रचना की। कारावास के जीवन का इन कृतियों में अद्‌भुत चित्रण हुआ है और उनकी मानव सहानुभूति और व्यापक हो उठी है। इनके शब्द-शब्द से मानवता की पुकार उठती है।

१८६६ में उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'क्राइम एण्ड पनिशमेंट' छपा जिससे उन्हें भारी ख्याति मिली। मनोविज्ञान का जितना सही निरूपण और निर्वाह इस उपन्यास में हुआ उतना साहित्य में पहले कभी नहीं हुआ था। आशा, भय, घबराहट इसके विशेष स्थल हैं। वृद्धा का खून करके रास्कोलिनोव की जो मन:स्थिति हो जाती है उसे व्यक्त करना कठिन है। राज़ुमिखिन जब वारांगना के सामने घुटने टेककर कहता है—"मैं तुम्हारे सामने नहीं झुका हूं, मानव-जाति की समूची पीड़ा के सामने झुका हूं" तब जैसे उपन्यासकार उसकी वेदना में अपनी सारी सहानुभूति उंडेल देता है और अपने साहित्यादर्श को खोलकर रख देता है। दॉस्तॉयव्स्की ने जब अपना यह उपन्यास लिखा तब तक 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' नाम का पारिभाषिक प्रयोग शुरू नहीं हुआ था। किन्तु बाद में जिस उपन्यास-परम्परा की इस नाम से घोषणा हुई उसके उपन्यास 'क्राइम एण्ड पनिशमेंट' के सामने नगण्य थे।

इन्हीं दिनों जब वे अपनी उत्कृष्ट कृतियों की रचना कर रहे थे, उन्हें बड़ी गरीबी का सामना करना पड़ा। उनके द्वारा सम्पादित पत्र 'टाइम' पर, जिसमें 'द हाउस ऑव द डेड' पहले-पहल छपा था, पहले

ही प्रतिबंध लगा दिया गया था। बाद में जब दूसरे पत्र 'एपोक' को भी घाटे के कारण बन्द करना पड़ा तो उनपर भारी कर्ज़ा चढ़ गया। 'क्राइम एण्ड पनिशमेंट' और उसके बाद 'गैम्बलर' उपन्यास लिखकर भी वे अपने को उस कर्जे से मुक्त नहीं कर सके और अगले चार साल उन्हें पश्चिमी यूरोप में बड़े कष्ट में बिताने पड़े। १८६९ में उनका उपन्यास 'इडियट' (मूर्ख) और १८७१ में में 'पोज़ेस्ड' (भूत) प्रकाशित हुआ।

'ईडियट' का नायक म्विश्किन वास्तव में बुद्धिमान मूर्ख है। उसमें व्यंग्य, घृणा, अभिमान का प्रभाव है। उसकी सरलता धूर्तों, झूठों, चोरों और पापों से उसकी रक्षा करती है और वह उन सब पर अपने अकृत्रिम व्यक्तित्व की छाप छोड़ता जाता है। उसकी नेकनीयती सारी बदी की दवा है। उसमें आचरण का अद्‌भुत माधुर्य है। दूसरी ओर, सौदागर रोगोजिन अवनीत तृष्णाओं का गुलाम है। जिस नताशा को वह प्यार करता है उसीको मार डालता है। अनेक समीक्षकों को 'ईडियट' दस्तॉयव्स्की की सबसे सुघड़ कृति लगती है।

'पोज़ेस्ड' निहिलिज्म के विरोध में लिखा गया था। यद्यपि निहिलिज्म का तब तक काफी भंडा-फोड़ हो चुका था, फिर भी अनेक लोग उसका पल्ला पकड़े हुए थे और अपनी आदर्शवादिता के कारण स्वार्थ-साधकों के शिकार हो रहे थे। यद्यपि आरम्भ में इस उपन्यास को कुछ अतिरंजित बताया गया, पर आगे की घटनाओं ने इसके दृष्टिकोण की सचाई सिद्ध कर दी।

'माइ अंकिल्स ड्रीम' (वासना) में उन्होंने मानव-चरित्र के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य की वासनाओं—यौन क्षुधा और वैभव-लिप्साओं के रंग-बिरंगे, हल्के और गहरे चित्र प्रस्तुत किए। बूढ़ी मारया अलैक्ज़ैंड्रोव्ना जहां अव्वल दर्जे की कुटिल, मक्कार, महत्त्वाकांक्षी और अवसरवादी औरत है, वहां बूढ़े खूसट काउंट घोर विलासी, विलक्षण प्रकृति के रंगीले इन्सान हैं। उधर अनुपम सुन्दरी ज़ेना अपने यौवन को

ही संभाल नहीं पाती है। तत्कालीन उच्च मध्यमवर्गीय नारी समाज का इस उपन्यास में बहुत ही यथार्थ चित्रण हुआ है।

रूस वापस आ जाने के बाद उन्होंने फिर एक पत्र, 'द सिटीज़न' का सम्पादन शुरू किया। इसमें लिखी रचनाएं बाद में 'ए राइटर्स डायरी' में प्रकाशित हुईं। १८७५ में उन्होंने 'ए रॉयथ' लिखा और १८८० में उनका सबसे लम्बा और अन्तिम उपन्यास 'कारामाज़ाव बंधु' निकला। इस अन्तिम उपन्यास में उन्होंने दिमित्रि, इवां और अल्योशा—इन तीन भाइयों का चित्रण किया है, जिनमें पहला कामुक है, दूसरा लोकवादी है, और तीसरा मानवता का प्रेमी है। वैसे इसका केनवस बड़ा है और इसमें हमें कितने ही बड़े दिलचस्प चरित्र मिलते हैं।

दॉस्तॉयव्स्की के उपन्यासों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें मानव-मन की गहराइयों की छानबीन की गई है और अन्तरात्मा व व्यक्तित्व के आश्चर्यजनक अन्तर्विरोधों को बड़ी सफलता के साथ उजागर किया गया है। टॉल्सटॉय के बाद दॉस्तॉयव्स्की का रूसी गद्य-साहित्य में सबसे ऊंचा स्थान है। कुछ आलोचकों की दृष्टि में तो वे टॉल्सटॉय से भी बड़े हैं। यूरोप ने आरम्भ में दॉस्तॉयव्स्की की उपेक्षा की। परन्तु जैसे-जैसे उनकी कृतियां पश्चिमी यूरोप की भाषाओं में अनूदित होती गईं, लोग उनकी कलम का लोहा मानते गए।

दॉस्तॉयव्स्की असाधारण अपराधियों, पागलों और रहस्यों के चित्रकार थे। उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी थीं। साइबेरिया में उन्हें जो भयानक अनुभव हुए थे उनके कारण उनका मिर्गी का जन्मजात रोग और ज़ोर पकड़ गया था। घर की आर्थिक स्थिति सत्यानाश की सीमा तक पहुंच गई थी। वे प्रायः सदा ही ऋण में रहते थे। पुलिस और अधिकारी उन्हें एक ओर पीसते थे। दूसरी ओर प्रतिगामी उदारवादी उन्हें गालियां देते थे। हज़ार-हज़ार विपत्तियों को झेलते हुए, पैसे-कपड़े के अभाव में दिन-दिन-भर और रात-रात-भर कलम घिसते हुए, और

रात-दिन की उस लगातार मेहनत के बाद भी कुछ कायदे से न कमा सकते हुए, उन्होंने साहित्य-साधना की थी। उनकी प्रतिभा आग में तपकर कुंदन बनी थी। इसीलिए तरह-तरह के अनुभवों का उनके पास अनन्त भंडार था। इसलिए वे मानव-मन में इतने गहरे पैठ सके और चेतन व अवचेतन की सूक्ष्मतम भावनाओं और लालसाओं को इतनी तीव्रता के साथ चित्रित कर सके।

१८८१ में जब उनकी मृत्यु हुई तो उनकी अर्थी के साथ सभी वर्गों के नर-नारियों की अपार भीड़ थी, मानो वह किसी लेखक की नहीं बल्कि देश के किसी राष्ट्रनायक की अर्थी हो। अपनी कृतियों से तब तक वे जन-साधारण के हृदय सम्राट बन चुके थे और उनकी असीम निष्ठा प्राप्त कर चुके थे।

◇ ◇ ◇

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

1-66-3-20